Gurukul International Multidisciplinary Research Journal
ISSN 2394-8426 with Impact Factor 2.254

UGC Listed Journal Sr. No 48455

Online Special Issue on

Trends And Innovations In Gandhian Thought

Issue Available At Our Webportal
http://gurukuljournal.com/

Email us : info@gurukuljournal.com
Contact No. : +919273759904

Index

Paper No.	Title	Author	Page No.
1	गांधीजी का आर्थिक चिन्तन	डा0 अनिल कुमार मिश्र	1-4
2	**Teachings Of Mahatma Gandhi: Contemporary Relevance**	**Dr Badruddin**	5-13
3	उच्चशिक्षणात गांधी विचारांचा अंतर्भाव	डॉ. पद्मरेखा धनकर	14-17
4	***गांधीजींचे ग्राम स्वराज्य विषयाचे विचार***	***प्रा. राजेश एस. डोंगरे***	18-19
5	नर्मदा बचाओ आंदोलन : गांधीजी के अहिंसात्मक प्रतिरूप में	एकता	20-24
6	**Gandhian Thought And Its Role In Development Of Rural Banking Institutions In India**	**Dr. Dilip Kumar Karak**	25-31
7	राष्ट्रीय एकात्मतेत महात्मा गांधींचे योगदान	प्रा. डॉ. प्रमोद शंभरकर प्रा. जगदीश रामदास चिमूरकर	32-35
8	महात्मा गांधीचा स्त्री – पुरूष समानतेचा विचार	प्रा. डॉ. संजय गोरे	36-39
9	**Gandhian Economics And Sustainable Development Goal 2030**	**Dr. Kajalbaran Jana**	40-47
10	चम्पारण सत्याग्रह की 100वीं वर्षगाठ के अवसर पर (महात्मा की याद : अनुश्व एवं यर्थात)	डॉ0 अजय कुमार	48-54
11	**Mahatma Gandhi's Thought On Education**	**Dr. H.S. Kuchekar**	55-58
12	**Gandhian Economics And Trends Of Present Market Economy**	**Dr. Neeru Sharma**	59-65
13	चम्पारन सत्याग्रह : 'सेवा' तथा 'स्व' का दर्शन	नीतांजली खारी	66-69
14	महात्मा गांधीच्या आर्थिक विचारातून सामाजिक कल्याण	प्रा. डॉ. पी.एल. ढेंगळे	70-73
15	**Gandhian Thought And Sustainable Development**	**Dr. Poonam Singh Kharwar**	74-81
16	**Gandhian Economics And Rural Development**	**Dr. Prashant M. Puranik**	82-86
17	**Gandhian Thought And Peace Building**	**Dr. H. M. Kamdi**	87-90
18	**Beyond Duty And Obligation : Interpreting Gandhi In The Framework Of Virtue Ethics**	**Sachin Kumar**	91-95
19	**Gandhian Thought And Peace Building**	**Prof. Ms. Shubhangi Vitthal Gaikwad**	96-98
20	गांधी और अम्बेडकर : एक निरन्तर संवाद	सुचित कुमार यादव	99-104
21	महात्मा गांधीजीची सत्याग्रह आणि ग्राम विकासा सबंधी विचार	प्रा. डॉ.राजेंद्र एम. झाडे	105-109
22	**Gandhian Philosophy Relevance In The 21st Century**	**Dr. Subhash. K. Zinjurde**	110-114

गांधीजी का आर्थिक चिन्तन

डा0 अनिल कुमार मिश्र*
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, डी0ए0वी0, कालेज, कानपुर

सारांश

गांधीजी का आर्थिक चिन्तन आधुनिक जटिल अर्थशास्त्रीय सिद्धान्तों से अलग आम लोगों का अर्थशास्त्र है। आधुनिक ट्रिकल डाऊन सिद्धान्त के विपरीत गांधीवाद नीचे अर्थात् गांव व कुटीर उद्योगों को विकसित करके सम्पूर्ण देश का विकास चाहता है। अंधाधुंध उपभोग व संचय के विपरीत गांधीजी आत्मनियंत्रण व अपरिगृह की संस्कृति के समर्थक थे। उनके आर्थिक विकास के सिद्धान्त में सबको श्रम करना अनिवार्य था।

आर्थिक विकास के सम्बन्ध में अनेक मॉडल है। उनमें समाजवादी और पूँजीवादी दो प्रमुख मॉडल है। इन दोनों में व्याप्त कमियों के दृष्टिगोचर गांधीजी ने एक नये आर्थिक विकास का मॉडल पेश किया। गांधी जी कोई अर्थशास्त्री नही थे, फिर भी उन्होनें आर्थिक विकास का जो मॉडल पेश किया वह भारत के लिए एक उत्तम मॉडल सिद्ध हो सकता हैं। विकास के जिस चिन्तन साथ हम आगे बढ़े उसमें आर्थिक नियोजन के तहत पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण था। इसके तहत अनेक आधारभूत उद्योग स्थापित हुए जिससे औद्योगिक उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई। कृषि क्षेत्र का विकास हुआ। सेवा क्षेत्र में विकास की संभावनाएं बढ़ी। इन सबके बावजूद गरीबी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि की स्थिति निरन्तर दयनीय बनी रही।

गांधीजी के आर्थिक चिन्तन का आधार सादगी, श्रम एवं अहिंसा है। महात्मागांधी की मान्यता है कि उपभोगवाद, स्पर्धावाद, व वर्गसंघर्ष इन सबका आधार वस्तुओं का अनियमित उपभोग है। उपभोग की लालसा यदि पूरी जाये तो वह बढ़ती ही चली जाती है। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और अस्तेय के सिद्धान्तों का पालन करके हम आत्मनियंत्रण द्वारा समाज के लिए बड़ा से बड़ा त्याग करने को भी तत्पर हो सकते है। जो व्यक्ति बिलासी है, वगैर श्रम किए रोटी खाता है वह समाज का सबसे बड़ा अपराधी है। प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करके ही जीवन यापन करना चाहिए। विकास पर गांधीवादी परिप्रेक्ष्य दो पहलुओं से विशिष्ट है। यह (1) भौतिक खुशहाली की तुलना में आत्म–विकास को प्राथमिकता देता है और (2) आधुनिक मशीनरी, प्रौद्योगिकी, मिलों की तुलना में बुनियादी स्तर पर काम करने वालों, ग्रामीण और ग्रामोद्योगों के विकास को प्राथमिकता देता है।

गांधीवादी योजना मूल रूप से भारतीय जनता के भौतिक एवं सांस्कृतिक स्तर को उन्नत बनाना चाहती है ताकि न्यूनतम जीवन स्तर प्राप्त किया जा सके।

कुटीर उद्योग–

गांधीवादी योजना का मुख्य उद्देश्य अधिकतम आत्मनिर्भरता प्राप्त करना है। इसलिए इस योजना में कुटीर उद्योगों के पुनः स्थापन, विकास एवं विस्तार की समस्याओं का सविस्तार वर्णन किया गया है। उन्होंने कटाई एवं बुनाई को प्रथम स्थान दिया। यह उल्लेख किया कि खादी के उत्पादन को उतना महत्व दिया जाना चाहिए जितना कि चावल और गेहूँ के उत्पादन को दिया जाता है। गांधीजी का मत है कि ग्रामीण उद्योग व धन्धे भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। उनके अनुसार जब से गांवों में चलने वाले अनके उद्योगों तथा उनसे जुड़ी हुई कई दस्तकारियों को बिना सोचे समझे मनमाने तरीके से और बेरहमी से नाश किया गया है तब से हमारे गांवो का बुद्धि और तेज नष्ट हो गया है। वे सब निस्तेज और निष्प्राण बन गए है और उनकी हालत भूखों मरने वाले मरियल जानवरों सी हो गयी है। वे चाहते थे कि कृषि सम्बन्धी लघु उद्योग एवं ग्रामवासियों की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये विभिन्न धन्धों की स्थापना की जानी चाहिय। जिससे ग्रामों की उन्नति होगी और लोगो को अपनी दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएं सरलता से प्राप्त हो सकेगी तथा देश के प्रत्येक कारीगर एवं नवयुवक को रोजगार प्राप्त हो सकेगा और अन्त में मनुष्य के शोषण का अन्त होगा।

गांधीवादी योजना में प्रत्येक गांव को कपड़े के उत्पादन में स्वावलम्बी बनाने की योजना दी गई है। इसके लिए प्रत्येक ग्रामवासी से यह आशा की जाती है कि वह ग्राम उद्योगों के विकास एवं गठन में सक्रिय भाग अदा करें। इसके साथ–साथ गांधीवादी योजना राज्य से यह अपेक्षा करती है, कि वह ग्रामीण कुटीर उद्योगों के पुररूत्थान एवं विकास को औद्योगिक आयोजन का मुख्य केन्द्र बनाए। इसे दस्तकारों को हस्तशिल्पों के सम्बन्ध में तकनीकी प्रशिक्षण की सुविधाएं उपलब्ध करानी होगीं; कच्चे माल के क्रय और तैयार माल के विक्रय के लिए सहकारी समितियां स्थापित करनी होंगी, कुटीर उद्योगों को बड़े पैमाने की इकाइयों की अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा के विरूद्ध सुरक्षा देनी होगी, और कुछ ऐसे कुटीर उद्योगों को सहाय्य देने होगे जो इसके बिना विकसित नही हो सकते और साथ ही दस्तकारों एवं सहकारी समितियों को सस्ती दर पर वित्त उपलब्ध कराना होगा।

गांधीजी के अनुसार वृहद पैमाने के उत्पादन में उपभोक्ता की जरूरतों का ध्यान नही दिया जाता है। यदि विश्व के सभी देश वृहद् पैमाने की उत्पादन पद्धति अपना ले तो उनके माल के लिए बड़े बाजार नही मिल सकेंगे फलतः वृहद् पैमाने के उत्पादन को रोकना पड़ेगा और बड़े पैमाने के उत्पादन को आगे बढ़ाना पड़ेगा। गांवों का पुनर्निमाण ग्रामोद्योग के बिना संभव नही है। स्पष्ट है कि कुटीर एवं घरेलू उद्योग धंधे, भारतीय अर्थव्यवस्था की एक ऐसी महत्वपूर्ण इकाई है जिस पर हम अपने सुखी जीवन का ढाचा तैयार कर सकते है। सैकड़ो निर्धन ग्रामीणों को स्वच्छ वातावरण मिल सकता है। अमीर एवं गरीब के बीच की खाई को पाटा जा सकता है।

विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था–

गांधीजी विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के समर्थक थे केन्द्रित अर्थव्यवस्था की हानियों को उल्लेख करते हुए गांधीजी ने कहा है कि केन्द्रित उत्पादन में मानव शक्ति का प्रयोग कम होता है, जबकि उत्पादन अधिक होता है। इससे न केवल बेकारी की समस्या सामने आयी है बल्कि विश्व व्यापार की समस्या ने भी जन्म लिया है। केन्द्रित अर्थव्यवस्था ने ग्रामोद्योग को छिन्न–भिन्न कर दिया है जिससे ग्रामीण जीवन प्रभावित हुआ है। उन्होने ग्राम स्वराज्य एवं सुराज्य के लिए उसे एक स्वावलम्बी एवं शक्तिसम्पन्न आर्थिक एवं राजनीतिक इकाई के रूप में विकसित करने का आग्रह किया है। उनका मत था कि स्वाधीन भारत में प्रत्येक गांव एक गणतंत्र होगा। गांधीजी लोकशाही को गांव की मूल आर्थिक एवं राजनीतिक इकाई मानकर ऊपर की ओर प्राकृतिक रूप से विकसित होने के पक्ष में थे। उनका मानना था कि ग्रामों को उजाड़ने वाले आर्थिक नियोजन अन्त में भारत को उजाड़ने वाले सिद्ध होगें। शहर और ग्रामों का विषम आर्थिक विकास हमारी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं को जटिल बनायेगा। गांधीजी केन्दीयकृत औद्योगिक व्यवस्था को भारतीय परिप्रेक्ष्य में निम्न कारणों से अनुपयुक्त मानते थे –

(1) भारत एक विशाल आबादी वाला देश है, जहां केन्द्रीयकृत औद्योगिक व्यवस्था, देश में बेरोजगारी व भुखमरी को जन्म देगी इस देश में विकेन्द्रित श्रमप्रधान आर्थिक विकास की आवश्यकता हैं।

(2) वृहत पैमाने के उद्योग गरीब कारीगरों को काल के मुख में पहुँचा देंगे। मालिक–मजदूर संघर्ष के साथ देश की शांति व्यवस्था को नष्ट हो जायेगी।

(3) एक कृषि प्रधान होने के कारण वृहद् पैमाने के उद्योगों की स्थापना से कृषि की अवनति होगी, जिससे उद्योगों को कच्चा माल मिलना बन्द हो जायेगा फलस्वरूप वे स्वतः बन्द हो जायेंगे।

गांधीजी का मत था कि हिंसा का मुख्य कारण केन्द्रीयकृत औद्योगिक व्यवस्था ही है। पाश्चात्य भौतिक सभ्यता की अधिकांश बुराइयां इसी व्यवस्था की उपज है। साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध एवं प्रतियोगिता मुख्यतः इसी व्यवस्था का परिणाम है। उनका विश्वास था कि "विश्व को महायुद्धों की विभिषिका से मुक्त करने, आर्थिक क्षेत्र में सत्य एवं अहिंसा के सिद्धान्तों को प्रतिष्ठित करने, राष्ट्रीय सम्पत्ति का समान वितरण करने और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अन्त करने का सर्वोत्तम उपाय कुटीर उद्योगों की स्थापना है।

ग्रामोदय– गांधीजी ने भारतीय अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत ग्रामोदय को अपने आर्थिक चिन्तन का केन्द्र बनाया। आप का विश्वास था कि 90 प्रतिशत आबादी जो गांवो में रहती है, जब तक उसका आर्थिक विकास नही होगा तब तक किसी भी माध्यम से भारत की तकदीर नही बदल सकती है। सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक या आर्थिक क्षेत्र में पश्चिम का अंधानुकरण हमारे लिए राष्ट्रघाती होगा क्योंकि हमारा पुरातन भौतिक व अध्यात्मिक चिंतन उनसे बिल्कुल मेल नही खाता है। असली भारत गांव में रहता है। वहां का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन, विश्व के अन्य समाजों से बिल्कुल भिन्न है। दुर्भाग्य से भले ही उसे शैक्षिक योग्यता प्राप्त करने के अवसर प्राप्त न हुए हो। लेकिन उसे विरासत से मिला हुआ कृषि, हस्तशिल्प, वास्तुशिल्प, चित्रकारी, पशुपालन, उद्यान, जड़ी–बूटियों की पहचान का अर्थशास्त्र और परस्पर सुख–दुख में मिलजुलकर रहने का सामाजिक ज्ञान मिला है। ग्रामीण जीवन में लोकसंस्कृति रग–रग में समायी हुई है।

गांधीजी ग्रामोदय के लिए कृषि सुधार को महत्वपूर्ण मानते थे। वे कृषि के विकास का मुख्य लक्ष्य खाद्यान्नों में राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता मानते थे। इसकी प्राप्ति के लिए न केवल बड़ी मात्रा में अच्छे कृषि–आदानों का प्रयोग आवश्यक है बल्कि भू–सुधारों का प्रयोग भी करना होगा। इसके लिए काश्तकारी प्रणाली में परिवर्तन, भू–स्वामित्व अधिकारों का उन्मूलन, जोतों की चकबन्दी सहकारी ,समितियों का गठन आदि उपाय इस्तेमाल करने होगें। महाजन व्यवस्था को समाप्त करना होगा और किसानों को अधिक मात्रा में ऋण सुविधाएं प्रदान करनी होगी। गांधीवादी योजना में डेरी उद्योग पर विशेष बल दिया गया और इसे कृषि का एक सहायक व्यवसाय माना गया।

वितरण सम्बन्धी विचार –

गांधीजी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति आवश्यकता के अनुसार उपभोग करे तो अभावग्रस्तता की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी और समाज में आर्थिक विषमता, गरीबी आदि भी उत्पन्न नहीं होगी। उनके अनुसार अधिक धन का एक भी कण अमीरों का नैतिक पतन करता है और समाज में आर्थिक विषमता फैलाता है। अतः सम्पत्ति का समान वितरण होना चाहिए और विषमताओं को न्यूनतम किया जाना चाहिए ताकि जीवन के लिये आवश्यक वस्तुओं का अभाव न रहे।

उनका मत है कि आर्थिक समानता के ठीक आधार के बिना सारा रचनात्मक कार्यक्रम बालू की दीवार होगी। गांधीजी ने रोटी के लिए श्रम, अस्तेय अपरिग्रह, ट्रस्टीशिप आदि के सिद्धान्तों का प्रतिपादन इसलिये किया कि उनके द्वारा धन को न्यायपूर्ण वितरण होगा और सबके लिए आर्थिक अवसरों की अधिकतम समानता लाने में सहयोग मिलेगा।

कुल मिलाकर गांधी के आर्थिक विकास का सिद्धान्त अर्थशास्त्र की जटिलताओं से मुक्त है। वे ऐसे समाज की रचना पर बल देते है जहां उपभोग के स्थान पर आत्मनियंत्रण हो, सबके हाथो में रोजगार हो, आत्मनिर्भरता हो। वे ग्राम स्वराज्य, स्वदेशी व विकेन्द्रीकरण के माध्यम से देश का आर्थिक विकास करना चाहते थे। उनके विकासवादी दर्शन में बड़े उद्योग, प्रतिस्पर्द्धा व संघर्ष का कोई स्थान नहीं है। आज विकास की लम्बी यात्रा के बावजूद हम अनेक प्रकार की आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त है। ये समस्याएं हमें गांधीवाद की तरफ खीच रही है। ज्वलंत आर्थिक समस्याओं के निराकरण के सम्बन्ध में गांधीवाद एक बार पुनः प्रासंगिक हो गया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

दत्त, गौरव व महाजन अश्विनी : भारतीय अर्थव्यवस्था, एस.चन्द्र एण्ड कम्पनी प्रा0लि0, नई दिल्ली–2016

झा, सुबोध : भारतीय समाज, पियुष बुक पब्लिकेशन प्रा0लि0, दिल्ली–2010

मदन जी.आर. : परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र, विवेक प्रकाशन, दिल्ली–2017

मेहता, वल्लभदास (संपा) : गांधीजी का आर्थिक दृष्टिकोण, जनसम्पर्क मंत्रालय भोपाल मध्यप्रदेश, 1994

मिश्र, एस.के. व पुरी, वी. के. : भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस–2009

सिंह, जे.पी. : आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, पी.एच.आई. लर्निंग प्रा0लि0 दिल्ली–2016

त्रिपाठी, प्रयाग नारायण : महात्मा गांधी और पं.दीनदयाल उपाध्याय, लोकहित प्रकाशन लखनऊ–2010

दुबे, श्यामाचरण : विकास का समाजशास्त्र, वाणी प्रकाशन दिल्ली–1996

MSO-003 IGNOU NOTES - 2010

TEACHINGS OF MAHATMA GANDHI: CONTEMPORARY RELEVANCE

DR BADRUDDIN
Associate Professor (Political Science)
PES's Ravi Sitaram Naik College of Arts & Science, Farmagudi, Ponda, Goa, 403401
Email: drbdar786@gmail.com

Abstract:

Gandhi, the 'Father of Nation' in true sense remains a unique personality for India as well as the world who is often compared with Einstein, Tolstoy, Buddha and St Augustine. An ordinary man with extraordinary hidden talents, Gandhi remains a source of inspiration ever since. Gadhian perception on non violence, satyagraha, value education, ideal state, administration of justice, social reforms, untouchabiliy, trusteeship, varna system, nationalism, women's emancipation, decentralization and democracy; all are increasingly important for contemporary Indian democracy. The paper gives an overview of Gandhian teachings and practices by way of reference only as every thought and action of Gandhi is a subject of academic debate and investigation. Gandhi, a carefree, disorganized and unmanageable leader, left many prints on India thought which kept the modern thinkers in dilemma to understand and assess the unexplored and hidden philosophy of Mahatma Gandhi.

Key Words: Gandhi, Philosophy, Teachings, Non Violence, Indian nationalism

Background

Mahatma Gandhi, a man of broad vision and understanding, and an enlightened personality, proved instrumental in securing India's liberation from the iron hands of British Colonial Rulers. Gandhi did not used any violence technique in any form or manifestation and successfully managed to get free India. Gandhi appeared on India's dismal map at the crucial time when the grieved and pathetic masses urgent needed the teachings and practice of true Mahatma, the only spiritual leader who instilled life into virtually inactive Indian masses and took them out of soul killing support. Gandhi's powerful spiritual magic of Satyagraha and non violence touched the heart of millions living at every corner of the world. For no reason, Gandhi had the wisdom of Socrates, the humility of St Francis, mass appeal of Lenin, guidelines of Leo Tolstoy, path makings of *Ram Rajya*, truth feelings of Raja Harishchandra, humanity of Buddha, words of Ruskins, Henry David, Thoreau, and probably every spiritual philosopher who stood for truth seeking life. As a revolutionary to overthrow tyrant rule and social injustice, Gandhi never bowed head before the ill will of colonial rulers. Gandhi was neither intellectual nor academicians, rather simply an apostle of non violence, consistent devotion, spiritual explorer and ethical scientist. Many believe that India would have still been a part of Imperial Masters had there not been the birth of Gandhi. Through exemplary code of conduct, consistent advocacy of human rights, Gandhi successfully diverted the polluted minds of British India. Gandhi's secret magic: no hate, no evil, and no bad words, continue to remain source of inspiration for the modern world.

Today's India presents the spectacle of badly split nation in ideology, region, religion and community and these decisive manifestations have already acquired a dubious reputation. Ironically, Gandhi's *Bharatdesh,* a land of Mahatmas, has been gripped by the cult of divisive tendencies. Several ruling agents are pre-occupied with selfish pursuits who are eroding the democratic tradition in the forms communal vote, Love Jihaad, Mandir Masjid issue, saffronisation of literature, Cow-Goat Politics, scams, linguistics chauvinism and regional

disintegration. Many anti Gandhian followers are involved in the insane polity of hypocrisy and frenzy propaganda. TV Channels are being censured and dictated by the wish and will of ruling agents whereas the policy makers are free to implement law without giving due regards to common masses.

Gandhi openly cautioned Indians rulers and ruled that persistent bargaining, provocative slogans and suspicious entries in politics are tragic bolts that lead to erosion of secular democracy ending in turbulence and instability. Why to convert Indian into a dirty game by use of petty politics, bargaining law and separatist trends, all remain questionable. Gandhi publicly said that the sacrifices are essential to throw all tyrant, impure, misguided elements and unmindful actions. Gandhi's earnest devotion and miraculous appearance helped to uplift growing pessimism and intense frustration of political leaders. If truth, justice, rationality and social values are combined with Politics, Gandhian mission will regain glory and faith and India would definitely rank among the best democratic country in the world. If trouble makers, selfish politicians, intellectual terrorists, evil doers, imposters, delinquents, and others of similar ranks are idealized, Gandhi may be reborn to teach the lesson of tolerance, love, unity and brotherhood. For varied reasons, Gandhi remains unique in the world, another name of sacrifice with no power, no wealth, no position and no political affiliation. He can be rare example who will refuse to accept seat in Indian Sansad, White House, British Parliament or any position in the world. A man with ego free, conscious free, prestige free, who never cared about his life and the only person in world, is called as 'Christ Spirit'. Gandhi knew the true definition of Geeta, Ramayana, Bible, Quran, Guru Granth and other epics.

Teachings and Philosophy of Mahatma Gandhi

Gandhi wanted to break the barriers of distrust, deception and treachery. Gandhi was not obviously the world's coinage, rather he was minted of a different character and rare person. Teeming millions of Indians can never forget the sacrifices of Gandhi. Poisonous climate of violence deepening urgently needs the rebirth of Gandhi who loved even the most discarded masses, practically understood the true meaning 'fast unto death', toured the most sensitive localities on foot offering hope. Gandhi while opening all barbarous elements, set an example of austerity and frugal living. Gandhi's missions: Non Cooperation Movement (1920), Civil Disobedience Movement (1930-1931), and Quit India Movement (1942) are illustrious examples for Indian's freedom movement. At the outset, it is truly said that Gandhi was not a systematic thinker but rather simply an inspired Philosopher who expressed sentiments through deepest feelings, eternal truth, and accepted non violence as a weapon of matchless potency.

Gandhi, the Father of Nation continues to remain towering personalities ever since. Ideas of non violence, satyagrha, ideal state, trusteeship, nationalism, prison and jail reform, *Swadeshi*, education, decentralization, or *Varna* system were originally incorporated from other sources which Gandhi presented in a more systematic manner. Today, when the world is facing serious challenges of varied nature, Gandhian values work as wonders. Research institutes, NGOs and educational organizations are working as how to regenerate the classical ideas of Gandhi. Let us have Gandhian teaching in briefly to understand the hidden philosophy of life.

1. **Ideal State**

At the outset it may be noted that Gandhi was not a systematic thinker but only an inspired teacher who poured out his deepest feelings and sincere realization of truth. He considered state

as spiritual and non violent rather than hate and disgust. His theories on ideal state have been based on : Religion and politics, Ahimsa and Satyagraha that supported non cooperation, civil disobedience, fasting and Hijarat. Gandhi's ideal state was based on peaceful action, non violence and free from all sorts of corruption. Gandhi wanted a state for happiness and prosperity to all human beings. In short, Gandhi supported decentralization of state power, ideal state of Karma Yogi, practical work rather than mere promises and state free from any political violence. In Gandhi's assessment, the state (Western type) was the symbol of violence in concentrated form.

Gandhi gathered experience in South Africa that more and more power to the state meant more and more violence and greater amount of coercion. In the name of the maintenance of law and order, South Africa's white government acquired enormous power that led to the ruthless administration, exploitation and curtailment of individuals' liberty. Gandhi's love for individual's freedom ranks him with the great anarchist philosophers. In a layman language, Gandhian state supported ideal principles which are increasingly relevant today.

2. Ideal Society

Gandhi favoured ideal society- a village autonomy based on decentralization of power. Need of self discipline is imperative where everyone has to perform duties voluntarily and not by force. There are real adjustment between authority and freedom with no violence. Panachayati Raj and Swadeshi are principled with automatic regulation of means of production and distribution. Everyone follows the profession of ancestors without any inferiority or superiority. Wages are more or less same with happy day today life. The wealthy are trustees of the surplus wealth.[1] Manual work and national reproduction are given utmost priority without any hatred, class, caste and ethnic distribution. Once the ideas are formulated, there is no problem in modern world to build ideal society infrastructure as it the permanent solution to the existing problems in Indian society.

3. Philosophy of Non Violence

Gandhi, a radical revivalist and practitioner of peace, has been a rare leader of Indian masses who successfully synthesized religious idealism and political realism with non violenvce. He gave emphasis on value goal of truth and non-violence for the solution of problems. His unimaginative honesty based on non-passivity, self sacrifice, moral strength and matchless potency have been the mixture of truth-seeking elements. His method of activism and Satyagraha is the only viable option for those seeking for permanent peace. Gandhi's holistic approach to peace is widely discussed and carefully analyzed. It covers all departments of life for essential reformation and regeneration.

Many admitted that Gandhi unmistakably had foreseen the predicaments characterized by modern material civilization which for him was a 'disease' and 'nine days wonder'. He saw the present world order fraught with danger while planning for peace. He openly warned the people of modern civilization which was characterized by violence, accelerating tension, war-psychosis and abused militarism. For Gandhi, non-violent world order holds good to end global problems alike environmental pollution and ecological decay. In true sense, Gandhi's moral philosophy has served as a unique solution to nuclear threat in contemporary world.[2] Gandhi's extremely depth and logically strong philosophy compelled the scholars of western peace movement to examine the Gandhian perspective. Even today, when Indian democracy remains under the threat

of communal and ethnic tension, Gandhi's lesson of Hindu-Muslim Unity remains the best alternative to protect secular culture, democracy and peace. [3]

In fact, Non Violence was not the original contribution of Gandhi rather it is being practiced in India since ancient times. Gandhi modified and made it more extensive which simply works in all walks of life: domestic, social, economic, ideological, cultural, political, etc. It is a positive concept based on goodwill, implies the absence of malice towards opponents, and hate of the evil without hating the evil doers. It is the mother of success, virtue and rewards of life, the first article of faith and last article of creed. For varied reasons, 'non violence' encircles Gandhi now and then.

4. Gandhi on Administration of Justice

Gandhi was not happy with the existing judicial administration and favored its transformation. He was highly critical of the role of judges and lawyers for being non transparent, favoured decentralization in judicial administration and insisted on the transfer of judicial work to the village Panchayat. Gandhi criticized the expensive legal business, delay in decision makings, and insisted on the frequents transfer of judges. Gandhi stated that the parties to civil suites must be compelled in majority of cases, to refer their disputes to arbitration, the municipalities and Panchayats of intermediate courts should also play transparent role. Case law should be abolished and general procedure should be simplified. Gandhi also suggested that judges and lawyers should perform their duties without any fee or payment. [4]

5. Nationalism and Internationalism

Gandhi, a great nationalist, favourd the elements of humanism whose mission was not merely the brotherhood but the devotion of life. He did not find any contradiction between absolutely independent states and internationalism. The principles of nationalism are based on Satyagrah, nonviolence, justice, transparency in law and true leadership. Despite being a nationalist, Gandhi was rather more internationalist in perception. Gandhi agreed that international league would become possible only when all nations irrespective of color, creed, ethnicity, nationalist come on one platform. Gandhi wanted to see India on global map and found both Nationalism and Internationalism as identical in various streams. It is only the limited thinking, narrow mindedness, exclusiveness and selfishness that differ people from country to country and ideology to ideology. In short, both Nationalism and Internationalism as two sides of a same coin. Today, the Global Village exemplifies Gandhian principles in other way round.

6. Gandhi on Trusteeship & Concept of Charkha

It is called as economic philosophy of Gandhi that stood for Panchayati Raj and decentralization. Trust means to achieve the economic prosperity where everyone is a party. He also favored Charkha as a symbol of ideological victory often associated with economic philosophy of Gandhi. Trusteeship is often called as the real value of Gandhian philosophy because it is the backbone of economic system. Non violence and philosophy of Ahimsa are meaningless if a person is fighting with hungry stomach. Gandhi suggested Indian made goods and services from Charkha which is good for local employment, health and long lasting. A free India did not mean merely transferring the established British administrative structure into Indian hands without meaningful trust.

7. Caste and Varna System

Gandhi believed that Hindu society in its pristine state – during the Vedic times – was based on the law of varna and *Ashrama.* Gandhi believed that the form of social classification was purely functional and did not have any hierarchical or iniquitous connotations. Each of the varna, which Gandhi referred to as social classes (while also using the term castes for elsewhere), was determined by birth. Each varna was assigned a particular hereditary calling with no implication of superiority or inferiority. In this form, Gandhi did not consider varna to be a manmade institution, but the law of life universally govern the human family. He believed that varna provided the basis of an egalitarian society. One who fails to do so loses the title of varna. On the other hand, a person, though born in one varna, but displaying the predominant characteristics of another, is regarded as belonging to the second varna. There is ambiguity in this analysis because Gandhi talks of varna is determined by birth, even as a person recognizes the possibility of a person being born in one varna and belonging to another by virtue of qualities. What is important, perhaps, is Gandhian conviction that the social structure delineated in ancient times was true in conception and that the blemishes seen now, were a result of faulty practice that continues in hierarchal Indian society even today. [5]

8. Untouchability

It is Gandhi, not the Ambedkar, who truly represented the cause of untouchables and *Harijans*. Indian system has often been evil against the spirit of Indian society which has been the symbol of degradation due to lack of justice in society. It created cracks, weaknesses and separated which indirectly helped the British Raj to formulate divide and rule policy. It was a bolt and social sin of hierarchical rigid Hindu Society that needs to be treated properly. Gandhi openly attacked Hindu Samaj for practicing untouchability due to superstition and orthodox practices. Actually, it has never been a part of Hindu Society rather evil wills prevailed due ill designed reforms. It is a heinous crime against humanity, an arrogant assumption of caste hierarchy, feelings of superiority and a sinful institutions. Gandhi publicly stated that such attitude hinders the progress of society, corrupts human dignity, and ends in immoral principles. Gandhi therefore suggested for secular social reforms against untouchables. No God has made mankind different but all are equal by birth. Such Gandhian ideas are too much practical and acceptable in Indian society. Gandhi believed that only bold social reform can change the traditional structure of Indian society.

9. Education

Gandhi's scheme of education from 7 to 14 years of age that laid emphasis on physical drill, drawing, and handicrafts. Gandhi's arguments that simply bookish system does not ensure coordination to all mental faculties, holds good reasons ever since which are economically more supportive. However, educations should be only Indian with classical patterns. Therefore, Gandhi strongly opposed English Education and favoured for indigenous education. First, it was based on foreign culture and completely excluded the *Gurukul* culture, Indian minds, hearts and souls. Gandhi suggested to replace English medium through village education. Education through a foreign language entails a certain degree of strain, and our young generation have to pay dearly for it. To a large extent, they lose the capacity of shouldering any other burden afterwards, for they become a useless lot who are weak of body, without any zest for work and mere imitators of the West. They have little interest in original research or deep thinking, and the qualities of courage, perseverance, bravery and fearlessness are lacking. For varied reasons, Gandhian

system of education is undergoing serious challenges and hence needs to be compensated with modern system of education.

10. Nationalization of Industries

Gandhi strongly believed that domestic industries should be primarily in the hands of private sectors. Gandhi was unhappy to see the control of large scale industries by handful business communities that resulted in concentration of wealth and the exploitation of working classes. Gandhi pleaded for the control of large scale industries where small scale industries should be left to the private individuals only. In short, Gandhi was a practical thinker and favoured the communities of India for better employment, economic security and social goodness. Gandhian principles are duly accepted during age of modern industrialization.

11. Emancipation of Women

Mahatma Gandhi had expressed views and wrote on numerous issues that concerned the Indian Society in particular and humanity in general. Gandhi strongly favoured the emancipation of women for managerial efficiency. He opposed *purdah*, child marriage, untouchability, *Sati Pratha* and dowry system. He especially recruited women to participate in the salt tax campaigns and the boycott of foreign products. Gandhi's success in enlisting women in his campaigns, including the salt tax campaign, the anti-untouchability campaign and the peasant movement, gave many women a new self-confidence and dignity in the mainstream of Indian public life. Issues like Equality of Sexes, Marriage, Widow Remarriage, Divorce, Women's Honor, Education and Co-education, Birth Control and Sterilization are important considerations to understand Gandhi about women and law.

12. Religion

Gandhian conception and philosophy of religion have been an integral and inalienable part of politics. Gandhi was a religious cum politician per se to promote morality and faith which is miserably lacking toady. Gandhi never meant simply the reading of Bible, Geeta or Quran that have become the source of disagreement toady due to lack of essential faith. This means, Gandhian philosophy of religion is drastically different what is commonly understood, rather is based on social justice, prosperity, happiness, and universal love. There is enough scope of non violence, purification of mind and non intervention of state in any sort. All religions end in – heaven, a general meeting place after death. This means, Gandhi's theistic approach did not support to any particular religion rather committed for 'one faith' to realize the fundamental principles of human rights. In fact, Gandhian belief in God is guided by the mysterious force where God is a power to feel and untouched and there is direct connection between soul and God through religion. In a nutshell, Gandhi was truly a secular leader and his philosophy of Ram Rajya had no connection with *Hinduism*. A saint, moral revolutionary, and accepted the peaceful solution is the only alternative.

13. Satyagraha & Freedom

Gandhi was a strong exponent of self sacrifice to meet peaceful aggression and violence, based on fearlessness and self dependence. A true Satyagrahi never accepts defeat and whereby the individuals won by love and affection. Such people fight without weapon through the introduction of truth and gentleness in political and national life. It is only based on unquestionable faith in God. Various manifestation of Satyagraha like non cooperation, civil disobedience strike, fasting and *Hijrat* are the weapons of Gandhi.

Non Cooperation requires self sacrifice, moral strength through self purification and expression of anguish love. Civil disobedience is also a powerful weapon to convince the enemy of legitimate demands. The process should continue till the demands are met provided the law abiding forces accompany. Strike or *Hartal* is a mechanism to fulfill the demands only through peaceful agitation without any moral or material damage. Fasting is also an effective device to promote inner strength, vigor and energy. In its real spirit, fasting must be effective and convincing. However, it needs great caution and could be resorted to only those persons who possess spiritual fitness, purity of mind, discipline, humility and strong faith. However, it is the last option. *Hijarat* means voluntary migration from one place to another for interaction, social cohabitation and better understanding. Even if an ordinary person feels that he could not take Satyagraha again the injustice of oppressor, he should leave the ancestral place but it is never a symbol of weaknesses. Finally, it leads to complete breaking of association with the country, relative, friends, nears and dears. Practically, Gandhian techniques vindicate the individual abiding right of oppression to coercive authority. Today, Gandhian techniques of Satyagraha has received a dramatic boost.

14. Democracy

Gandhi was a true democrat and believed in the decentralized democracy supported by development of village administration. It is not simply mechanical but is the way of life, change of heart and soul where government should intervene least and public opinion should be given fullest expression. In democracy, no violence at any stage is permissible. In true sense, Gandhi was a democrat and lover of people.

15. Swadeshi

Swadeshi literally refers to love one's own country. Gandhi applied this technique in political, cultural, religious, social and economic fields. Gandhi believed that Swadeshi should be accepted as creed essential to use indigenous good even if those are comparatively low quality, bad and non marketable. In fact, Gandhi made a plea for the protection and security of domestic made products especially those who have potential growth. In crude sense, Swadeshi means boycott of foreign goods. In fact, India has been the birth place of human resources where foreign rulers used and drained India's natural resources due to lack to expertise and understanding. Gandhi had soft approach and did not reject all foreign goods which could not be manufactured in India provide such import do not hamper smooth functioning of India's economy. In briefly, Gandhi supported the import of foreign goods for good reasons only. Such examples like import of healthy literature, surgical goods, mechanical and scientific materials which are not manufactured in India. Gandhian ideas emphasized contentment with local conditions which are all relevant to contemporary India despite the emergence of multinationals.

16. Communism

Gandhi stood for stateless and classless society based on decentralization of power rural administration. Some critiques believe that Gandhism minus communism leads to violence. These are identical principles in Marxian theory of class war, revolution, labour, capitalism and alienation. But Gandhian concept was peaceful unlike revolutionary Karl Marx. There is common understanding that capitalism is a source of trouble for proletariat class. Thus, Gandhi and Marx had soft corner approach about the poor and working communities so as to uplift the downtrodden and marginalized communities. In fact, Gandhi wanted justice in favour of poor

and victimized sections of Indian society. Gandhi was a spiritual thinker unlike Marx who was more pragmatic with materialistic considerations of society. Two corner: Violence and non violence is clearly visible in Gandhian philosophy unlike Marx. Thus, Gandhi became more relevant especially after the collapse of communism in Eastern Europe and the former USSR.

Gandhian Philosophy: An Endless Story

The above said teachings and philosophies of Gandhi are merely the references. There are hundreds of more important areas where Gandhi is relevant to modern India. Gandhian ideas about idol workshop, cow protection, majority- minority rights, political parties, social reforms, police and military, crime, law & punishment, media and press, family system, bread labour, means and ends of life, health, divide and rule policy, environmental pollution, ecological decay, and many more are not less important. Even those areas like science, technology, computer revolution, foreign policy, diplomacy, defense and security that Gandhi has not directly taught, cannot remain untouched from Gandhian ideas and applications. Gandhi is no more, but Gandhism will ever remain to guide the Indian life, people, society, administration and law. In fact, the intellectual foundation that Gandhi's metaphysical idealism as impersonal truth, ethical absolutism as imperative to Ahimsa, religion as a factor of history, moral resistance for Swaraj, and philosophy of freedom; all are import dimension of social philosophy. [6]

Conclusion

Gandhi, mistakably a broadminded and visionary leader, virtually failed to convince the large sections of Indian masses thereby leading to division between intelligentsia and the commons who remained cut off from the mainstream of society.[7] Gandhian legacy in modern India remains a subject of debate. The contemporary India is not only facing the serious challenges on the issue of religion and community but also women, minorities, linguistic regionalism and ethnic frenzying which are now proving uncomfortable in various streams. Gandhi remains a moral force which accelerate the processes of transition from medieval to modern Indian nationalism. It is a beautiful amalgam of Indo-Western Culture, fusion of Hindu-Muslim thoughts and hence Gandhi's patriotic sentiments deserves serious considerations today. Gandhi was one of the greatest social reformers and a national builder of modern India. He took an oath to reform, educate and empower the Indian community and was successful to a great extent in implementing despite strong opposition from various sections of the community. It is, therefore, incumbent for us to revive Gandhian movement once again to make the people understand the value of modern education. In fact, Gandhi's martyrdom deeply touched the feelings and emotions of mankind, a renewed interest has been shown in the world moving consequences and momentous ideas embodies in Gandhism. He has been hailed as the greatest Indian after Gautama Buddha whose teachings of non violence is greatly relevant to modern world infected with insane militarization and power politics.

Findings

Many critiques believe that Gandhi was not a systematic philosopher like Plato, Aristotle, Hobbes, Locke, Rousseau, Bentham, Lincoln and several more western scholars who provided empirical solution of problem. Yet Gandhi's popularity and contributions can never be denied. Gandhi is taught in schools, colleges and idol image and pictures in various government and private offices. For varied reason, Gandhi remains the most photographed man in India, printed on Indian Rupees, Stamps, books, literature and intensively researched modern thinker.

Gandhi was a harmonious blending between values and ethics, violence and humanity which no one did. Gandhi beautifully synthesized between love and hate, truth and untruth, rulers and ruled. Some commented Gandhi as one third politician, one third saint, and one third hum-bug. Very often, Gandhi is called as impractical, utopian, non scientific, and an incomplete visionary with weak social foundation. So, the modern Indian society has expressed doubts about Gandhian weapon of Non Violence that has become outdated. Furthermore, Gandhian concept of classless and casteless, opposition to modern industries, rural based education, practice of cottage industries, are impractical and do not match with India's hi tech revolution. In short, Gandhian philosophy and thinking have been left far behind during the age of globalization, economic liberalization and IT revolution.

Despite odds and challenges, Gandhi remains a gift to modern world whose ideas and values are the subject of academic debates. Large number of academic bodies, NGOs and research organization in India and world are conducting research on Gandhi's unique contributions. Gandhi remains most popularized leader in India ever since because he left many secret ideas in dark which the world is yet to explore.

References

1. H.R. Mukhi (1994), *Modern Indian Political Thought*, Delhi: Surjeet Book Depo, p. 26.
2. For details, see V.T. Patil, (ed)., "World Peace and Nuclear Threat – A Gandhian Solution" in *Problems and issues in Gandhism,* New Delhi, Inter-India Publication, 1990, pp.198-203.
3. Kuldip Nayar, "Worshiping Gandhi without Reverence", *Navhind Times* (Panaji), 13 March 2002, p.8.
4. Prem Arora and Brij Grover (2000), *Selected Western and Indian Political Thinkers*, New Delhi: Cosmos Bookhive Pvt Ltd, pp. 104-05.
5. Ibid, pp.102-03.
6. V.P. Varma (1993), *Modern Indian Political Thought,* Agra: Lakshmi Narain Agarwal Educational Publisher, pp.336-38.
7. S.C. Gangal (1998), *Gandhian Thought and Teachings in Modern World*, New Delhi: Criterion Publications, p.11.

उच्चशिक्षणात गांधी विचारांचा अंतर्भाव

डॉ. पद्मरेखा धनकर
सरदार पटेल महाविद्यालय
चंद्रपूर
9881945557

गोषवारा –

आधुनिक भारताच्या उभारणीतील आणि स्वातंत्र्य संग्रामातील केंद्रस्थानी असलेले महान नेतृत्व म्हणजे मा. गांधी पारंपारिक विचार व पाश्चिमात्यांचे सुधारणावादी विचार यांच्या संमिश्रणातून आपल्या भूमिकेला कायम विचारप्रवृत्त ठेवणारे विचारवंत म्हणूनही मा. गांधी यांचे स्थान अग्रस्थानी आहे. स्वातंत्र्य लढयाला व्यापक आणि सर्वसमावेशक करण्याचे कार्य त्यांच्या हातून घडले. लो. टिळकांच्या नंतर भारतीय स्वातंत्र्य लढयाला जो चेहरा लाभला तो मा. गांधींचाच. संत प्रवृत्ती धारण केलेला आणि आपल्या अहिंसा व सत्याग्रह या शस्त्राने इंग्रजांना नामोहरन करणारा महापुरूष असेही त्यांचे वर्णन केले तर अतिशयोक्त ठरणार नाही. भारतीय तत्वज्ञान, पाश्चिमात्य तत्वज्ञान, धर्मशास्त्र, शिक्षण, निती, कायदा अशा अनेकविध विषयांमध्ये ते लिलया विहार करत. आपल्या विरोधकांनाही आपलेसे करून घेण्याचे कसब मा. गांधींमध्ये होते. सावरकरादी, आंबेडकरादी किंवा अन्य विचारवंतांच्या विचारांनाही तितकेच महत्व देऊन स्वतःचे मतही त्यांनी अत्यंत ठामपणे मांडले.

इंग्रजी शिक्षणाला आणि शिक्षण पध्दतीला त्यांचा तसा विरोध नव्हता. परंतु भारतीय परंपरेत शिक्षणाची एक मोठी परंपरा अस्तित्वात होती. गुरूकूल पध्दती, त्यातील शिक्षण याकडेही आपण डोळसपणे पाहिले पाहिजे, असे त्यांना वाटे. आधुनिक शिक्षण पध्दती ही विद्यार्थ्यांच्या ज्ञानात भर घालते, माहिती डोक्यात कोंबते परंतू नैतिकतेचा विचार देत नाही. याचे संमिश्रण शिक्षण व्यवस्थेत जर झाले तर तिला एक महत्वाचे वळण लागू शकेल असे त्यांना वाटे शाळा, महाविद्यालये व विद्यापीठे ही विद्यार्थ्यांना घडवणारी ज्ञानकेंद्रे बनावीत. केवळ त्यांच्या डोक्यात माहिती कोंबून विद्यापीठाबाहेर पडलेले यंत्रवन माणसे नकोत. असे त्यांना मनोमन वाटे उच्चवर्णियांबरोबरच दुर्बल घटकातील वर्गालाही शिक्षण दिले पाहिजे. या मतावर ते ठाम होते. पुरूषांच्या बरोबरीने स्त्रियांनाही शिक्षण दिले पाहिजे, स्त्री घराबाहेर पडली पाहिजे. परंतु तिचे घराकडे दुर्लक्ष होता कामा नये याचे कारण म्हणजे पुतळीबा (त्यांची आई) ही त्यांची आद्य गुरू होती. त्यांच्या प्रभावातून सत्य, अहिंसा, प्रामाणिकपणा या मूल्यांची रूजवण त्यांच्यात झाली होती. शालेय शिक्षणापासून मूले व्यसनादिकांपासून दूर असली पाहिजेत. स्वावलंबन त्यांच्या अंगी रूजवले पाहिजे. सत्यनिष्ठा हे त्यांचे मूलसूत्र असले पाहिजे. त्यामुळे व्यक्तीच्या जीवनाला एक नवे वळण लागू शकते. मानवी मूल्यांची रूजवात वैदिक धर्मापासून जे सुरू झाली. त्यामध्ये जैन व बुध्दाने नवी भर घातली. त्याचा आणि येशू ख्रिस्ताच्या विचारांचाही त्यांच्यावर फारमोठा प्रभाव होता. त्यामुळेच त्यांना सन्यस्त जीवन जगता आले. परंतु ते सन्यासी नव्हते. उच्चशिक्षणामध्ये विद्यार्थ्यांनी सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, सत्याग्रह, स्वावलंबन, प्रामाणिकता इ. मूल्ये अंगिकारावी. विज्ञानवाद हा अध्यात्मवादासारखाच आपण सोबतीला घ्यावा. ते स्वतः यंत्रविरोधी असले तरी यंत्राला त्यांचा विरोध वेगळया पातळीवरचा होता. माणसाच्या हातांना काम न मिळता. त्याला बेरोजगार करत असेल तर ते यंत्र कुचकामी आहेत. हा दृष्टीकोन समजून घेतला म्हणजे गांधीविचार समजायला अडचण जाणार नाही. भारतीय आणि पाश्चिमात्य चांगल्या बाबींचा समावेश करून घेतला म्हणजे गांधीवाद नावाचे एक रसायन तयार होते आणि हेच गांधीवादाचे मर्मही आहे. गांधी विचारांचा उच्चशिक्षणामध्ये अंतर्भाव असणे ही आजच्या काळाची गरज आहे.

बीज शब्द – सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, सत्याग्रह.

जागतिक पातळीवर जे महापुरूष होऊन गेलेत त्या महापुरूषांमध्ये महात्मा गांधी यांचे स्थान फार मोठे आहे. टॉलस्टॉय, रस्कीन, लो. टिळक, जॉन स्टुअर्ड मील, कार्लाईल अशा अनेक महापुरूषांचे आणि लेखकाचे लेखन त्यांना खुणावत असे. एका उच्चकोटीच्या संन्यस्ताने जे जीवन जगावे ते जीवन गांधीजी जगले. गांधीजींचे कुटूंब ज्या पोरबंदरमध्ये होते त्या पोरबंदरमधून सुरूवातीच्या काळात त्यांची जडणघडण झाली. सत्यनिष्ठा, अहिंसा, अपरिग्रह अशा बाबींचा त्यांच्यावर बालमनापासून संस्करण झाले. भारतातील जैन, बौध्द धर्म, पारंपरिक वैदिक धर्म आणि ख्रिस्तीधर्म यांचा प्रभाव त्यांच्या व्यक्तिमत्वामध्ये उतरला. गांधीजी धार्मिक वृत्तीचे होते, धर्मांध नव्हते. आपल्या व्यक्तिमत्वाला उजळून टाकण्यासाठी सत्यनिष्ठा, प्रामाणिकता, चिकाटी, सहनशीलता या मूल्यसरणींचा अंगिकार त्यांनी केला. शिक्षणासंबंधी त्यांचे मत इंग्रजी धर्तीच्या शिक्षणाला अनुकूल नव्हते. शिक्षण म्हणजे माहितीचे भंडार आपल्या डोक्यात कोंबणे नव्हे. तर तो एक संस्कार आहे असे ते मानत. शिक्षणाचा उपयोग आपल्या सर्वांगिण विकासासाठी झाला पाहिजे केवळ रोजगार किंवा नोकरी मिळविणे एवढयापुरता तो संकुचित नसावा. त्यात स्पर्धा असली तरी ती जीवघेणी आणि द्वेषमूलक नसावी. त्याला धर्म, नीती, शास्त्र याबरोबरच एक चांगला व्यक्ती म्हणून निर्माण होता यावे हे गांधीजींना अभिप्रेत होते. आजच्या काळातील शिक्षणाचे झालेले बाजारीकरण आणि जीवघेणी स्पर्धा पाहिली म्हणजे गांधीविचारांची आजही आवश्यकता आहे. हे मनोमन पटते. शाळा, महाविद्यालये यामधून जे विद्यार्थी घडणार आहेत त्या विद्यार्थ्यांना स्वावलंबन आणि नैतिकता असणारं शिक्षण मिळावयास हवे असे त्यांचे मत होते. अलीकडच्या काळात कमवा आणि शिका हे धोरण विद्यापीठात राबविले जाते. त्यामुळे गांधीविचार अजूनही मृत्यू पावलेला नाही हे लक्षात येते.

शालेय जीवनापासूनच विद्यार्थ्यांना शिस्तीचे पालन करावयास शिकविले पाहिजे. आई–वडील व वडीलधाऱ्या व्यक्तींचा मान ठेवावा आणि गुरूजन आदर्श असावे असे त्यांना वाटे. स्वतः गांधीजींच्या जीवनात त्यांच्या शिक्षकांचे मोठे स्थान होते. शिक्षकाने विद्यार्थी घडविले पाहिजे. एखादा सुवर्णकार जसा सोन्याचे सुंदर दागिणे बनवतो त्याप्रमाणे शाळेतून आदर्श विद्यार्थी निपजला पाहिजे हेही त्यांचे मत होते. उच्चशिक्षणामध्ये गांधी विचारधारेला आजच्या काळात कितपत स्थान आहे? किंवा गांधीविचार उच्चशिक्षणामध्ये आवश्यक आहे काय? अशा प्रश्नांची मालिका सातत्याने उपस्थित केली जाते. या प्रश्नांचे उत्तर वाटते तेवढे सोपे नाही. विद्यार्जन करून अर्थार्जनाला लागलेली व्यक्ती वाईट मार्गाने कार्य करत असेल तर त्यापासून होणारी हानी ही केवळ त्या व्यक्तीचीच नसते. त्याच्याशी निगडीत असणारे कुटूंब, समाज, गाव आणि देश या सर्वांचीच हानी होते. त्यामुळे केवळ शिक्षण घेऊन संत्रवत कार्यकरणारी माणसे निर्माण होत असतील तर ते केव्हाही वाईटच. हे गांधींना नैतिकतेचे अधःपतन वाटते. अलीकडच्या काळात शिक्षण देणाऱ्या फार मोठमोठया संस्था, माहविद्यालये आणि विद्यापीठे निर्माण झाली आहेत. परंतु त्यातून यंत्रवन आणि ठोकळेवजा विद्यार्थी शिक्षण घेऊन बाहेर पडत आहेत. परंतु त्यांना देशातील गोरगरीब, दलित–पिडीत वर्गासाठी काही करावे असे वाटत नाही. असे शिक्षण घेऊन निघणाऱ्या विद्यार्थ्यांविषयी गांधीजींना रूचले नसते. स्वतः गांधीजी आदर्श नितीमूल्यांचा स्वीकार करून एक आदर्शवन सामाजिक प्रणालीचा स्वीकार करतात. आपल्याहून खालच्या वर्गातील लोकांसाठी सतत कार्य केले पाहिजे असे त्यांना वाटे. यासाठी उच्चशिक्षणामध्ये उदात्त नितीमूल्यांचाही अंतर्भाव असावा व ते अभ्यासक्रमातून शिकविले जावे असे त्यांचे मत होते. त्यामुळेच त्यांनी गुरूदेव रवींद्रनाथ टागोरांच्या शांतीनिकेतनचा पुरस्कार केला होता. याचा अर्थ असा नव्हे की गांधी हे धर्मपरायण किंवा कर्मकांडाचे पुरस्कर्ते होते. स्वतः गांधींनी कधी कर्मकांडांना आपल्या जीवनात स्थान दिले नाही. ईश्वरपूजेसाठी मूर्तीची गरज त्यांना भासली नाही.

''जे का रंजले गांजले । त्यासी म्हणे जो आपुले ।
तेची साधू ओळखावा । देव तेथेची जाणावा ।।

हा तुकारामांचा विचार त्यांच्या अंगभूत स्वभावाचा भाग होता. गांधींनी वर्णाश्रम–धर्माचा कधीही हिरिरीने पुरस्कार केला नाही. वर्णाश्रमधर्मातील जातीव्यवस्था नष्ट केली पाहिजे हे त्यांचे मत होते. म्हणून ते स्वतःला

हरिजन म्हणवून घेत. म्हणून आजही भारतातील काही प्रतिगामी शक्तींना जेवढे फुले–शाहू–आंबेडकर विरोधक वाटतात तेवढेच गांधीही अस्तनितीला निखारे असतात. गांधींच्या विचारधारेमध्ये भारतीय परंपरेतील (जैन, बौध्द, वैदिक विचारधारा) आणि पाश्चिमात्य विचारधारेतीलही चांगल्या बाबींचा स्वीकार होता. त्यामुळे कित्येकांना गांधीजी एकाचवेळेस पराणमतवादी व पुरोगामीही वाटण्याचा संभव असतो.

उच्चशिक्षणातून आपल्या कुटूंबाचा, समाजाचा, गावाचा विकास व्हावा. हेच त्यांना अभिप्रेत होते. तत्कालीन काळातील पाश्चिमात्यांच्या यंत्रसंस्कृतीमुळे आपल्या येथील बहूसंख्य लोकसंखेला रोजगारी सारख्या समस्येला तोंड द्यावे लागेल असे त्यांना वाटत असल्यामुळे त्यांनी यंत्रमागाचा विरोध करून हातमागाचा आणि चरख्याचा पुरस्कार केला. सर्व हातांना काम, बेरोजगार कुणीही राहू नये असे त्यांचे धोरण असल्यामुळे अलीकडच्या काळातील लोकांना त्यांचे विचार प्रासंगिक आहेत असे वाटते आणि गांधींच्या विचारांचा अन्वयार्थ लक्षात न आल्यामुळे ते गांधीविरोधक बनतात. ग्रामीण व्यवस्था ही आजही भारतीयांचा कणा आहे. त्याकडे लक्ष न दिल्यामुळे आज बळीराजा आत्महत्या करीत आहे. बेगडी गोरक्षकांचे धोरण कोणत्याच गुराढोरांना वाचवू शकत नाही. तो राजकारणाचा विषय न बनता आपल्या जीवनाचा एकमेकांविषयीच्या सहानुभूती व प्रेमाचा विषय बनला पाहिजे. धर्मद्वेषाचे राजकारण आणि शिक्षण त्या देशाला अधःपतीत करून सोडते. बंदुकीच्या धाकावर इंग्रजांनीही राज्य केले होते. ती हुकूमशाही मोडून काढण्यासाठीच गांधींनी अहिंसा हे मूलतत्व अंगिकारले. त्यांची अहिंसा ही भित्री, भ्याड, पळपुटी नव्हती. या अहंसेच्या शस्त्रानी या साबरमतीच्या संताने अभूतपूर्व क्रांती घडवून आणली. हा अहिंसेचा विचार विद्यार्थ्यांनी अंगिकारला पाहिजे असे त्यांचे मत होते.

अहिंसा आणि सत्याग्रह हे शस्त्र त्यांनी इंग्रजांना नामोहरम करण्यासाठी वापरले आजही अनेकांना याचा मोह होतो. अण्णा हजारे, अरविंद केजरीवाल किंवा इरोम शर्मिला यांच्याकडे पाहून त्याची प्रचिती येते. उपोषण हे त्यांनी शस्त्रासारखे वापरले. परंतू व्रतवैकल्य म्हणून किंवा कर्मकांड म्हणून उपवास कधी केला नाही. गांधींच्या या विचारांचा स्वीकार शालेय जीवनापासून ते उच्चशिक्षणापर्यंत विद्यार्थ्यांनी आणि शैक्षणिक धोरणात अंगिकारला पाहिजे. तृष्णा किंवा आसक्ती हा मानवी स्वभावातील मोठा दोष आहे. ज्याला जेवढे जास्त मिळत जाते त्यास अधिकाधिक मिळावे असेच वाटत असते. आपल्या गरजा अधिक नसाव्यात. आपल्या गरजांना मर्यादित स्वरूपात ठेवले पाहिजे. हे त्यांचे मत होते. आपण जेवढया जास्त गरजा वाढवू तेवढा क्लेश वाएत जाणार आणि मानवी जीवन सुखकारक होण्यापेक्षा दु:खदायक होईल, हे त्यांना कळले होते. म्हणून वैज्ञानिक उन्नतीच्या ते विरोधी होते असे नव्हे. विज्ञानाने मानवी जीवन सुखकारक केले याचा त्यांना गर्व होता. परंतू त्याचा गैरवापर मानवाने करू नये, हे सूत्र त्यांनी अंगिकारले असल्यामुळे याचाही अंतर्भाव उच्चशिक्षणाच्या माध्यमातून केला गेला पाहिजे, हेच त्यांचे खरेखुरे विचार आहेत. गांधींच्या व्यक्तिमत्वाला आणि विचाराला कोणत्या एका वादात बसवता येत नाही. ते म्हणतात, "I have no set theary to go by. I have not worked out the science of stayagraha in it's entirety. You can jouin me in my quest of it appeals to you and you feel the call." (माझ्यापाशी आधारासाठी कोणतीही तयार अशी सैध्दांतिक तत्वप्रणाली नाही. सत्याग्रह शास्त्राची सर्वदृष्टीनी परिपूर्ण अशी मांडणी मी केलेली नाही. तुम्हाला त्याची ओढ वाटली तर माझ्या शोधात तुम्ही सहभागी होऊ शकता) असे त्यांनी हरिजनमध्ये 27.05.1939 लिहिले आहे.

थोडक्यात गांधींचा शैक्षणिक विचार हा पारंपरिक असूनही वारंपरिक वाटत नाही. आधुनिक असूनही आधूनिक वाटत नाही. तर वर्तमानामध्ये जगतांना परंपरा आणि आधुनिकता यांचा सुवर्णमेळ घडवून सुवर्णमध्य साधण्याचा प्रयत्न त्यांनी केला आहे हे निदर्शनास येते.

निष्कर्ष

1. गांधीवाद अशी कोणतीही विचारसरणी गांधीजींनी मांडली असे ते स्वंतः म्हणत नसत. परंतु मार्क्सवाद, फुलेवाद, आंबेडकरवाद, समाजवाद या वादाबरोबरच गांधीवाद ही सुध्दा एक महत्वाची विचारसरणी आहे.

2. भारतीय तत्वज्ञान, वेद, उपनिषदे, पुराणे यांचा प्रभाव तसेच जैन, बौध्द, ख्रिस्त या तत्वज्ञांचा प्रभाव मा. गांधींच्या व्यक्तिमत्वाचा महत्वाचा भाग होता. म्हणून एकाच वेळेस पारंपरिक आणि एकाच वेळेस आधुनिक विचारधारा यांचे संमिश्रण करून स्वतःला सतत बदलत ठेवणे आणि सत्याचे प्रयोग करणे हे गांधीवादाचे मर्म आहे.
3. गांधीजींच्या जीवनामध्ये सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, सत्याग्रह, स्वावलंबन आणि प्रामाणिकता या मूल्यांना फार महत्व होते. तसेच या मूल्यांचा अंतर्भाव भारतीय शिक्षणप्रणालीत करण्यात यावा असे त्यांचे मत होते.
4. त्यांची अहिंसा ही भ्याड, घाबरट, पळपुटी नव्हती तर ती शूरांची अहिंसा होती. सत्याग्रह या शस्त्राने त्यांनी इंग्रजांना नामोहरन केले आणि आहिंसेच्या जपाने सर्व भारतीयांना एकत्र केले.
5. स्वतः सन्यस्त वृत्तीने जगल्यामुळे सत्यनिष्ठा, प्रामाणिकता, धर्मपरायणता, नैतिक मूल्ये ही शिक्षणाच्या केंद्रस्थानी असली पाहिजे. असे त्यांचे मत होते.
6. गांधीजींचे लिखाण व त्यांचे वर्तन पुष्कळदा प्रासंगिक असल्याने (बिहारमध्ये झालेल्या भूकंपाचे कारण त्यांनी वर्णव्यवस्थेत शोधले) गांधीवाद हा भाबडा वाद आहे आणि आजच्या काळात तो टिकू शकत नाही असे मत अनेक विद्वानांनी आणि विरोधकांनी मांडले आहे. त्यात काही प्रमाणात तथ्यांश आहे. आजच्या काळाचा विचार केल्यास त्यांच्या ब्रह्मचर्य व यंत्राला असणारा विरोध गैरलागू ठरतो. त्याकाळात प्रासंगिक असणारा हा विचार आजच्या काळात गैरलागू असल्याचे दिसते.
7. गांधीवादातील सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, सत्याग्रह, स्वावलंबन व प्रामाणिकता या मूल्यांचा समावेश शालेय जीवनापासून उच्चशिक्षणात केल्यास विद्यार्थ्यांचे आयुष्य उजळून निघेलच यावर कोणीही आक्षेप घेऊ शकत नाही.
8. वर्तमान आणि भविष्यकाळात गांधीविचार हा भूतकाळ ठरणार नाही एवढे नक्की. त्याची उपयुक्तता शिक्षणाबरोबरच इतरही क्षेत्रात तितकीच अनिवार्य आहे हे लक्षात येते.

संदर्भग्रंथ सूची

1. गांधी मो.क., सत्याचे प्रयोग अथवा आत्मकथा, 33 वी आ. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 2012
2. पंडीत नलिनी, गांधी, ति.आ. ग्रंथाली प्रकाशन पुणे 2006
3. प्रभू आर.के. ॲन्ड अदर्स, द माईंड ऑफ महात्मा गांधी, 9 वी आ. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद 2010
4. गांधी मो.क., माझी जीवन कथा, 8 वी आ. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद 2012
5. देसाई महादेव, गांधीजीके साथ पच्चीस वर्ष, सर्वसेवा प्रकाशन वाराणसी 1962
6. बोस निर्मलकुमार, स्टडीज इन गांधीझम, 5 वी आ. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद 1972
7. गांधी एम.के., द इसेंस ऑु हिंदूझम, 3 वी आ. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद 2007
8. आंबेडकर भि.रा., रानडे, गांधी आणि जीना, अनुवाद मा.क. गांजरे, अशोक प्रकाशन, नागपूर प्रकाशन वर्ष नमूद नाही.
9. शशीभूषण, मार्क्स और गांधी, समाजवादी शिक्षा प्रकाशन, दिल्ली, 1973
10. कुरूंदकर नरहर, जागर, देशमुख आणि कंपनी, पुणे, 1969
11. सरदार गं.बा., गांधी आणि आंबेडकर, दु.आ. सुगावा प्रकाशन, पुणे, 2004

गांधीजींचे ग्राम स्वराज्य विषयाचे विचार

प्रा. राजेश एस. डोंगरे
गुरुकुल कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,नांदा
ता. कोरपना,जि. चंद्रपुर

गोषवारा :–

गांधीजींनी आदर्श समाज निर्मीतीसाठी समाज हा राज्यविहीन असावा म्हणजे त्यात विभिन्न वर्गाचे अस्तीत्व राहणार नाही म्हणजेच राज्यविहीन समाजातील सामाजिक जीवन हे स्व–नियंत्रीत राहील अशी संकल्पना मांडुन याच संकल्पनेला मुर्त रुप देण्याचा प्रयत्न केला.हीच पुढे गांधीजींची ग्राम स्वराज्याची संकल्पना म्हणुन प्रचलीत झाली. महात्मा गांधीनी देशाच्या प्रगती व समृध्दीसाठी ग्राम म्हणजे खेड्यांना विशेष महत्वपुर्ण माणुन आपल्या ग्राम स्वराज्याच्या संकल्पनेत सशक्त खेडयाचे चित्र रेखाटले व त्याच्या परीपुर्ती करीता खेडयाकडे चला व प्रत्येक गाव स्वावलंबी व मजबुत करा असा संदेश त्यांनी दिला. या संदेशाचा अर्थ असा की प्रत्येक गाव हे स्वावलंबी राहुन, सहकार्य हाच त्याचा खरा आधार राहील. म्हणजे गावातील लोक शांतीपुर्ण व सुखैनैव जीवन व्यतीत करतील.

बिजशब्द *: ग्राम स्वतंत्रता,स्वराज,स्वावलंबन,शोषणविहीत*

प्रस्तावना :

स्वराज्य या शब्दाचा अर्थ स्वयंशासन आणि आत्मसंयम असा होतो, म्हणुनच स्वराज्य या शब्दाला शास्त्रीयदृष्टया फार महत्व असले तरी त्याला एक वैदिक अनुष्टान देखील आहे. यामुळेच स्वराज्य हा शब्द एक पावित्र्य राखुण आहे. ग्राम स्वराज्य म्हणजे प्रत्येक खेडी ही आत्म निर्भर आणि आत्म संयमीत असावी. म्हणजे तेथिल शाशन पध्दती आपली म्हणजे प्रत्येक व्यक्तीला अनुरुप अशीच राहील. त्या खेडयातील सर्वच जनतेचे ते राज्य असुन ते न्यायीक राज्य राहील याचा आशय असा की राज्य जसे राजाचे असते तसेच ते प्रत्येकाचेच असते.स्वयं या शब्दातच याचा अर्थ समाविष्ठ आहे .स्वताचे राज्य म्हणजे प्रत्येकजन अभिमानाने माझे राज्य असे म्हणू शकतो. तेच स्वराज्य, मग येथे उच्च–निच्च, गरीब–श्रीमंत, जाती–धर्म विरहीत असे ते राज्य राहील यात सत्य आणि अहींसा हाच परमोधर्म मानला जातो. महात्मा गांधींचे हे स्वप्न होते की, गरीबांनाही परिपुर्ण जीवन जगण्याचा अधिकार आहे. जीवन जगत असतांना ज्या अत्यावश्यक गरजा, ज्या राज्याच्या असतात त्याच रंकाच्या सुध्दा असतात. या गरजा पुर्ण होणे अनिवार्य आहे. एकुणच काय तर जिवनावश्यक सोई सुविधा या प्रत्येकालाच मिळाल्या पाहिजे अर्थातच स्वराज्याप्रती प्रत्येक व्यक्ती जागरुक असावा. आपल्या स्वयंहिताचे ज्ञान त्याला असावे, आणि अन्याया विरुध्द लढण्याची योग्यता त्याच्यात असावी तोच खरा स्वराज्याचा नागरीक होय.

ग्राम स्वायंत्तता :–

महात्मा गांधी राजकीय शक्तीच्या विकेंद्रीकरणाचे समर्थक होते. गावातील पंचायत तेथील प्रशासन पाहिल, प्रत्येक व्यक्ती हा स्वंनियंत्रणात राहुन दुसऱ्याच्या मार्गात आपल्या सर्व गरजांची पुर्तता करण्याची साधने ग्राम पंचायत जवळ उपलब्ध राहील आणि म्हणुनच गांधीजींच्या कल्पनेतील आदर्श समाज हा वर्तुळाकार असुन व्यक्ती त्याचा केंद्रबिंदु होता. प्रत्येक खेड्यातील कायदेविषयक, न्यायविषयक सत्ता ग्राम पंचायतीकडे राहील. राजकिय शक्तीचे झालेले केंद्रीकरण गांधींना मान्य नव्हते, राजकीय शक्ती ही साध्य नसुन साधन आहे, असे त्यांचे मत होते. म्हणुनच खेडी स्वायत्त बनवायची असल्यास अधिकाधिक शक्ती ग्राम पंचायती जवळ असावी, असे त्यांचे प्रांजळ मत होते.

गावाचा कारभार हा ज्या पंचायतीकडुन चालविला जाईल या पंचाची निवड किमान पात्रता असलेल्या गावाच्या प्रौढ स्त्रि-पुरूषाकडुन केली जाईल. त्यानंतर त्यांना आवश्यक ते सर्व अधिकार आणि कायदेशिर सत्ता दिली जाईल. ही पंचायत तिच्या ठरलेल्या मुदतीत कायदेकानुन करणारी आणि न्याय देणारी विशिष्ठ कार्याची अंमलबजावणी करणारी सत्ता म्हणुन ती कार्यरत राहील. प्रत्येक खेड्याला अशा स्वरूपाचे प्रजासत्ताक राज्य बनता येईल. त्यात बाहेरच्यांची ढवळाढवळ राहणार नाही व्यक्ती हिच या राजसत्तेची शिल्पकार असुन अहिंसेच्या कायद्याची सक्ती असेल.गरीबातील गरीब मानसाला हे राज्य आपले असुन त्यांची जडणघडण करण्यामध्ये आपला देखील वाटा आहे याची जाणिव होईल. अशी खेडी निश्चितच स्वायत्त आणि सशक्त बनतील अशी ग्राम स्वायंत्तता गांधीना अभिप्रेत होती.

मानवतावादी समाज निर्मीती :-

राजकारणाची दिशा हि मध्यमवर्गाच्या कक्षेतच घुटमळत होती. शेतकरी,कामगार,दलित, महिला असे सर्व गट परिघाच्या बाहेरच राहीले होते. या सर्वांचे सहकार्य घेऊन समाज निर्मीतीचे कार्य महात्मा गांधींनी केले. या कार्याची सुरवात त्यांनी दक्षिण आफ्रिकेतुनच केली आणि कष्णवर्णीयांना जाणीव करून दिली, एकुणच काय तर त्यांनी आपल्या विचारातुन संपुर्ण जगाला व भविष्यासाठी सुध्दा अहिंसक मार्गाची दिशा दाखविली. आजही त्यांच्या विचारांची गरज संपुर्ण जगाला आहे. कारण कमालीची वाढलेली विषमता शहराकडे होणारे स्थलांतरण त्यामुळे खेड ओस पडणे. ग्रामीण बेराजगारी त्यातुन वाढलेली हिंसक प्रवृत्ती ठासळलेली नैतीक मुल्य,श्रमाला आलेली अप्रतिष्ठा भौतिक सुरवाच्या अवास्तव कल्पना या सर्वावर तोडगा म्हणजेच गांधीजींचे मानवतावादी सामाजिक विचार होय. या विचारातुन ग्राम स्वराज्याच्या निर्मीतीचे स्वप्न त्यांनी पाहिले होते.

निष्कर्ष :-

ग्राम स्वराज्य ही ग्राम विकासाची संकल्पना असुन व्यक्ती स्वातंत्र्यचा देखील विचार यात समावलेला आहे. म्हणुनच राजकीय शक्तीच्या विकेंद्रीकरणा बरोबरच यात आर्थिक विकेंद्रीकरणावरही विशेष भर दिलेला आहे. त्यातुन विषमतेला फाटा देण्याचा प्रयत्न गांधी विचारात आहे. गांधी विचाराच्या अनेक पैलुमध्ये काहीशे साम्य असले तरी त्या पैलुला एक ठोस अशी दिशा आहे. त्यामुळेच स्वराज्याच्या संकल्पनेत लघु आणि कुटीर उद्योगांना महत्वाचे स्थान देण्यात आले आहे. त्यामुळेच ग्रामीण तरूणांना नौकरीपेशा निमीत्य स्थलांतरणाची गरज भासणार नाही. हीच गांधी विचारांची दिशा होती. तसेच खेड्यातील जमिनदार व भांडवलदार यांनी शेतकरी व श्रमिकाचे विश्वस्त म्हणुन काम पाहिल्यास संपुर्ण समाजाचेच हित साधल्या जाईल आणि स्वराज्यातुन सुराज्याची संकल्पना आकाराला येईल.

1) श्री अरविंद ताटके, महात्मा गांधी पर्व सहा,सरिता प्रकाशन पुणे
2) ग्राम स्वराज्य, नवजिवन प्रकाशन मंदीर,अहमदाबाद, 1963 पाचवी आवृत्ती, अहमदाबाद.
3) अरविंद श्रुंगारपरे प्रा. निवडक भारतीय व पाश्चिमात्य विचारवंत
4) सिंह रामजी गांधी दृष्टी, अर्जुन पब्लीशींग हाऊस, नई दिल्ली ,प्रथम संस्करण 2010
5) गांधी विचार दर्शन, ग्राम स्वराज्य, भाऊ धर्माधिकारी महाराष्ट्र गांधी स्मारक, निधी,पुणे

नर्मदा बचाओ आंदोलन : गांधीजी के अहिंसात्मक प्रतिरूप में

एकता
पीएच.डी. स्कॉलर
राजनीति विज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

नर्मदा बचाओ आंदोलन 1987 में शुरू हुआ। यह एक जन आंदोलन था जो आज की तारीख तक भी चल रहा है। इस आंदोलन को शुरू हुये लगभग 30 वर्ष से भी ज्यादा का समय हो गया है। नर्मदा नदी पर बन रहे बांध के विरोध में शुरू हुआ यह आंदोलन शायद भारत के सबसे लंबे समय से चल रहे जन आंदोलनों में से एक है। इस लेख की चर्चा का विषय यह है कि नर्मदा बचाओं आंदोलन की प्रकृति क्या है? आंदोलनकर्ताओं ने अपनी मांगों को किस प्रकार से उठाया? क्या यह आंदोलन गांधीजी के अहिंसा के सिद्धांत पर आगे बढ़ रहा है?

प्रस्तुत लेख में नर्मदा बचाओं आंदोलन की चर्चा गांधीजी की अहिंसा के संदर्भ में की जायेगी। लेकिन उससे पहले यह जानना आवश्यक है कि गांधीजी के लिए अहिंसा के क्या मायने थे? उनकी दृष्टि में अहिंसा का क्या अर्थ था? और उन्होंने अहिंसा का प्रयोग किस प्रकार किया?

गांधीजी ने प्राथमिक रूप से बौद्ध धर्म और जैन धर्म से अहिंसा के पाठ को सीखा, बाद में उन पर पश्चिमी चिंतकों का भी प्रभाव पड़ा। इस तरह गांधीजी ने अहिंसा के विचार का पूर्ण विकास करते हुए अहिंसा को अपने जीवन का एक अहम् हिस्सा बना लिया और भारत को स्वतंत्र कराने में इसको एक महत्त्वपूर्ण औजार के रूप में प्रयोग किया। गांधीजी ने कहा है कि

मेरी समझ में अहिंसा सभी साधारण और असाधारण बुराईयों के लिए एक रामबाण है।[1]

गांधीजी के दृष्टिकोण में अहिंसा का अभिप्राय बुरा काम करने वाले के समक्ष घुटने टेक देना नहीं है अपितु इसका अभिप्राय तो अत्याचारी के खिलाफ अपनी समुची आत्मा का बल लगा देना है। अपने अस्तित्व के अंतर्गत काम करते हुए किसी भी अकेले व्यक्ति के लिए संभव है कि वह एक अन्यायपूर्ण साम्राज्य की समूची शक्ति और बल को चुनौती दे सके। गांधीजी के लिए अहिंसा स्वराज से भी पहले थी। गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय भेदभाव को समाप्त करने के लिए अहिंसा का सफलतम् प्रयोग किया था और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनों में भी अहिंसा गांधीजी की अद्वितीय देन रही। गांधीजी ने कहा है कि अहिंसा के अध्ययन एवं मेरे अनुभव ने मुझे यह प्रमाणित कर दिखाया है कि यह संसार की सबसे बड़ी शक्ति है। यह सत्य के अन्वेषण की निस्संदेह अचूक विधि है तथा सबसे तेज़ भी है क्योंकि इसके अलावा और कोई है भी नहीं। यह बिल्कुल चुपचाप, लगभग अगोचर रूप से कार्यरत रहती है पर यह वाकई सक्रिय रहती है।[2]

गांधीजी का व्यक्तित्व अन्य सभी राजनीतिज्ञों से भिन्न था। उनके व्यक्तित्व में महात्मा और राजनीतिज्ञ दोनों की छवि थी। अपने दुश्मन से भी प्रेम करो ऐसी दार्शनिक सोच सिर्फ गांधीजी की ही थी। यहाँ तक कि उन्होंने अंग्रेजों को भी नुकसान पहुँचाने के विषय में कभी नहीं सोचा। इसका स्पष्ट उदाहरण असहयोग आंदोलन है जिसे उन्होंने एक हिंसक घटना के चलते वापस ले लिया था। इससे स्पष्ट हो जाता है कि गांधीजी के लिए उद्देश्य का स्थान बाद में और सत्य एवं अहिंसा का स्थान पहले था।

गांधीजी के सिद्धांतों का सामाजिक न्याय की प्राप्ति हेतु न केवल भारत बल्कि विदेशों में भी प्रयोग किया जाता रहा है। 1986 में फिलीपिन का पीपुल्स पावर आंदोलन इसका मुख्य उदाहरण है। भारत में तो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तक के सामाजिक आंदोलन पर गांधीजी का दूरगामी प्रभाव रहा है जिनमें से एक है, नर्मदा बचाओ आंदोलन। इस आंदोलन में गांधीजी की अहिंसा की झलक स्पष्ट देखी जा सकती है।

आठवें दशक के आरंभ में भारत के मध्य भाग में स्थित नर्मदा घाटी में विकास परियोजना के अंतर्गत गुजरात, मध्य प्रदेश और महराष्ट्र से गुजरने वाली नर्मदा और उसकी उपनदियों पर 30 बड़े, 135 मध्यवर्गीय और 3000 छोटे बांध बनाने का प्रस्ताव रखा गया। नर्मदा घाटी परियोजना की दो विशाल परियोजनायें हैं– गुजरात में 'सरदार सरोवर परियोजना' और मध्य प्रदेश में 'नर्मदा सागर परियोजना'। सरदार सरोवर बांध गुजरात में एक बहुत बड़ा बांध है और इस आंदोलन का केन्द्रीय मुद्दा भी यही बांध है। वास्तविकता में सरदार सरोवर बांध स्थल पर निर्माण कार्य 1961 में ही छिट–पुट रूप से जारी था, परन्तु 1988 में यह उत्साह के साथ शुरू हो गया।

इस परियोजना के परिणाम बहरहाल बहुत क्रोधपूर्ण और भयावह है। इस बांध से लगभग 37000 हेक्टेयर वन भूमि, 2 लाख हेक्टेयर कृषि भूमि नष्ट हो जायेगी। यह परियोजना 248 गांवों–19 गुजरात के, 36 महाराष्ट्र के और 193 मध्य प्रदेश के, में रहने वाले लगभग एक लाख लोगों को विस्थापित कर देगी जिनमें अधिकतर संख्या आदिवासी लोगों की है। यह परियोजना लाखों जनजातीय लोगों को उनके घरों, जमीन, पारंपरिक आवास, मंदिरों और आजीविका से वंचित कर उन्हें बेघर और बेरोजगार बना देगी।

1977 में ही मध्य प्रदेश के निमड़ इलाके में लोगों ने सरदार सरोवर की वजह से विस्थापन की संभावना का विरोध शुरू कर दिया था। प्रभावित गांवों के लाखों लोगों के पुनर्वास का मुद्दा स्थानीय कार्यकर्त्ताओं द्वारा भी उठाया गया। पुनर्स्थापन एवं पुनर्वास हेतु सवाल उठाये जाने लगे।

परिणामतः हर राज्य से एक जन संगठन सामने आया। शीघ्र ही ये समूह एक साथ खड़े हुए। इन गतिविधियों ने 1988–89 के दौरान एक आंदोलन की शक्ल ले ली। भारत में किसी भी अन्य परियोजना ने पर्यावरण विकास की समस्याओं को इतने ऊँचे स्तर पर रखकर बहस का विषय नहीं बनाया जितना कि इस परियोजना में निचले स्तर से सक्रियता दिखाई दी।

आंदोलनकारियों का नेतृत्व महत्त्वपूर्ण सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर और अन्य कई नेताओं ने किया। फिल्म अभिनेता आमिर खान ने भी इस आंदोलन को समर्थन दिया। 1992 में मेधा पाटकर और बाबा आम्टे को उनकी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका के लिए 'राइट लाइवलीहुड अवार्ड' भी दिया गया।

आंदोलन के साथ अनेक युवा, महिलाएं, इंजीनियर, पर्यावरण विशेषज्ञ, गैर–सरकारी संगठन, मछुआरे, आदिवासी, स्थानीय लोग भी जुड़े हैं। इस आंदोलन की मुख्य मांगे थी कि जमीन के बदले जमीन दी जाए, 2,50,000 रूपये की क्षतिपूर्ति दी जाए, प्रभावित लोगों का सही प्रकार से पुनर्वास व पुर्नस्थापना की जाए।

मेधा पाटकर जो इस आंदोलन की मुख्य कार्यकर्ता हैं, ने पाया कि मध्य प्रदेश या महाराष्ट्र में 'जमीन के बदले जमीन' देने के लिए जमीन ही नहीं है, तब वे बांध के बनने का ही विरोध करने लगे। 1988 में नर्मदा बचाओं आंदोलन ने औपचारिक रूप से मांग की कि नर्मदा घाटी विकास परियोजना विषयक सभी काम रोक दिये जायें। सिंतबर 1989 में विनाशकारी विकास से लड़ने की प्रतिज्ञा करने के लिए देश भर से आये 50,000 से भी अधिक लोग घाटी में एकत्र हुये।

नर्मदा बचाओं आंदोलन में विरोध प्रदर्शन के लिए जो तरीके अपनाये गये हैं वो गांधीजी के अहिंसा के आदर्श से ही प्रेरित रहे हैं जैसे– रास्ता रोको, आम सभा, अनशन, जल सत्याग्रह, राजधानियों में मोर्चे आदि। बड़वानी शहर के निकट के गांव वालों ने नाटकीय घटना पेश की, बांध में डूबने वाले इलाकों से पत्थर के चिन्हों को उखाड़कर राजधानी भोपाल तक ढ़ोकर विधानसभा के बाहर उन्हें पटका गया। ये सभी अहिंसात्मक उपाय गांधीजी के आदर्शों से प्रेरित रहे।

गांधीजी हिंसा के खिलाफ थे, क्योंकि पारेख[3] के शब्दों में 'हिंसा के दुष्परिणामों को इस अर्थ में पुनः लौटाया नहीं जा सकता कि एक बार जो जीवन समाप्त या विनष्ट कर दिया गया है उसे पुर्नजीर्वित नहीं किया जा सकता या सरलता से पहले के समान नहीं किया जा सकता और अपरिवर्तनीय कार्यों को न्यायसंगत ठहराने के लिए अमोध, अचूक ज्ञान की आवश्यकता होती है जो कि स्पष्टतया मनुष्य की पहुँच के बाहर है।'

अन्य शब्दों में, हिंसा के परिणाम पलटे नहीं जा सकते जो नुकसान हो जाता है या जो व्यक्ति मर जाता है उसे फिर से पहले जैसा नहीं किया जा सकता। ऐसी स्थिति में मनुष्य जो गलतियों का पुतला है, उसे हिंसा नहीं करनी चाहिए। गांधीजी के इसी आदर्श को इस संदर्भ में देखा जा सकता है कि आंदोलनकर्ताओं ने 25 दिसम्बर 1990 में अहिंसक, 'जन विकास संघर्ष यात्रा' सरदार सरोवर परियोजना के समझदार पुनरीक्षण के आयोजन हेतु सरकार को विवश करने के क्रम में संगठित की। जिसमें 6,000 से अधिक प्रदर्शनकारियों ने राजघाट से 'कोई नहीं हटेगा बांध नहीं बनेगा' के नारे से अंकित 100 फुटी ध्वजा के साथ गुजरात को प्रयाण किया लेकिन उन्हें आगे बढ़ने की अनुमति नहीं दी गई। गुजरात पुलिस ने उन्हें सीमा पर रोक लिया।[4]

1993 में भी मेधा पाटकर द्वारा अपनी मांगों के लिए भूख हड़ताल की गई। वह इस संघर्ष में जी जान से जुटी रही लेकिन शायद आंदोलन विरोधियों को यह बात अच्छी नहीं लगी और 1994 में नर्मदा बचाओं आंदोलन के कार्यालय पर हमला किया गया। मेधा पाटकर सहित अन्य महिला सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ गाली–गलौच व बदसलूकी की गई किन्तु कार्यकर्ताओं ने अपने अहिंसात्मक आदर्श को कायम रखते हुए कोई हिंसात्मक कार्यवाही नहीं की।

अप्रैल 2006 में नर्मदा बचाओ आंदोलन में एक बार फिर से उग्रता तब आई जब बांध की ऊँचाई 110 मीटर से बढ़ाकर 122 मीटर तक ले जाने का निर्णय किया गया। मेधा पाटकर विस्थापित हुए लोगों के पुनर्वास की मांग को लेकर पहले से ही संघर्ष कर रही थीं, वह अनशन पर बैठ गई। इतना कुछ होने के बावजूद यहाँ तक कि अपने पर हिंसात्मक कार्यवाही होने पर भी इन आंदोलनकारियों ने कभी बंदूक नहीं उठाई, न कोई कानून ही तोड़ा। यह आंदोलन गांधीवादी अहिंसा पर ही आगे बढ़ा है।

17 अप्रैल, 2009 को नर्मदा बचाओं आंदोलन की याचिका पर उच्चतम न्यायालय में सुनवाई थी। न्यायालय ने संबंधित राज्य सरकारों को चुनौती दी कि विस्थापितों का यदि उचित पुनर्वास नहीं किया गया तो बांध का और आगे का निर्माण रोक दिया जायेगा।

नर्मदा नदी पर बनने वाले सरदार सरोवर बांध को लेकर जितना विवाद हुआ उतना शायद ही दुनिया के किसी भी बांध को लेकर हुआ होगा। इसके बावजूद जून, 2014 में एक बार फिर बांध की ऊँचाई बढ़ाने का निर्णय हुआ है। 'नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण' ने सरदार सरोवर बांध की ऊँचाई 121. 92 मीटर से बढ़ाकर 138.68 मीटर करने की मंजूरी दे दी।

नर्मदा पर बनने वाले बांध ने लोगों का दो वर्गों में विभाजन कर दिया है, एक इस निर्माण का विरोध करता है, जबकि दूसरा, इसके निर्माण का पक्षधर है। योजना को बढ़ावा देने वालों के तर्क[5] हैं कि

इससे डेढ़ लाख हार्स पावर बिजली का उत्पादन होगा, वार्षिक 525.000 टन कोयले की बचत होगी, बिजली पैदा करने के बाद उस पानी का कृषि के लिए उपयोग किया जा सकता है। इस बिजली के चलते 3,00,000 मजदूरों को नौकरी मिलेगी। अगर इसे मीलों में इस्तेमाल किया जाए तो प्रतिदिन 51 लाख कपड़ा तैयार किया जा सकेगा।

इस परियोजना के पूरा हो जाने से सबसे ज्यादा लाभ गुजरात को मिलेगा। परियोजना से शेष तीन राज्यों को भी सिंचाई, पेयजल और बिजली उत्पादन की सुविधाएं हासिल हो सकेंगी।

दूसरी तरफ वे लोग हैं जो इस विकास को उनके मानव अधिकारों, जीवन तथा आवास के अधिकार का हनन समझते हैं। ऐसा इसलिए कि यह परियोजना अपनी संपूर्णता प्राप्त करने तक लगभग दस लाख लोगों को विस्थापित कर देगी।

'नर्मदा बचाओ आंदोलन' के कार्यकर्ताओं का गुजरात जैसे राज्यों में तीव्र विरोध हुआ है। आलोचकों का मत है कि आंदोलन का अड़ियल रवैया विकास की प्रक्रिया, पानी की उपलब्धता और आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न कर रहा है।

नर्मदा बचाओ आंदोलन गांधीवादी विचारधारा पर आगे बढ़ा और पूरी तरह अहिंसक रहा है, पर इसमें भाग लेने वालों को लगातार हिंसा का सामना करना पड़ा है।

इस परियोजना के अनेक मुद्दे अनसुलझे ही हैं लेकिन यहां यह बात महत्त्वपूर्ण है कि यह आंदोलन एक उल्लेखनीय सीमा तक सफल रहा है। आंदोलन ने इस ओर ध्यान दिलाया है कि इन बड़ी–बड़ी परियोजनाओं का लोगों के पुनर्वास आजीविका, संस्कृति तथा पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ा है। इस आंदोलन की कुछ महत्त्पूर्ण उपलब्धियां इस प्रकार हैं–

(1) 1993 में सरदार सरोवर से विश्व बैंक का प्रस्थान, (2) महेश्वर बांध से विदेशी निवेशकों की वापसी, (3) सरकार और न्यायपालिका दोनों ने यह माना है कि लोगों को पुनर्वास मिलना चाहिए। सरकार द्वारा 2003 में स्वीकृत राष्ट्रीय पुनर्वास नीति को इस आंदोलन की उपलब्धि के रूप में देखा जा सकता है।

'नर्मदा बचाओ आंदोलन' की अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह भी है कि इसने लोगों के सूचना के अधिकार पर बल दिया जो कि अधिकारियों को जन दबाव के कारण मानना पड़ा। यह आंदोलन गांधीजी के आंदोलन की तरह ही विभिन्न पेशों और काम धंधों में लगे लाखों लोगों को एकजुट करने में सफल रहा। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण गुटों ने भी इसका समर्थन किया है।

'नर्मदा बचाओ आंदोलन' ने आर्थिक विकास के मॉडल पर सवालिया निशान लगाया है। आंदोलन ने इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर जोर दिया कि ऐसी परियोजनाओं की निर्णय प्रक्रिया में स्थानीय समुदायों की भागीदारी होनी चाहिए एवम् जल, जंगल, जमीन जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर उनका प्रभावी नियंत्रण होना चाहिए। आंदोलन ने यह सवाल भी उठाया कि लोकतंत्र में कुछ लोगों के लाभ के लिए अन्य लोगों को नुकसान क्यों उठाना चाहिए?

गांधीजी ने इस खतरे को सालों पहले ही पहचान लिया था और इसीलिए उन्होंने अपनी पुस्तक हिंद स्वराज में औद्योगिकीकरण की आलोचना की क्योंकि इससे न केवल गांव के लोगों का जीवन अस्त–व्यस्त होता है बल्कि यह पर्यावरण को भी भारी क्षति पहुंचाता है।

निष्कर्ष

यहाँ पर उल्लेखनीय है कि नर्मदा बचाओं आंदोलन पूरी तरह से शांतिपूर्ण ढंग से चलाया गया एक अहिंसक आंदोलन है। मेधा पाटकर के नेतृत्व में आंदोलनकारी गांधीजी के दिखाए गए अहिंसा के मार्ग पर आगे बढ़े।

इस परियोजना में लगातार बांध की ऊँचाई बढ़ाये जाने से लगभग ढ़ाई लाख लोग पुनर्वास के अभाव में बाढ़ और तबाही का सामना करेंगे साथ ही इससे जैव विविधता का ह्रास भी होगा और भूकंप के खतरे भी बढ़ जाएंगे। मेधा पाटकर कहती हैं कि 'बांध की वर्तमान ऊँचाई 122 मीटर है, जो एक इंच भी बढ़नी नहीं चाहिए। हम इस अन्याय के खिलाफ संघर्ष करेंगे।'[6]

न्याय की इस लड़ाई में गांधीजी के अहिंसा के पथ पर चलते हुए नर्मदा बचाओ आंदोलन द्वारा शुक्रवार 29 जुलाई 2016 को इंदौर से 'रैली फॉर द वैली' शुरू की गई।[7]

हाल ही में फरवरी 2017 को भी नर्मदा बचाओ आंदोलन यात्रा आरंभ की गई थी जो चरगवां से शुरू की गई और भीकमपुर, महगवां, भड़पुरा से मालकछार पहुँची। इस यात्रा में कांग्रेस नेता संजय यादव की उपस्थिति में बड़ी संख्या में लोगों ने नर्मदा बचाने का संकल्प किया।[8]

अतः स्पष्ट है कि आज भी इस आंदोलन के कार्यकर्ता अहिंसा के सिद्धांत पर एकजुट हो रहे हैं। वर्तमान में मध्यप्रदेश सरकार ने भी नर्मदा नदी को गंगा नदी की भांति जीवित प्राणी का दर्जा प्रदान किया है, अब यह देखना अहम् होगा कि यह फैसला बांध निर्माण, कार्य और आंदोलन को किस प्रकार प्रभावित करता है। सामाजिक आंदोलन लोकतंत्र के लिए आवश्यक है, ये लोकतंत्र के लिए संपूरक की भूमिका निभाते हैं। आंदोलनकारियों को यदि न्याय मिल सका तो सर्वत्र यह संदेश जाएगा कि शांतिपूर्ण ढंग से भी समस्याएँ सुलझाई जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रूद्ररंगशू मुखर्जी, (संपा), द पेनगुइन गांधी रीडर, दिल्लीः पेनगुइन ग्रुप, 1993, पृ. 97
2. न्यूयार्क, सं. रा. अ. द्वारा प्रकाशित 'वर्ल्ड टुमारो' के महात्मा गांधी विशेषांक (194, वॉल्यूम xxv, पृ. 323–324) में प्रस्तुत महात्मा गांधी का संदेश।
3. कुसुम लता चड्ढ़ा, *रीडिंग गांधी*, दिल्लीः कनिष्क पब्लिशर्स, 2009, पृ. 87
4. महेश रंगराजन, (संपा.), एन्वायरमेंटल इश्यूज इन इंडियाः ए रीडर, दिल्लीः पियरसन लौंगमेन, 2007, पृ. 226
5. वही, पृ. 233
6. रमेश कुमार दुबे, बड़े बांधों की आत्मघाती दीवानगी, दिल्लीः दैनिक जागरण, 2014
7. न्यूज़ 18, कॉम, जुलाई 28, 2016.
8. एम नई दुनिया, जागरण डॉट कॉम/ मध्य प्रदेश/ जबलपुर–न्यूज– 102371
9. गांधी, एम.के. 'हिन्द स्वराज' जयपुर : अरावली प्रकाशन, 2009
10. तपन. बिस्वाल, '"ह्यूमन राइट्सः जेण्डर एंड एन्वायरमेंट' दिल्लीः विवा बुक प्राइवेट लिमिटेड, 2006.
11. बीना. श्रीनिवासन, डिसेंट एंड डेमोक्रेटिक प्रैक्टिसः अटेक ऑन एन.बी.ए. ऑफिस, 1994, जेस्टॉर. ओ.आर.जी./14401126, वॉल–29, पृ. 1058–59.

GANDHIAN THOUGHT AND ITS ROLE IN DEVELOPMENT OF RURAL BANKING INSTITUTIONS IN INDIA

Dr. Dilip Kumar Karak
Associate Professor of Commerce
Rishi Bankim Chandra Evening College, Naihati, W.B.
E-mail:- dilipkumar.karak@yahoo.in
(M) +919433307384

Abstract:
This paper tries to attempt to study the role of Rural Banking Institutions in rural development approach evaluated by Gandhian Thought. Gandhian thoughts for rural development may be labeled as "idealist". The very concept and idea of Rural Banking Institutions has its roots in Gandhian Thought. Rural Banking Institutions are meant to provide funds to marginal framers, landless labourers, artisans, etc. these are the people who were very close to the heart of Mahatma Gandhi. The study concluded that the Gandhian Thought would be strong inspiration for development of rural banking institutions and for rural development.

Key words: Gandhian Thought, Rural Banking Institutions.

Introduction

Gandhiji's had a deep understanding of Indian economy particularly rural economy. Indian economy is basically a rural economy. With this understanding Gandhiji could guide Indian freedom struggle in a manner which entire world recognizes and salutes even today. His words: "True India lives in villages". Development of rural economy intends the development of weaker sections of the society constituted by small farmers, marginal farmers, agricultural labourers, rural artisans, etc. The main aim of rural development is to bring about a positive change in the life of the weaker sections in rural areas, and it requires, among other things, some supplementary services like credit extension, marketing and the like, in a co-ordinate way. Credit is the key driver of economic progress. It is the basic need for every sector of the economic and rural sector is no exception to this phenomenon. The major objective of an economy is to improve the quality of life and to raise the standard of living of the rural people. According to Census 2011, 68.84% populations are residing within the rural India itself, five out of six are dependent on agriculture.[1] Rural development is a strategy to improve the economic and social life of a specific group of people, the rural poor includes small and marginal farmers, landless and the poorest among those who seek livelihood in the rural areas. The main aim of rural development in our country is, therefore, to transform the socio-economic life of the country's rural population living below the poverty line in the rural areas. [2] Numerous studies have brought out from time to time regarding the exploitative character of the money-lenders. In the report of the Expert Committee on Consumption Credit, the money-lender also exploits the poor borrowers through advance contract for tide sale of output only through him which, in turn, he gets output at lower price than the borrower could have obtained, if he sells output directly in the market.[3]

Source of Rural Credit

Credit is needed in all the sectors such as agriculture, industry, trade and services for their day to day activities and also for growth and progress. Credit is considered as an important instrument for agriculture and rural development. It is available to the villagers from two types of broad sources, viz. the institutional and non-institutional are as follows:

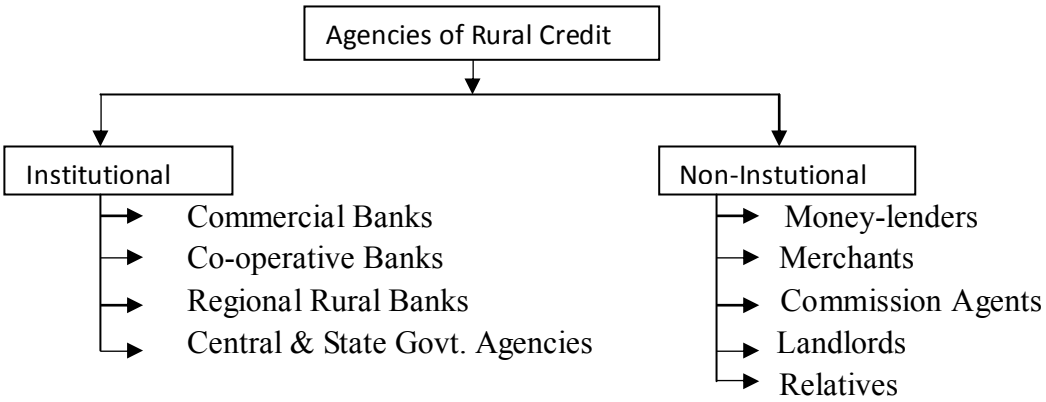

The institutional source of credit includes Co-operative Banks, Regional Rural Banks, Commercial Banks, Central and State Government Agencies while the non-institutional sources of credit consist of mainly money-lenders, merchants, commission agents, landlords, relatives etc.[4] Within the multi-agency system of rural financial institution in India, Commercial Banks, Regional Rural Banks (RRBs) and Co-operative Banks play a pivotal role for the economic development of India? Like other states of India, in West Bengal, these Rural Financial Institutions (RFIs) are performing their role in achieving the stated objective of sustained rural development of the state.

The present rural financial infrastructure in India comprises of a very wide variety of formal, semi-formal and informal financial service providers, each with distinctive cultures and characteristics. The numbers of organizations and agents are very substantial, e.g., over 30,000 rural and semi-urban branches of commercial banks, nearly 14,000 rural and semi-urban branches of Regional Rural Banks, just over 1,00,000 primary cooperatives at the village level, 1,000 NGO-MFIs, twenty MFIs registered as companies as well and over 20,00,000 Self-Help Groups (SHGs). Even more numerous are the myriad of informal agents constituting a great range of financial service providers across the country.[5] Based on the All Indian Debt Investment Survey (AIDIS) 2002, 111.5 million households had no access to formal credit. It also showed that 17 million households were indebted to money-lenders. The Arjun Sengupta Report on financing enterprises in the unorganized sector has pointed out that only 2.4 million out of 58 million units in this sector (with investment of less than Rs.25000) have got credit from Commercial Banks. The AIDIS 2002 also showed that lower the asset class or income, higher the degree of exclusion. These findings are corroborated by Invest India Incomes and Savings Survey (2007). The survey showed that 32.8% of households had borrowed from institutional sources and 67.2 % had borrowed from non-institutional sources. The survey also found that 70 per cent of earners in the annual income bracket of more than Rs.4,00,000 borrowed from institutional sources as compared with only 27.5 per cent in the case of earners in the income bracket of less than Rs.50,000. [6]

Of the underprivileged sections of the society—farmers, small venders, agriculture or industrial laborers, people engaged in unorganized sector, unemployed people, women, children, old people

and the physically challenged—only40 per cent of the people have a check in account, 20 per cent have taken life insurance products, 0.6 per cent have taken non-life insurance products, only 2 per cent have access to credit cards. Geographically, only 5.2 per cent of the country's villages have a bank branch.[7] Despite the vast network of rural branches, only 27 per cent of the total farm households are indebted to formal sources; of them, one-third also borrow from informal sources. There are parts of the country where more than 95 per cent of the farm households do not get any credit from institutional or non-institutional sources. Apart from the first that exclusion itself is large, it also varies widely across regions, social groups and assets holdings. The poorer the group, the greater is the exclusion. There is evidence that farm debt is increasing much faster than farm incomes and the larger issue of the overhanging debt stock, as distinct from credit flow+, has not even been on the agenda except of a few State governments.[8] According to NSSO data in the situation assessment survey on "Indebtedness of Farmer households" (2003), 45.9 million farmer households in the country (51.4%), out of a total of 89.3 million households do not access credit, either from institutional or non-institutional sources. Further, only 27% of total farm households are indebted to formal sources. (RBI, 2009)[9]. Here we discussed only two rural banking institutions viz. Co-operative Bank and Regional Rural Bank.

Co-operative Banks

The co-operative banks are constituted on co-operative principles of voluntary association, self help, mutual aid and equality of members. Co-operative bank may be regarded as a mutual society formed, composed of and governed by a group of persons for encouraging regular savings and granting small loans on easy terms and conditions of interest and repayment. It provides financial assistance to the people with small means to protect them from the debt trap of the moneylenders. Co-operative banking sector are basically concerned with the primary sectors, i. e. agricultural sector and rural based industries. As a means of reaching the financial needs of the last man in the society, the co-operative banks/credit society has no rival except the traditional so called moneylenders. It offers the only possible method of provided merit for reaching the people as a whole.[10] Co-operation according to Gandhiji was necessary for creation of a socialistic society and complete decentralization of power. He was of the openion that co-operation was one of the important means to empower people. The operation of co-operative bank has laid down on such five basic principles. These principles are:

1. A co-operative character of activities and attribute of mutual aid of credit granted.
2. Catering for collective organizations and their members.
3. Restriction on the number of individual votes.
4. Aiming at high rates on deposits and low rates on lending.
5. Limitation of dividends out of profits and bonus to depositors and borrowers or grants to cultural or co-operative endeavour.

The Co-operative Banks are managed through a three-tier system. At the village level, there are Primary Agricultural Credit Societies (PACSs) which include agricultural and non-agricultural credit. At the district level, there are District Central Co-operative Banks (DCCBs) to which all the PACSs in the district are affiliated. The PACSs receive their financial requirements from the DCCB. At the state level there are State Co-operative Banks (StCBs) to which all the DCCBs in the State are affiliated. StCBs are providing finance to all the DCCBs in the State. The State Co-

operative Banks, to great extent, depend upon the finance provided by the Government, NABARD and Reserve Bank of India (RBI).[11]

Structure of the Co-operative Credit Institutions

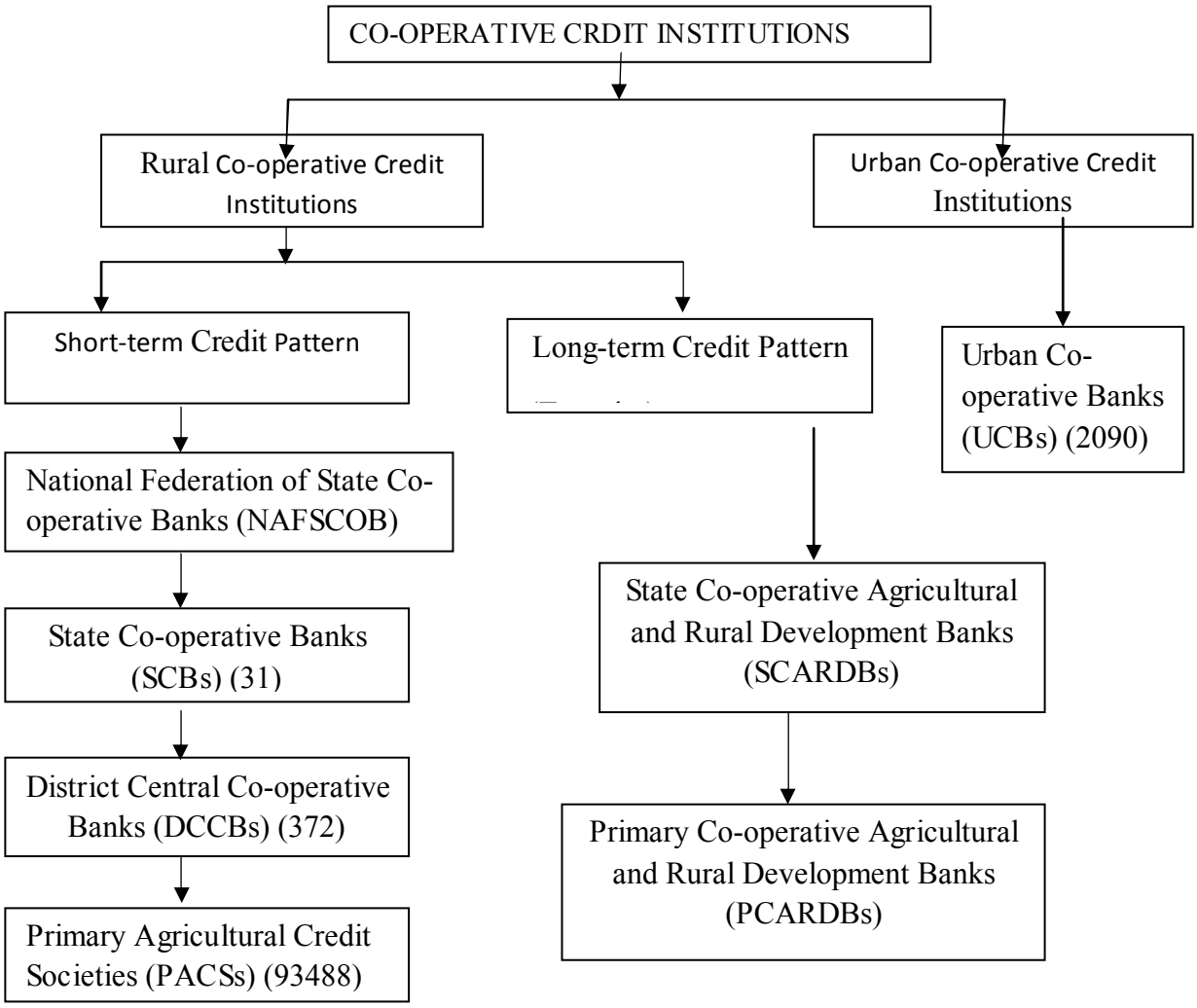

Table 1: Important Key Indicators of DCCBs for the year ending 31st March, 2013

(Rupees in lakh)

Sl. No.	Key Indicators	West Bengal	India
1.	No. of Bank (Nos.)	17	372
2.	No. of Branches With Head Office (Nos.)	285	13655
3.	Total Membership (Nos.)	36784	3915657
4.	Total Share Capital	13563	3328992
5.	Total Deposits	579142	19572643
6.	Total Borrowings	72676	6173116
7.	Total Working Capital	767955	28802124
8.	Total Investments	353939	9405085
9.	Total Short Term Agricultural Loan Issued	141482	10141581
10.	Total Short Term Non-Agricultural Loan Issued	63407	6423276

11.	Total Medium Term Agricultural Loan Issued	9071	366994
12.	Total Medium Term Non-Agricultural Loan Issued	60654	1545264
13.	Other Loan and Issued	14500	2459973
14.	Total Loans and Advances	289114	20937088
15.	Total Short Term Agricultural Loan Outstanding	117189	75966172
16.	Total Short Term Non-Agricultural Loan Outstanding	53731	3627521
17.	Total Medium Term Agricultural Loan Outstanding	13566	1016537
18.	Total Medium Term Non-Agricultural Loan Outstanding	109708	2642627
19.	Total Other Loan Outstanding	33240	2268422
20.	Total Loan Outstanding	327434	17151279
21.	Total Demand	320675	15482531
22.	Total Collection	259449	12329501
23.	Percentage of Collection to Demand	80.91%	79.63%
24.	Percentage of Overdue to Demand	19.09%	20.37%
25.	Total No. of Employees	1992	85611
26.	Total Business	791156.07	39868595.24
27.	Yield on Employee	5485.22	146830.32
28.	Cost of Management Per Employee	15.60	8.61
29.	Percentage of Cost of Management to Working Capital	4.05%	2.56%
30.	NPA (Absolute)	34836.77	1735964.54

Sources: Annual Report of NAFSCOB, 2012-13.

Table 1 shows that, in all over India 372 DCCB operates with 13665 branches, in West Bengal 17 DCCB with 285 branches. The picture of percentage of collection to demand of the West Bengal (80.91%) is better than that of all over the India. On the other hand the percentage of Cost of Management to Working Capital West Bengal (4.05%) is worse than that of all over the country.

Regional Rural Banks (RRBs)

The Regional Rural Banks (RRBs) were established in 1975 under the provisions of the Ordinance promulgated on the 26th September 1975 and followed by Regional Rural Banks Act, 1976 with a view to develop the rural economy and to create a supplementary channel to the 'Cooperative Credit Structure' with a view to enlarge institutional credit for the rural and agriculture sector. The Government of India, the concerned State Government and the bank, which had sponsored the RRB contributed to the share capital of RRBs in the proportion of 50%, 15% and 35%, respectively. The area of operation of the RRBs is limited to notify few districts in a State. The RRBs mobilise deposits primarily from rural/semi-urban areas and provide loans and advances mostly to small and marginal farmers, agricultural labourers , rural artisans and other segments of priority sector. The RRBs were required, in particular, to under the business of providing credit facilities to the poorer sections of rural society, generally referred to as the Target Group. The first five RRBs were set up in five states in Haryana, West Bengal, Rajasthan,

with one each and two in Uttar Pradesh, which were sponsored by different commercial banks.[12] It will not be an overstatement to say that RRBs are true torch bearers of Gandhiji's philosophy. When wisdom and guidance of Gandhiji could take us to long awaited independence why cant today we guide ourselves by this words of wisdom: "True India lives in villages".

Table 2: Important Key Indicators of RRBs for the year ending 31st March, 2013

(Rupees in lakh)

Sl. No.	Key Indicators	West Bengal	India
1.	No. of Bank (Nos.)	3	64
2.	No. of Branches With Head Office (Nos.)	921	17856
3.	Share Capital	900.00	19700.00
4.	Share Capital Deposit	103461.22	597684.49
5.	Reserves	1379.00	1313001.23
6.	Total Owned Fund	105740.22	1930385.62
7.	Total Deposits	1220762.00	21145779.83
8.	Total Borrowings	81348.38	3826772.97
9.	Total Investments	678009.00	11068347.01
10.	Total Loans and Advances	598967.00	13983700.19
11.	Total Loan Issued During the Year	353111.00	10216170.86
12.	Percentage (%) of Recovery	77.63	81.32
13.	Net Profit/Loss	4960.00	238458.78
14.	Percentage (%) of Net NPA	5.83	3.40
15.	Branch Productivity	1946.82	1967.38
16.	Staff Productivity	371.22	461.51

Sources: Key Statistics of NABARD, 2012-13.

Table 2 shows that, in all over India 64 RRBs operates with 17856 branches, in West Bengal 3 RRB with 921 branches. The picture of percentage of recovery the West Bengal (77.63%) is lower than all over India. On the other hand the percentage of Net NPA of the country is lower than the state average. The both branch and staff productivity of state average are lower than the national average.

Rural Banking Institution and Gandhian Thought

The concept and ideas of rural banking institutions has its roots in Gandhian philosophy and thought. Rural banking institutions particularly Co-operative Banks and Regional Rural Banks are meant to provide credit to marginal farmers, landless laboureres, artisans, etc. these are the people who were very close to the heart of Mahatma Gandhi[13]. It was not just a coincidence that very fast Regional Rural Banks (RRBs) come into existence on Gandhiji's birth anniversary, on Oct 2, 1975. According to Gandhian Philosophy individual occupies the central space. Well-being of an individual decides the welfare of entire society and entire nation in Gandhian Philosophy. The role of rural banking institutions are carter to the needs of those individuals of Indian people who have had a long history of suffering and indifferent treatment given to them.

Conclusion

Rural economy of our country is still deprived of basic necessities. Different rural banking institutions have been providing rural finance to the rural people but due to poor implementation of programes and absence of proper monitoring all most all the schemes are have not shown expected result. It will not be an overstatement to say that rural banking institutions are true torch bearers of Gandhiji's philosophy. Gandhiji have deep understanding of Indian economy particularly rural economy. With this understanding he could guide Indian freedom struggle in manner which entire world recognizes and salutes even today with his thought. Gandhian Thought would be strong inspiration for development of rural banking institutions and for rural development.

References (1)

1 Das, Balamohan; Rao, Prabhakar J. V. and Rao, Hrushi Kesava P. (1991), "Rural Banks and Rural Credit", New Delhi: Discovery Publication, p.1
2 World Bank (1975), "The Assualt on World Poverty", Baltimore: John Hopkins University Press, P.3.
3 GOI: Department of Revenue and Banking, "Report of the Expert Committee on Consumption Credit", New Delhi: April 1976, Chapter – 5, p. 25.
4 Subbarayudu, Dr. Y. a.d Reddy, P. Mohan, (2011), "Regional Rural Banks and Rural Development", Serials Publicationd, New Delhi: 2011, pp. 5-6.
5 Jones, J.H.M. (2006), "Some issues in informal finance: Perspectives from a Rajasthan village", in Towards a Sustainable Microfinance Outreach in India. New Delhi: NABARD, GTZ and SDC, pp. 137-152.
6 Christabell, Dr. P.J. and Vimal Raj. A, (2012), "Financial Inclusion in Rural India: The role of Microfinance as a Tool", IOSR Journal of Humanities and Social Science (JHSS), Volume 2, Issue 5 (Sep-Oct. 2012), PP 21-25, www.iosrjournals.org
7 Kochhar, Sameer, (2009), "Speeding Financial Inclusion", New Delhi; Academic Foundation, 2009.
8 Report of the Planning Commission 2009.
9 Reserve Bank of India (RBI), Report Of The Working Group To Review The Business Correspondent Model, Mumbai, 2009
10 Basak, Amit (2010), "Co-operative Banks in India Functioning and Reforms", New Century Publications, New Delhi, India.
11 Singh, R. K. and Upadhayay K.M., (1984)"A Study of Loan Recovery of Regional Rural Banks in Bihar", Financing Agriculture, 1984, pp. 37-39.
12 Pal, Dr. Karam & Sur, Jasvir S. (2006), "Efficacy of Regional Rural Banks (RRBs) in India: A Conventional Analysis", The Journal of Indian Management and Strategy, Vol-11(4), Oct. - Dec.2006, pp. 4-12.
13 Gandhi, M. K. (1968), The Selected Works of Mahatma Gandhi, S. Narayan (ed), 6 vol., Nabajivan Publishing House, Ahmadabad.
14 Census of India Report 2011.
15 www.allbankingsolutions.com
16 www.nabard.org.in

राष्ट्रीय एकात्मतेत महात्मा गांधींचे योगदान

प्रा. डॉ. प्रमोद शंभरकर
सहा. प्राध्यापक (राज्यशास्त्र)
सरदार पटेल महाविद्यालय, चंद्रपूर
मो.नं. ९८२२९३७२६४
ईमेल shambharkar.pramod@gmail.com

प्रा. जगदीश रामदास चिमूरकर
सहा. प्राध्यापक (राज्यशास्त्र)
डॉ. आंबेडकर महाविद्यालय, चंद्रपूर
मो.नं. ९६६५७१०२३९
ईमेल : jagdishchimurkar23@gmail.com

सारांश :

गांधीवादी विचारसरणीचा पाया हा मुळात अध्यात्मवादाचा आहे. गांधीवाद असा एखाद्या वाद अस्तित्वात नाही असे स्वतः गांधीने म्हटले असले तरी पण त्यांच्या विस्तृत आणि विविध विषयावरच्या लेखन संभारातून गांधीवादी राजकिय विचारांची मांडणी करणे मुळीच अशक्य नाही. एवढेच नाही तर अशी मांडणी करण्याचे अनेकानेक प्रयत्न आजवर झाले आहे. गांधीवादाचे विविध पैलू पाहिले तर तो राष्ट्रीय एकात्मतेला पुरक असल्याचे दिसून येते. त्यांचे सत्य, अहिंसा, स्वराज्य, सर्वोदय राजकारण आणि धर्म या संबंधी विचाराचे विश्लेषण केले असता देशातील प्रत्येक व्यक्ती व समाजाला देशाभिमुख बनविलेले आहे. यातूनच गांधीवादाने राष्ट्रीय एकात्मतेचा पाया मजबूत केला आहे.

बिजसंज्ञा : गांधीवाद, राष्ट्रीय, एकात्मता, सत्य, अहिंसा, स्वराज्य, सर्वोदय राजकारण, धर्म.

प्रस्तावना :

भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलनाचे नेतृत्व महात्मा गांधीकडे आले. तोपर्यंत क्रांतीकारकाचा राष्ट्रवाद, जहालांचा राष्ट्रवाद, मवाळांचा उदारमतवाद यासारख्या काही विचारप्रवाहाचा प्रभाव स्वातंत्र्यापुर्वकाळातील राजकारणात निर्माण झाला होता. गांधी हे गोखल्याचे शिष्य असले तरी नेमस्तापेक्षा त्यांच्या विचाराचे मुलस्त्रोत, कार्यपध्दती, साध्य इत्यादीबाबतचे वेगळेपण स्पष्ट होते. महात्मा गांधीच्या आधी आधूनिक भारतातील कोणत्याही विचारवंतानी त्यांच्या एवढा सर्वस्पर्शी विचार केला होता असे दिसून येत नाही. शिक्षण, धर्म, निती, राजकारण, अर्थकारण, कायदा, आरोग्य, शेती, लघुउद्योग, अस्पृश्यता यासारखे कोणतेही क्षेत्र असो तसेच वैयक्तिक पातळीवरील आत्मशांतीपासून विश्वशांतीपर्यंत तसेच खेडेगावापासुन संपुर्ण विश्वापर्यंत प्रचंड मोठा आवाका गांधीविचाराने व्यापला आहे. उपरोक्त सर्व क्षेत्राचे मुलगामी चिंतन गांधींनी केले आहे. जात, धर्म, पंथ, वर्ग इत्यादी प्रकारचा कोणताही भेदभाव मनात न आणता राष्ट्रीय एकात्मता व मानवाच्या भवितव्याबद्दल आस्था बाळगणाऱ्या सर्व लोकांबद्दल समग्र दृष्टीने विचार हेच गांधीवादी विचाराचे एक महत्वाचे वैशिष्ट आहे.

गांधीवाद आणि राष्ट्रीय एकात्मता :

महात्मा गांधीचे विस्तृत आणि विविध विषयावरच्या लेखनातून गांधीवादी राजकिय विचारांची मांडणी करण्यात आली आहे. यातुनच अनेक लेखकांनी गांधीवादी संकल्पनेचा विकास केला आहे. गांधीवादात समग्र मानवजातीचे कल्याण, राष्ट्रीय एकात्मता, विश्वबंधूता इत्यादी संबंधी विचार व कृतींना चालना दिली आहे. महात्मा गांधींनी विविध विषयावर जे विचार मांडले त्या सर्वांमधून राष्ट्रीय एकात्मतेला पुरक अशी व्यवस्था निर्माण झाली आहे.

सत्य व अहिंसेबाबतचे विचार :

''सत्य व अहिंसा परस्परापासुन अविभाज्य आहे असे गांधी म्हणतात तरीपण अहिंसा हे साधन आहे व सत्य हे साध्य आहे. असे स्पष्टीकरण त्यांनी दिले आहे आणि त्यामुळेच अहिंसा हे सत्यान्वेषी मानवांशी सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य ठरते असे गांधींना वाटते. हिंसेच्या साम्राज्यात ज्यांनी अहिंसेच्या सिध्दांताचा शोध लावला त्या ऋषींना ते न्युटनपेक्षा अधिक थोर संशोधक व वेलिंग्टनपेक्षाही अधिक थोर लढवय्ये मानतात. शस्त्रे कशी चालवायची याचे ज्ञान झाल्यानंतर, ती कशी विफल आहेत याची त्यांना जाणीव झाली व हिंसेने नव्हे तर अहिंसेने मुक्ती होईल असे त्यांनी जगाला सांगितले, असे गांधी म्हणतात.''[1]

''गांधी सत्यालाच ईश्वर मानतात. सत्य हे शाश्वत व चिरंतन आहे. सत्य हे अपरिवर्तनीय आहे. किंबहूना जे अपरिवर्तनीय आहे ते सत्य आहे. ते सर्व जीवनमात्रामध्ये काम करते. सत्याचे कार्यक्षेत्र व्यापक आहे असे गांधी म्हणतात. सत्याचे कार्यक्षेत्र केवळ एखाद्या व्यक्ती वा व्यक्तिचे जीवन एवढ्यापुरते मर्यादित नाही. त्यांच्या मते संपुर्ण सत्याचे पालन हे कुटूंब, समुह, धर्मकारण, समाजकारण, राजकारण, अर्थकारण अशा सर्वच क्षेत्रात केले पाहिजे. त्यांनी आपल्या वर्तन–आचरणातुन जगाला हे

दाखवून दिले की, राजकारणातही सत्याचे पालन करणें शक्य आहे. अशाप्रकारे गांधीच्या दृष्टीने सत्य हे सर्वोच्च असे नैतिक मुल्य आहे. सत्य हे एकदम प्रस्थापित होत नाही. ते प्रयोगातून प्रस्थापित होते. म्हणुनच त्यांनी आपल्या जीवन साधनेला आणि विचारांना **सत्याचे प्रयोग** असे नाव दिले.''[2]

राष्ट्रीय एकात्मता प्रस्थापित करण्याकरिता तेथील लोकांचे राष्ट्रीय चारित्र्य चांगले असणे महत्वाचे असते. महात्मा गांधीच्या सत्य व अहिंसेच्या विचाराने राष्ट्रातील लोकांच्या चारित्र्याला नैतिक मुल्यांची साथ मिळत असल्याने राष्ट्रीय एकात्मता प्रस्थापित करणे सहज शक्य होते.

स्वराज्यासंबंधी विचार :

'स्वराज्य हे बहुसंख्येचे म्हणजेच पर्यायाने हिंदूचे राज्य असेल' हे मत गांधींनी अत्यंत निःसंदिग्ध शब्दांत खोडून काढले आहे. ते तसे झाल्यास आपण त्याला स्वराज्यच म्हणणार नाही व संपुर्ण सामर्थ्यानिशी त्याचा प्रतिकार करू असे ते म्हणतात. हिंद स्वराज्य हे सर्वांचे राज्य असेल, न्यायाचे राज्य असेल असे त्यांचे मत आहे. त्या राजवटीत मंत्रिपदावर हिंदू असोत, मुसलमान असोत वा शीख असोत किंवा विधिमंडळे जरी सर्वस्वी हिंदू वा मुसलमानांनी वा अन्य कोणत्याही जमातीच्या व्यक्तींनी भरलेली असली तरी त्यांना समतोल न्यायबुध्दीनेच कारभार करणे भाग आहे. या देशातील कोणत्याच जमातीने अन्य जमातींचे भय बाळगण्याचे कारण नाही. त्याचप्रमाणे इंग्रज राज्यकर्त्यांनी कुणाच्या हक्कांना संरक्षण देण्याची तरतुद करण्याचे कारण नाही. कारण गांधींच्या मते खऱ्या स्वराज्याच्या हक्कांसाठी खास संरक्षणाची गरज राहू नये.''[3]

महात्मा गांधीना अभिप्रेत असलेल्या स्वराज्यात ब्रिटीशांच्या गुलामगिरीतुन मुक्तता, स्वराष्ट्राची स्वतंत्रता, शोषनमुक्त समाजव्यवस्था, प्रातिनिधीक संस्थानापेक्षा लोकशक्तीवर भर, गरिबांचे स्वराज्य, सर्वधर्मसमभाव, पुर्ण स्वराज्य, जनतेला राजकीय स्वातंत्र्य, सामाजिक, आर्थिक आणि धार्मिक स्वातंत्र्याचे अधिकार देण्याचे स्वराज्य, जनसार्वभौमत्वासह रामराज्य संकल्पनेचे स्वराज्य आणि कल्याणकारी राज्य असलेले स्वराज्य इत्यादी महत्वपुर्ण वैशिष्ट्ये अंतर्भुत होते. उपरोक्त वैशिष्ट्यांसह असलेल्या स्वराज्याची संकल्पना राष्ट्रीय एकात्मतेला हितकारक आहे.

राजकारण आणि धर्म :

''गांधीवाद हा मुलतः धार्मिक मानवतावाद आहे. राजकारणाचे आध्यात्मिकरण किंवा नैतिकीकरण करावे हा गांधीचे गुरू गोखले ह्यांचा संदेश होता. माणसाला ईश्वराशी तसेच माणसाला माणसांशी जोडण्याचे कार्य धर्मातुन साधते कारण धर्मच माणसातील पाशवी प्रवृत्तीचे नियमन करू शकते. धर्माशी राजकारण जोडले जाण्यातुन राजकारणाचे शुध्दीकरण घडूण येणे गांधीना अभिप्रेत होते. कौटिल्याच्या काळापासुन परंपरागत राजकारणाचे सुत्र व्यवहारवादी होते. परंतू गांधीवादाने राजकीय क्षेत्रात नैतिकतेचे व सभ्यतेचे बिज पेरण्याचा अभुतपूर्व प्रयत्न केला.''[4] उपरोक्त विचारावरून गांधीवादाने सर्वच धर्मांतील नैतिक व सभ्यतेच्या मुल्यांना प्रमाण माणून राजकारणाला व राजकिय व्यवस्थेतील जनतेला नैतिकपुर्ण चारित्र्याची दिशा दिली. यातून विशिष्ट एका धर्माच्या आधारावर राष्ट्राची निर्मिती न करता सर्वधर्मसमभाव प्रणीत राष्ट्रीय एकात्मता प्रस्थपित करणाऱ्या राज्याची संकल्पना मांडली.

सर्वोदय राष्ट्रीय एकात्मतेला पूरक :

'सर्वोदय' हे गांधीच्या विचारसरणीचेच एक अपत्य आहे. आचार्य सामंतभद्र या जैन मुनींच्या लेखनातून गांधींनी 'सर्वोदय' शब्द उचलला होता आणि आपल्या आत्मकथेत त्यांनी त्याचा प्रथम उल्लेख केला होता. त्यानंतर त्यांनीच रस्कीन च्या 'अन टू धिस लास्ट' नामक ग्रंथाचा जो गुजराथी अनुवाद केला त्याचे शीर्षक म्हणून 'सर्वोदय' शब्दाचाच वापर केला होता. तेव्हा सर्वोदयाचे मुळ आपल्याला गांधीच्या विचारसरणीतच शोधावे लागेल. एका परीने असेही म्हणता येईल की, आधूनिक समाजासमोरील सामाजिक, राजकीय आणि आर्थिक समस्यांच्या सोडवणूकीसाठी गांधी विचारसरणीचा अवलंब करणे म्हणजेच सर्वोदय होय. समाजाला उपलब्ध असलेल्या भौतिक, आर्थिक व आध्यात्मिक साधनांचा सार्वजनिक कल्याणाच्या दृष्टीने अधिकाधिक उपयोग करून घेण्याचे सर्वोदय हे एक शस्त्र आहे. 'अधिकाधिकांचे अधिकाधिक सुख' या उपयुक्तवाद्यांच्या मूलसुत्रापेक्षा सर्वोदयाचे उद्दिष्ट अधिक व्यापक आहे. समाजातील प्रत्येकाचे व सर्वांचे कल्याण त्याला अपेक्षित आहे. समाजवादाच्या कोणत्याही प्रकारापेक्षा सर्वोदयाचे तत्वज्ञान अधिक समावेशक आणि सवस्पर्शी आहे.''[5]

''महात्मा गांधीच्या सर्वोदयात राज्यसंस्था कायदे, वर्तमान लोकशाही शासन प्रकार त्यानुसार निवडणुका, राजकीय पक्ष इत्यादी संस्था बद्दल अविश्वास व्यक्त झाला आहे. तसेच अतिकेंद्रीत राज्यव्यवस्था, प्रचंड प्रमाणावर औद्योकिकरण व यांत्रिकरण

आणि अतिसंघटीत पक्ष रचना इत्यादीवर अत्यंत प्रखर टिका सर्वोदयवाद्यांनी केली आहे. हयाचे प्रमुख कारण असे की, ग्रामीण जीवन आणि त्या जीवनाच्या गरजा ज्यांची उपेक्षाच वरील गोष्टीमुळे घडते. सर्वोदयाच्या विचारसरणीनुसार ग्राम जीवन हा भारताचा आत्मा असल्यामुळे हया देशाचा कोणताही सामाजिक, आर्थिक व राजकीय विचार हा खेडे हा केंद्रबिंदू म्हाणूनच झाला पाहिजे. खेडयाचे राष्ट्रकूल असे स्वतंत्र भारताबद्दलचे चित्र गांधीनी रेखाटले होते.''[6]

उपरोक्त गांधीच्या सर्वोदयाच्या विचारातून ग्राम जीवनाला अधिक महत्व दिल्याने राष्ट्रीयत्वाच्या संकल्पेनेला त्यांचा विरोध असल्याची टिका अनेक लेखकांनी केली आहे. परंतू गांधीच्या सर्वोदयाच्या संकल्पनेने राष्ट्रातील शेवटचा घटक खेडे याला आत्मा म्हणून त्यांच्या विकासातच राष्ट्राच्या विकासाची संकल्पना मांडली. राष्ट्राच्या शेवटच्या घटकाला न्याय मिळाला तर राष्ट्रीय एकात्मता प्रस्थापित करण्यास मदत होते. गांधीचे सर्वोदयाचे स्वप्न त्यांच्या हयातीत साकार होऊ शकले नसले तरी त्यांच्या निधनानंतर आचार्य विनोबा भावे व जयप्रकाश नारायण यांनी त्या कार्यासाठी वाहून घेतले.

राष्ट्रवाद व आंतरराष्ट्रवाद :

''राष्ट्रवाद आणि आंतरराष्ट्रवाद यांचा अपूर्व संगम गांधीच्या राजकीय विचारात पाहण्यास मिळतो. गांधी राष्ट्रवादी होते, स्वराष्ट्र, स्वदेश, स्वबांधव यांच्याबदल त्यांना उत्कट प्रेम आणि जाज्वल्य अभिमानही होता किंबहूना जन्मभूमीची सेवा हाच मानव जातीच्या सेवेचा मार्ग त्यांनी मानला. म्हणूनच संकुचितपणा, स्वार्थ, एकाकी आक्रमकपणा यांनी त्यांचा राष्ट्रवाद मुळीच कलुषित होऊ शकला नाही. पाश्चात्य राष्ट्रवादापेक्षा भारतीय राष्ट्रवादाने वेगळी वाट चोखाळावी अशी गांधीची अपेक्षा होती. कोणालाही राष्ट्रवादी न होता आंतरराष्ट्रवादी होता येणे अशक्य आहे. राष्ट्रवाद ही सत्यस्थिती झाल्यानंतरच आंतरराष्ट्रवाद संभवनीय आहे. याचा अर्थ असा की जेव्हा निरनिराळया देशांचे लोक संघटीत होतील व एकमुखाने कार्य करू शकतील तेव्हाच आंतरराष्ट्रवाद संभवनीय होईल.''[7]

राष्ट्रीय एकात्मतेच्या दिशेने वाटचाल करतांना या राष्ट्राच्या वाटेत येणाऱ्या सामाजिक अडथळ्याची जाणीव गांधीना पुरेपुर होती. ते दूर करण्यासाठी केवळ शासनाच्या प्रयत्नावर विसंबून राहणे गांधींना मान्य नव्हते. लोकांच्या सामाजिक शक्ती जागी करणाऱ्या वर विशेष भर दिला. त्यांची रचनात्मक कार्यक्रम हा त्यांच्या राष्ट्रवादी तत्वज्ञानाचा व राष्ट्रीय ऐक्याच्या प्रयत्नाचा केवळ एक भाग होता. सामुहिक अस्तित्वाची भावना मुळापासुन बळकट करणे हा त्या कार्यक्रमाचा हेतु होता.

''भारतात निरनिराळ्या धर्माचे लोक राहतात म्हणून एक राष्ट्र होऊ शकत नाही. हा युक्तीवादही गांधींना मान्य नाही. फार पुर्वीपासून असल्यामुळे अनेक धर्माचे लोक इथे समभावाने राहु शकतात. गांधीची हिंदू राष्ट्रवादाच्या विरूध्द होते. हा देश सर्वधर्मीयांसाठी आहे. जिथे येथे जितक्या व्यक्ती आहे प्रत्यक्षात तितके धर्म आहे. परंतू ज्यांना राष्ट्रीयत्वाची जाणीव आहे ते एकमेकांच्या धर्मात हस्तक्षेप करीत नाही. भारतात हिंदूच राहिले पाहिजे असे हिंदूंना वाटत असेल तर ते त्यांचे मनोराज्य आहे. हिंदू, मुसलमान, पारशी, ख्रिश्चन ह्यांनी भारताला आपला देश मानले असून ते सर्व देशबांधव आहे. व त्यांच्या स्वतःच्या हितासाठी त्यांना ऐकोप्याने राहणे भाग आहे.''[8] हिंदू मुस्लीम सलोख्यावर गांधींनी खुप भर दिला होता.

उपरोक्त विचारांवरून संप्रदाय ही एक खाजगी बाब आहे व राजकारणात तिला मुळीच स्थान असता कामा नये. अशा आशयाचे विचार गांधींनी मांडलेले आढळतात. ही त्यांची सर्वसमावेशक, पंथवादमुक्त, धर्मनिरपेक्ष अशी राष्ट्रीय एकात्मतेसह राष्ट्रवादाची संकल्पना भारतासाठी नेहमी करिता संयुक्तीक ठरेल.

मुल्यमापन :

गांधीवाद आणि राष्ट्रीय एकात्मता भारतीय व्यवस्थेकरिता परस्परपुरक आहे. त्यांच्या सत्य, अहिंसा, स्वराज्य, राजकारण आणि धर्म, राष्ट्रवाद व आंतरराष्ट्रवाद आणि राजकिय विचार आणि तत्वज्ञानातून भारतासारख्या विविध स्तरावर विषमता असलेल्या देशात राष्ट्रीय समतेसह राष्ट्रीय एकात्मतेची पायाभरणी केलेली आहे. हे गांधीवादाचे राष्ट्रीय एकात्मतेतील मौलिक योगदान आहे.

महात्मा गांधींनी राष्ट्रीय एकात्मतेच्या दृष्टीकोणातुन हिंदू मुस्लीम ऐक्याची विचार मांडले परंतु त्यांच्याच हयातीत हिंदू मुस्लीम संघर्षाने भारताचे विभाजन होऊन त्यांचे विचार वास्तवात येऊ शकले नाही. सर्वधर्मसमभाव व धर्मांतील मतऐक्य यावर महात्मा गांधींनी फार भर दिला परंतु महात्मा गांधींना भारतातील धार्मिक तणावातील सामाजिक, राजकिय व सांस्कृतिक प्रवाहाचे पुरेसे आकलन झाले नव्हते. त्यांची अशी समजुत होती की, कावेबाज इंग्रजांनी हा तणाव निर्माण केला आहे. परंतु धर्माचा समाजावर होणारा परिणाम बहुमुखी असतो. त्यातुन रूढी, परंपरा, ढोकळेबाज मते अशा अनेक गोष्टी समाजाच्या मनावर

अमंलबजावीत असतात. व्यक्तिच्या धर्मविषयक भुमिकेत परिवर्तन घडवून आणण्याची मार्गच समाजाच्याही भुमिकेत परिवर्तन घडवून आणू शकतील अशी मानन्याची चुक गांधीच्या हातुन घडली अशी चुक काही विचारवंतांना वाटते.

गांधी हिंदु मुस्लीम समस्येचा विचार आचारविचार व धर्मनिरपेक्षतेच्या चौकटीतुन करण्याऐवजी धर्माच्या चौकटीतुनच ते करतात. परंतू धर्मनिरपेक्षतेच्या विचारांचा जोरकस पुरस्कार मात्र त्यांनी केलेला आढळत नाही. गांधी एकरूपता संयोग आणि एकात्मता यापेक्षा सुसंवादी सहअस्तीत्वाच्या व समेटाच्या पायावर ते राष्ट्रवादाची उभारणी करू पाहत होते. धर्माला राजकारणासाठी राबवण्याचा प्रयत्न त्यांनी केला. तेवढेच धर्मांचे राजकीयकरण होऊन गुंतागुंत निर्माण झाली असेही काही टिकाकारांना वाटते. अर्थात ह्या सर्व तुटीसह गांधीजी एक महान राष्ट्रनिर्माते होते व त्यांनी राष्ट्रीय एकात्मतेला व विश्वबंधुत्वाची पायाभरणी केलेली आहे. यात दुमत संभवत नाही.

संदर्भ :

1) भोळे, भा.ल. : आधुनिक भारतातील राजकीय विचार : पृ. 470
2) लोटे, रा.ज. : भारतीय राजकीय विचार : पृ. 49,50
3) उनि, भोळे : पृ. 465
4) उनि, लोटे : पृ. 45
5) उनि, भोळे : पृ. 449
6) तत्रैव, भोळे : पृ. 449
7) यु.एस.मोहनराव : महात्मा गांधींचा संदेश, (संकलन),
(प्रकाशन विभाग : भारत सरकार –1960) : पृ. 135
8) उनि, भोळे : पृ. 482
9) बी. आर. नंदा – महात्मा गांधी एक जीवनी
10) अरुण सारथी – शोध महात्मा गांधींचा

महात्मा गांधीचा स्त्री – पुरूष समानतेचा विचार

प्रा. डॉ. संजय गोरे
राज्यशास्त्र विभाग प्रमूख व संशोधक मार्गदर्शक
शरदराव पवार महाविद्यालय, गडचांदूर जि. चंद्रपूर

सारांश : स्त्री – पुरूषांचा समान दर्जा असावा या मताचे गांधीजी होते. प्राचीन काळी स्त्रियांना सामाजिक प्रतिष्ठा नव्हती. स्त्रियांची कनिष्ठता हा जोपासलेला न्युनगंड आहे. स्त्रियांची सामाजिक गुलामगिरी तिच्या मानसिक गुलामगिरीतून निर्माण झाली आहे. ही मानसिक गुलामगिरी नष्ट झाली पाहीजे. स्त्रियांच्या सामाजिक समतेला पुरूषांच्या मान्यतेशिवाय अर्थ नाही. नवसमाजरचनेत स्त्रियांच्या दर्जाला महत्वाचे स्थान राहील. स्त्रियांनी कुटुबांत साधेपणाचा आदर्श निर्माण करण्याची अपेक्षा गांधीजीची आहे. स्त्रियांनी घराला वळण लावले तर राष्ट्राला वळण लावणे कठीण जाणार नाही, असा गांधीजीचा विश्वास होता. स्त्री – पुरूषांचे जीवन परस्परांशिवाय अर्थशुन्य आहे, ते एकमेकांवर अवलंबुन आहेत. म्हणून ते समान दर्जाचे आहेत. बुध्दी, कर्तृत्व आणि चातुर्याच्या बाबतीत स्त्री – पुरूषांपेक्षा कमी नाही. अन्यायाविरूध्द लढण्याची तयारी स्त्रियांनी दाखविली पाहिजे. मागील काळात स्त्रियांनी सोसलेल्या हालअपेष्ठा लक्षात घेवून पुरूषांनी स्त्रियांबददल सहानुभूतीचा व्यापक, उदार दृष्टिकोन ठेवला पाहिजे.

मानव संस्कृतीत पुरूष व स्त्री हे दोघेही एकत्रित आढळतात. एक दुसऱ्यापासून ते वेगळे नाहीत. समाजजीवनासाठी दोघांचीही गरज भासते. पुरूष हे स्त्रीपेक्षा प्रगतशील ठरले. कारण त्यांना तसा समाजाचा आधार मिळाला, गांधीजींनी स्त्रियांसाठी वेगळी अशी चळवळ उभी केली नाही किंवा त्यांना संघटित करण्यासाठी वेगळे प्रयत्न केले नाहीत. कारण त्यांच्या दृष्टिने स्त्री काही वेगळी जात, वर्ग किंवा वेगळा समाज नव्हता. मानवी प्रगती ही पुरूष व स्त्री यांच्या संघर्षावर अथवा चढाओढीवर अवलंबून नसून दोंघाच्या समन्वयावर अवलंबून असते, असे गांधीजीचे ठाम मत होते. म. गांधीनी समाजातील प्रत्येक व्यक्तीच्या मग ती स्त्री असो अथवा पुरूष त्यांच्या अस्तित्वाला महत्व दिलेले दिसून येते.

भारतीय समाजव्यवस्था ही अहिंसा या तत्वावर उभारलेली असेल. या व्यस्थेत जेवढे अधिकार पुरूषांना असतील तेवढेच अधिकार स्त्रियांना देखील असतील. राजकीय क्षेत्रांत स्त्रियांचा सहभाग असेल तर भारतीय संसदीय लोकशाही यशस्वी होवू शकते असा विश्वास गांधीना होता, म्हणूनच त्यांनी ग्रामीण भागातील स्थानिक स्वराज्य संस्थात स्त्रियांना पुरूषांच्या बरोबरीने प्रतिनिधीत्व दयावे याचे समर्थन केले. तसेच स्वतःच्या भविष्याबाबत विचार करण्याचा तसेच निर्णय घेण्याचा अधिकार सपूर्ण स्त्रियांना असेल. म. गांधीनीं स्त्रि शिक्षणाचे समर्थन करून भारतीय समाजातील स्त्री कोणत्याही प्रकारच्या शिक्षणापासून वंचित राहू नये, यासाठी सातत्याने प्रयत्न केले, तसेच स्त्रिने शिक्षण घेवून पुरूषांशी स्पर्धा न करता परस्पर पूरक शिक्षण घ्यावे.

प्रस्तावना :– म. गांधींनी भारतीय समाजातील स्त्रीयांच्या उन्तीसाठी शिक्षणाचे समर्थन करून ग्रामीण भागापर्यत शिक्षणाची गंगा झिरपवण्याचा विचार मांडला पण वस्तुस्थिती मात्र निराळीच आहे. म. गांधीनी स्त्रियांच्या विविध प्रश्नांवर गांभीर्यपूर्वक विचार करून स्त्रर उन्नतीच्या विविध संकल्पना मांडल्या आहेत. म. गांधींजींनी स्त्रियांच्या बाबत म्हटले आहे की, '' मला हे माहीती आहे की, भारतातील स्त्रिया हया पुरूषांच्या बरोबरीने विकास करत आहेत काही क्षेत्रात तर त्या पुरूषांपेक्षाही सरस ठरतांना दिसत आहेत पण आजही पाश्चात राष्ट्रातील काही विचारवतांना वाटते की, आजही भारतीय स्त्री रूढी, परंपरा, प्रथेच्या जोखडातून

बाहेर पडलेली नाही. जो पर्यत या क्षेत्रात सुधारणा होत नाही तो पर्यत स्त्रियांच्या दर्जा सुधारला, असे म्हणणे अतिशोक्तीच ठरेल.'' भारतातील खेडी आणि तेथील स्त्री आजही उच्च माध्यमिक शिक्षणापासून आणि उच्च शिक्षणापासून वंचित आहेत. म. गांधींनी राजकीय क्षेत्रात स्त्रियांच्या सहभागाचे समर्थन केले होते. पण शहरातील आणि ग्रामीण भागातील स्त्रियांना राजकीय क्षेत्रात संधी प्राप्त होण्यासाठी स्वातंत्र्यानंतर बरीच प्रतिभा करावी लागली. 73 व्या घटना दुरूस्तीने स्त्रियांना स्थानीक स्वराज्य संस्थेत दिलेले 1/3 आरक्षण हे स्त्रियांच्या राजकीय क्षेत्रातील सहभागाबाबत झालेली क्रांतीच म्हणावी लागेल. आजही राजकीय क्षेत्रातील स्त्रियांच्या सहभागाबाबत पाहिजे तशी प्रगती झालेली दिसून येत नाही. स्त्रिया हया स्थानिक स्वराज्य संस्थेत विविध सार्वजनिक प्राधिकारणात अधिकार पदावर कागदोपत्री विराजमान झाल्या, पण त्याच्या सत्तेचा प्रत्यक्षात वापर मात्र त्यांच्या कुटूबांतील पुरूष मंडळीकडूनच होतांना दिसतो.

स्त्री – पुरूष समानता :– स्त्री व पुरूष हे नैसर्गिकरीत्याच समान आहेत. त्यांच्यात असेल तो शारिरिक भेदच. स्त्रीला स्वतःला स्वतःचे व्यक्तिमत्व आहे. त्याग, सोशिकता, कष्टाळुपणा याबाबत ती पुरूषांपेक्षा अधिकच श्रेष्ठ आहे. स्त्री ही अहिंसक लढयासाठी अधिकच समर्थ आहे, असा गांधीजींचा विचार होता. म. गांधीनी स्वातंत्र्यपुर्वकाळातच ग्रामीण भागातील स्त्रियांच्या उन्नतीसाठी विविध संकल्पनाची मांडणी केली होती. म. गांधी म्हणतात ''ज्या जातीत वा देशात स्त्री जातीला मान दिला जात नाही, त्या जातीला वा त्या देशाला सुसंस्कृत म्हणता येणार नाही, कारण त्याग, सहनशिलता आणि धैर्य या तिन गुणांत स्त्रिया पुरूषांपेक्षा कितीतरी पठींनी श्रेष्ठ असतात.'' आजही भारतीय समाज मध्ययुगीन व्यवस्थेतुन बाहेर पडायला तयार नाही. म्हणूनच आजही भारतातील स्त्री उपेक्षित असलेली दिसून येते. भारतातच नव्हे, तर संपुर्ण जगाच्या इतिहासात स्त्रियांना पुरूषप्रधान मानसिकतेचे चटके सहन करावे लागलेले आहेत. व्यक्तिस्वातंत्र्य, आर्थिक स्वातंत्र्य, स्वयंनिर्णयाचे अधिकार, सार्वजनिक जीवनात सहभाग इ. अनेक अधिकारांपासून त्यांना वंचीत ठेवण्यात आलेले आहे.

राजकीय चळवळीला गांधीनी सामाजिक सुधारणेच्या कार्यक्रमाची जोड देवून राजकीय चळवळीला गतीमान केल्याचे आपल्या लक्षात येते, आपल्या देशातही स्वातंत्र्यपुर्वकाळात आणि स्वातंत्र्यनंतरही शासन पातळीवर अनेक सुधारणा कायदे, महिला विषयक धोरणं नि योजना राबविण्यात आल्या, येत आहेत. विविध राष्ट्रीय, राज्य पातळीवरील महिला आयोग, महाराष्ट्राचे 1994 चे महिला धोरण, केंद्र सरकारचे 2001 चे महिला सबलीकरणाचे धोरण, 73 आणि 74 व्या घटना दुरूस्तीने दिलेले महिला आरक्षण आणि अगदी अलीकडेच कायदेमंडळात महिलांना 33 : आरक्षण देवू करणारे प्रस्तावित विधेयक या सर्व गोष्टींचा उल्लेख करता येईल.

स्त्रियांचे स्थान :– पुरूषांना स्वतःच्या भवितव्याबाबत जे अधिकार असतील तेच अधिकार स्त्रियांनाही असतील असे गांधीजींचे मत होते. पुरूषांप्रमाणेच स्त्रीलाही जीवनाच्या विविध क्षेत्रात बरोबरीने सहभागी होता आले पाहिजे. स्त्रियांना दिली जाणारी दुय्यम भुमिका, त्यांच्यावर लादलेली बंधने, स्त्रियांवर सतत होत असलेला जुलूम या सर्व गोष्टी मुळापासूनच सुधारण्याची आवश्यकता गांधीजी प्रतिपादन करतात. स्त्री ही पुरूषांची साथी असून बौध्दिक योग्यतेतही ती त्याच्यापेक्षा मुळीच कमी नाही. पुरूषांबरोबर स्त्रियानांही प्रत्येक गोष्टीत सक्रीय सहभाग घेण्याचा हक्क आहे. त्यांना स्वातंत्र्यबाबतही पुरूषांच्या बरोबरीचे हक्क आहेत. असे गांधीजी मानत, स्त्रियांच्या हक्काबाबत ते कोणतीही तडजोड करण्यास तयार नव्हते. आमच्या समाजाने तयार केलेले नियम, कायदे, नियम पुरूषांनीच बनविलेले असून त्यांत स्त्रियांच्या मतांची भावनांची दखल घेतलेली नाही. तसेच त्यात विवेक व न्याय

यांचे पालन केलेले दिसत नाही. म्हणूनच त्यांचे स्वरूप पक्षपाती नि अन्यायी राहीलेले आहे. असे त्यांचे म्हणणे होते. रूढी परंपरेने स्त्रीबाबत घेतलेली भुमिका गांधीजी बदलण्याची शिफारस करतात.

गांधीजींनी अंहिसेला सार्वजनिक क्षेत्रात आणले. साहजिकच स्त्रियांना सार्वजनिक क्षेत्रातील सहभागाची संधी वाढली. अहिसेंच्या मार्गात स्त्रिया पुरूषांच्याही पुढे जावून काम करू शकतात. म्हणून अहिंसाधारित राज्यात, समाजात स्त्रियांनी पुढे यावे असा त्यांचा युक्तीवाद असे. स्त्रिया मुळातच संयमी असून त्यांनी पतीच्या हातचे खेळणे किंवा त्यांच्या कामपुर्तीचे निव्वळ साधन बनून राहणे योग्य नाही. स्त्रियांना मानसिक गुलामगिरीतून मुक्त करणे आवश्यक असून स्वतःच्या शरीराचे पावित्र्य तिच्या मनावर बिंबवणे तसेच राष्ट्र व मानवता यांच्या सेवेची प्रतिष्ठा इ. गोष्टी तिला समजावणे गरजेचे आहे.

जीवनात पुरूषांच्या बरोबरीने सहभागी होता येईल असे शिक्षण स्त्रियांना द्यावे लागेल. पुरूषांप्रमाणेच स्त्रियांनाही उत्तम जीवनासाठी, जीवनाच्या सर्वांगिंण विकासासाठी शिक्षणाची आवश्यकता आहे. अशा आशयाचे विचार गांधीजींनी प्रतिपादीत केले आहेत. '' ज्यांना शाळा, कॉलेजात शिक्षण मिळालेले नाही अशा स्त्रियांनी नवऱ्यापाशी शक्य ते शिक्षण घ्यावे. आया आणि मुलींबाबतही या तत्वाचा अवलंब करावा.'' असे गांधींजी म्हणतात. ''स्त्री शिक्षणाबददल आपले मत मांडत असतांना गांधीजी म्हणतात ''या विषयाबाबत अजून मी स्पष्ट निर्णयाप्रत पोचलेलो नाही.

स्त्रि मुक्ती चळवळ :– विसाव्या शतकातील स्त्रीमुक्ती चळवळीच्या पार्श्वभुमीवर गांधीजींनी स्वीकारलेली भूमिका अतिशय महत्वपूर्ण असून स्त्रीवादी चळवळीतील त्यांचे एक विशिष्ट स्थान निर्माण करणारी ठरते.

स्वातंत्र्यचळवळीत स्त्रियांना पुढाकार घेण्यास प्रोत्साहन देवून त्यांचा गौरव करणारे गांधीजी ग्रामस्वराज्यातील पंचायतीपासून देशाच्या राजकारणातही स्त्रियांचा समान व सक्रिय सहभागाचा आग्रह धरतात. हुंडाप्रथा व जातीप्रथेसारख्या अनिष्ठ प्रथांनी स्त्री वर्गाला जखडून ठेवलेले असून त्यांचे शोषण होत आहे. हुंडा घेणारा केवळ स्त्री जातीचाच अपमान करतो असे नाही तर त्याच्या कृत्यातून समाज, राज्यालाही कलंक लागतो आहे. अशी भूमिका घेणारे गांधींजी हुंडाप्रथा बंद करण्याबरोबरच स्त्री उन्नतीसाठी जातीप्रथा नष्ट करून आंतरजातीय विवाह करण्याची शिफारस करतात.

एक मानव म्हणून स्त्रियांना जीवनाच्या प्रत्येक क्षेत्रात बरोबरीचे स्थान व दर्जा देण्याचा आग्रह करणारे गांधीजी परंपरागत अनिष्ठ चालीरिती, रूढी, प्रथांचे समीक्षण करतात. पुरूषी वर्चस्वातून पुढे आलेल्या या प्रथा, परंपरामधून स्त्री जातीला मुक्त करण्याची शिफारस करतात. स्त्रियांच्या अहिंसावादी मुळ स्वभाव अधारेखित करून अहिंसाधारित समाजरचनेच्या उभारणीसाठी स्त्रिांना समाजाच्या व सार्वजनिक कार्यात पुढाकार घेण्याचा आग्रह गांधीजी करतात.

समारोप :– गांधीच्या मते नव समाज रचनेमध्ये स्त्रियांना महत्वाचे स्थान राहील, मानवी प्रगती ही स्त्रि आणि पुरूषांच्या चढाओढीवर अवलंबुन नसून त्यांच्या समन्वयावर अवलंबुन आहे. भारतीय समाज व्यवस्था ही अंहिसा या तत्वावर उभारलेली असेल ज्यामध्ये पुरूषांना तेवढेच अधिकार स्त्रीला देखील असतील. स्त्रियांची कनिष्ठता या जोपासलेला न्युनगंड आहे. पुरूषांनी आपली पुरूष संस्कृती झुगारून स्त्रियांच्या विकासासाठी प्रयत्न केले पाहीजे. गांधीच्या मते स्त्रिया या पुरूषांच्या बरोबरीने विकास करीत आहे. त्यांना समाजाने आधार देण्याची गरज आहे. जो समाज स्त्री जातीला मान देत नाही, तो समाज सुसंस्कृत समाजला जाणार नाही. असे गांधीचे मत होते.

संदर्भ ग्रंथ :

1) गांधीजी (संग्राहक – आर. के. प्रभू) मेरे सपनों का भारत – नवजीवन प्रकाशन मंदीर, अहमदाबाद एप्रील 2004

2) मूठाळ, राम – भारतीय व पाश्चिमात्य राजकीय विचारवंत – मंगेश प्रकाशन नागपूर जाने. 1989

3) गांधी मोहनदास करमचंद (अनु – पांडूरंग देशपांडे) विधायक कार्यक्रम – नवजीवन प्रकाशन मंदीर, अहमदाबाद ऑगस्ट 2000

4) डॉ. ग0. ना. जोशी – म. गांधी विचार विमर्श – मॅजेस्टीक प्रकाशन पूणे.

5) माहीती आणि जनसंपर्क महासंचालनालय मुबंई – लोकराज्य असो. 2010

6) जे. आर. कोकाडकर – गांधीजी राष्ट्रपीता आणि महात्माा – भारतीय विद्याभवन प्रकाशन दिल्ली.

7) महात्मा गांधी – माझ्या स्वप्नातील भारत – परमधाम प्रकाशन वर्धा.

8) भाऊ धर्माधिकारी (संपा) – गांधी विचार दर्शन – म. गांधी स्मारक निधी पूणे.

9) डॉ. पंजाब चव्हाण (संपा) – मुल्यव्यवस्था : गांधी विचार – निर्मल प्रकाशन नांदेड 2010

प्रा. रमेश सोनवलकर (म. गांधी चा स्त्रीवाद) 2010

10) डॉ. पंजाब चव्हाण (संपा) मुल्यव्यवस्था : गांधी विचार

डॉ. यु. डी. सावंत (म. गांधी – स्त्रियासंबधी विचार)

डॉ. सुनिल इंगळे (म. गांधी – स्त्रीवाद)

11) डॉ. शैलेंद्र देवळणकर – समकालीन जागतिक राजकारण – विद्या बूक्स पब्लीकेशन,औरंगाबाद

12) प्रा. वि. ल. एरंउे – भारतीय लोकशाही अपेक्षा आणि वास्तव निर्मल प्रकाशन नांदेड

Gandhian Economics and Sustainable Development Goal 2030

Dr. Kajalbaran Jana
Assitant Professor
Department of Commerce
Tamralipta Mahavidyalaya
E-mail- jakajalbaran@yahoo.com
Mobile- 08538014131

Abstract

Mahatma Gandhi itself did not write or discuss anything particularly on economics but his thought has definitely some economic orientation as social concept cannot withstand without economics. His followers and close persons identified economic value of his thought which is known as Gandhian Economics. J.C. Kumarappa mainly termed Gandhiji's economic thought as Gandhian Economics. Gandhian philosophy of Swaraj, Sarvodaya and his view as identified by Kirti Shailesh in its book as Gandhian economic views in fifteen points as Economic Laws,. Non-Violent Economy**,** Decentralisation, Cottage Industries**,** Khadi Industry, Use of Machines, Regeneration of Villages or Village Sarvodaya, The Trusteeship Doctrine, Law of Bread Labou**,** Food Problem, Population, Prohibition, Labour Welfare, Simplicity, Exchange Economy, Untouchability which are closely connected with the sustainable development programme of United Nation's Sustainable Development Goal 2030 where 17 points are made to achieve within 2030 worldwide to achieve sustainable living of human being. As sustainable development is the long term development of human society that ensures ecological balances is to be sustained as modern development does not care for future but present delopment. The only point of difference that can be identified between Gandhian Economics and Sustainable Development Programme is that absence of global perspective in the Gandhian views. He stressed on Nationality rather Internationality. But sustainable development is impossible if not think globally as equity or equitable distribution of material object or knowledge material or idea cannot be confined by geographical boundary. If confined total balance will be under threat. Thus sustainable development is impossible. Here we can relate to Karl Marx views whose primary condition of equity is the distribution of wealth among people equally and globally. Otherwise Gandhian Economics has no such big difference with the Sustainable Development Goals(SDG) 2030 as set by United Nations. The ethical bonding of Gandhian Principle is one of the prime objects that can closely connect with human values to sustain everyone in the world. That makes big difference with materialistic concept which creates war, warfare, more wants, more desires and ultimately destabilizes the society and hampers sustainable development.

Key Words: Gandhian Economics, Sustainable Development, Equity, Materialistic View, Ethical View

Introduction

Gandhian economics is a school of thought that opposes so called rational classical economic principle of maximizing material self interest of human being. It has been based on some socio-economic principle which is guided by some moral and spiritual bindings. Whereas classical or westernized socio economic system based on satisfaction to the material interest or want and more want and more satisfaction, Gandhian theology indicates it as unsustainable and derogatory to human morale and well being. Rather he suggested satisfaction to the want or need means satisfaction to the community and society. The term 'Gandhian economics' was referred by J.C. Kumarappa, a close follower and supporter of Mahatma Gandhi, narrated that economic model should have a protectionist view to the downtrodden and it should be aimed towards well being of nation. Gandhi thus rejected the 'class war' in terms of socio-economic harmony and also 'scientific materialism' of Karl Marx for the betterment of the human being. Sustainable Development is the approach to development which seeks to generate present growth without in any way of disturbing and limiting the quality of life for future generations which has no big difference with the Gandhian view of development in narrow sense.

The Influence on Gandhian Thought

Gandhi was greatly influenced by the writing of John Ruskin and the American writer Henry David Thoreau. Gandhi followed Ruskin's 'Unto This Last' very deeply. From this book he learnt that -1.the good of the individual is the good of all; 2 White colour works has the same value with toiling work, and 3. the life of labour which is worth-living, Further Gandhi was inspired by the idea of Thoreau, Tolstoy and Kropotkin. Tolstoy's principles of simplicity, asceticism and equalitarianism engulf the Gandhi's philosophy. Not only that Gita and Upanishads and Indian saints Kabir, Mira, Nanak also greatly influenced Gandhi's thinking.

He wanted to fight against poverty, social backwardness of Indian people. So his call for '*Swadeshi*' and 'non-cooperation' were centred on the principles of economic self-sufficiency in the sense of Indian Independence Movement. He pointed out that European clothes and products were causes of unemployment of local people and thus threat to the livelihood of countrymen. The introductions of 'Khadi' clothing with home spun and Indian made product are not only the symbol of creating peaceful resistance against British ruler but also create national self sufficiency.

He led 'Civil Disobedience' or 'Satyagraha' and 'Tax Resistance' against mill owner and land owner supported by British Government to end oppressive tax imposition on the general masses with a aim to economic upliftment of them and curb poverty. The rebellions under him were committed to end cast oppression and various social oppression against women by the virtue of homemade product and clothes and food.

The 'Ashram' is one of the major contributors to the Gandhian theology. He and his followers developed numerous 'Ashram's in the country. The ashram is like so called 'commune' where the residents were use to engage themselves in producing clothes with home spun, product and food to promote the sense of equity and harmony among themselves. They used to construct their living places and farm houses with indigenous material easily available to them. The whole work was guided by 'trusteeship' which was made of democratically among the inhabitants of the ashrams. The whole action was governed by denying individual wealth and material persuasion of self interest.

Gandhi was very consciously averse to the notions of class warfare and class based revolution as mentioned by Karl Marx. According to him it is the cause social violence and disharmony. His view concentrated on the egalitarianism of prevention of human dignity instead of material development. Though many big business persons or industrialist like J.R. D. Tata, Ghanashyam Birla, Ambalal Sarabhai, Jamnalal Bajaj were followers of Gandhi by participating Gandhi's socio-political activities directly as well as implementing his idea in managing labour relations in their business.

The Principle behind Gandhian Thought

The Gandhian Thought has following underlying principles-

1. Satya (truth)
2. Ahimsa (non-violence)
3. Aparigraha (non-possession) or the idea that no one possesses anything

According to him Satya and Ahimsa were 'as old as the hills', and based on these two, he derived the principle of non-possession. Possession itself lead to violence as to protect own possessions and to acquire others possessions. He thus emphasizes on to restrict ones want or need to the basic minimum. By his own life he was portrayed by his thought as his worldly possessions were

just pair of clothes, watch, stick and few utensils. He advocated that these principle should be abide by all especially by the riches and industrialist as according to him they are held as trustee not owner of the wealth they possessed.

Economic Ideas of Mahatma Gandhi

According to the article Shared by Kirti Shailesh in "The Economic Ideas of Mahatma Gandhi"are-: 1. Economic Laws 2. Non-Violent Economy 3. Decentralisation: Cottage Industries 4. Khadi Industry 5. Use of Machines 6. Regeneration of Villages or Village Sarvodaya 7. The Trusteeship Doctrine 8. Law of Bread Labour 9. Food Problem 10. Population 11. Prohibition 12. Labour Welfare 13.Simplicity 14.Exchange Economy 15. Untouchability

1. Economic Laws:

According to Gandhi, economic laws which aim at material progress as well as social harmony and moral advancement, should be formulated according to the laws of nature. There is no conflict between the laws of nature and laws of economics. The laws of nature are universal and bind everything equally or equitably hence economic laws will be alike.

2. Non-Violent Economy:

Gandhi followed and advocated non-violence and hence his economics have been economics of nonviolence. The principle of non-violence is the principle of Gandhian ideology. As there was no industry and no activity without certain amount of violence, he wanted to minimize it. He believed that violence in any form germinates greater violence.

3. Decentralisation: Cottage Industries:

Gandhi opposed large scale industrialisation, as it was responsible for many socioeconomic evils. He believed that large scale use of machinery led to drudgery and monotony. He was in favour of decentralised economy. In such an economy, exploitation of labour would be nil. His belief was strong in the context of the Indian economy. India has plenty of human resources but capital supply was poor, therefore labour intensive technology should be followed. Gandhiji advocated a decentralised economy as it ensures distribution of labour and power as well as idea and skills.

4. Khadi Industry*:*

According to him every Indian needed at least 13 yards of cloth per year. Gandhiji believed that multiplication of mills could not solve the problem of cloth supply; therefore he stressed the development of Khadi industry. For Gandhiji, khadi was the "symbol of unity of Indian humanity of its economic freedom and equality". Khadi means the decentralisation of production and distribution of the necessaries of human life. Khadi movement began only after Gandhiji's return from South Africa.

5. Use of Machines:

Gandhiji described machinery as 'great sin'. He believed that the modern technology was responsible for human frustration, violence and war. It was also responsible for the multiplication of material wants. The use of machines created a class of wealthy people and led to unequal distribution of wealth. Again, Gandhiji was not totally against machinery. He says "the spinning wheel itself is a machine; a little toothpick is a machine, what I object to is the craze for labour saving machinery. Men go on saving labour, till thousands are without work and thrown on the open streets to die of starvation". But he was against all destructive machinery. He welcomed

such instruments and machinery that saved individual labour and lightened the burden of millions of cottage workers.

6. Regeneration of Villages or Village Sarvodaya:

Gandhiji evolved the ideal of Village Sarvodaya. Speaking about the old village economy, Gandhiji said, "Production was simultaneous with consumption and distribution and the vicious circle of money economy was absent. Production was for immediate use and not for distant markets. The whole structure of society was founded on non-violence." This is the Sarvodaya of people.

7. The Trusteeship Doctrine:

Gandhiji remarked that the capitalist who had gathered a large sum of money was a thief. If a person acquired money and wealth inheriting he would not have the ownership but the care taker of fund and fortune only. It belongs to everyone in the society and must be spent on the welfare of all. He wanted stability of economic equality by refraining every types violent activity or revolution. He wished the capitalists to be trustees and he enunciated the doctrine of trusteeship.

8. Law of Bread Labour:

The Law of Bread Labour was introduced by T.M. Bondaref and popularized by Ruskin and Tolstoy. This law emphasises that man must earn his bread by his own toil and labour. To Gandhiji the law of bread labour related to agriculture only. But as everyone was not a cultivator, he could earn his bread by doing some other work in this capacity.

9. Food Problem:

Gandhiji witnessed the worst famine of his life during 1943-44, when Bengal suffered heavily with immense starvation owing to the country-wide shortage of food. Initially, Gandhiji thought that this scarcity of food had been artificially created by the hoarder. But after visiting Madras, Bengal and Assam, he arrived at the conclusion that the shortage of food was real and not artificial and stressed on increase of food production.

10. Population:

The most important matter of concern that attracted the attention of Gandhiji was the rapid increase in population. He opposed the use of contraceptives as its use in India would make the middle class male population imbecile. He was in favour of birth control through self-control or brahmacharya and discurd artificial methods. He considered self-control as the "infallible sovereign remedy" in controlling population.

11. Prohibition:

According to Mahatma, the use of tea, coffee, tobacco, and alcohol was detrimental to the human mind, body and soul, the use of liquor was a disease like matter in the society. He had no objection in using alcohol under medical advice. He preferred India to be reduced to a state of pauperism than have 'thousands of drunkards in our midst'.

12. Labour Welfare:

One of the important fields where Mahatma Gandhi's view of economic equality was concentrated was the factory. He saw that workers were bound to follow inhuman work schedule and subject to huge tyranny in their livelihood. He was painful toward child labour and considered it as societal degradation of human. He always pleaded for shorter hours of work and more leisure so that workers can survive meaningfully. He also demanded safety measures inside every factory. He laid emphasis on the welfare of the worker, his dignity and proper wages. In

the 'Harijan' dated June 9, 1946 he wrote that all useful work should bring to the worker the same and equal wages. Until then, he stressed on minimum living wages for worker so that a family of 4 to 6 members might live a human life. He wrote as far back as 1920 that the worker should get more wages with less work to do so that they have — clean house, clean body, clean mind and a clean soul.

13. Simplicity:

Mahatma Gandhi always was against the multiplication of human wants. In order to lead a simple life — he pointed out to give up immorality, untruth and political gain. He eventually succeeded in complete renunciation of human soul. He firmly believed that Western materialism and industrialisation had increased human wants and greed. He always pleaded for a simple life, life of plain living and high thinking, so that the requirements of such a life could be satisfied easily.

14. Exchange Economy:

Gandhian idea on exchange economy is based on the swadeshi spirit. Every Indian village should be a self-supporting and self-contained unit and exchanging only necessary commodities with other villages where they are not locally producible. The person who has accepted the discipline of swadeshi would never consider physical discomfort or inconvenience caused by the non-availability of certain things which he has been using. He was prepared to buy from other countries those commodities (like watches from Switzerland, surgical instruments from England, etc.) which were essential; but he was not prepared to buy cotton of the finest variety from England or Japan or any other country of the world because its importation caused the ruin of the home industry – it had harmed the interests of the millions of weavers in this country.

15. Untouchability:

Gandhiji believed that untouchability was a sin against God and mankind. It was "like poison slowly eating into the very vitals of Hinduism". It degraded both the untouchables and the touchable. He felt "Swaraj had no meaning if about 4 crores of people were kept under prepetual subjection; and were deliberately denied the fruits of their labour and national culture." To him, "untouchability was not only part and parcel of Hinduism but a plague which every Hindu should try to combat". He admitted that as it was long been inherited can't be easily quashed or abolished but relentless trial could minimize and ultimately eradicate. He held that if "some shastras had given sanction to it, it was a sin committed by Hinduism; this sin must be removed".

The Ethics and Gandhian Economy

According to Gandhian economics there is no difference in ethics and economics. Any economic activities which are immoral are considered as sinful activities. The value of industry is strictly depends on the value of its entire stake holder including general masses. The basic principle of Gandhian thought is plain living and high thinking. It enables every one self reliant and limited need or want. There should be a clear distinction between 'standard of living' and 'standard of life' where former stressed on material contents of living whereas latter stressed on quality of living.

Secondly, the stress on small scale and locally oriented production, using local resources and meeting local needs which creates employment opportunities available everywhere, promoting the idea of Sarvodaya – the welfare of all, in contrast with the welfare of a few. He favoured labour intensive technology instead of labour saving technology to increase employment

opportunities. He also emphasised dignity of labour, and criticised conventional attitude toward contemplating manual labour. He rather insisted on 'bread labour' by everyone.

The third principle of Gandhian economic thought, known as trusteeship principle, here he considers that an individual or group of individuals is free not only to make a decent living through an economic enterprisal activities but also to accumulate their surplus wealth above their basic needs and investment, should be held as a trustee for the welfare of all, particularly of the poorest and most deprived in the society. These three principles mentioned above, when followed, are surely ensure equality and justice in the society and thus make 'sarvodaya'.

The Sustainable Development Goal (SDG)

Sustainable Development is the approach to development which seeks to generate present growth without in any way of disturbing and limiting the quality of life for future generations The Sustainable Development Goals (SDGs), officially known as **Transforming our world: the 2030 Agenda for Sustainable Development is a set of 17 "Global Goals"** with 169 targets between them. It is a vision step undertaken by United Nations in its working papers during its summits of world community.

Wu Hongbo, Under-Secretary-General for Economic and Social Affairs,United Nations, said, "...Nations must now focus on implementing the 2030 Agenda for Sustainable Development, he said, stressing the vital role the United Nations system and relevant bodies would play. He emphasized the importance of coherent and integrated policies, calling on Member States to provide clear guidance for the United Nations development system".

The Goals that set are as follows-

	17 Sustainable Development Goals
Goal 1	End poverty in all its forms everywhere
Goal 2	End hunger, achieve food security and improved nutrition and promote sustainable agriculture
Goal 3	Ensure healthy lives and promote well-being for all at all ages
Goal 4	Ensure inclusive and equitable quality education and promote lifelong learning opportunities for all
Goal 5	Achieve gender equality and empower all women and girls
Goal 6	Ensure availability and sustainable management of water and sanitation for all
Goal 7	Ensure access to affordable, reliable, sustainable and modern energy for all
Goal 8	Promote sustained, inclusive and sustainable economic growth, full and productive employment and decent work for all
Goal 9	Build resilient infrastructure, promote inclusive and sustainable industrialization and foster innovation
Goal 10	Reduce inequality within and among countries

Goal 11	Make cities and human settlements inclusive, safe, resilient and sustainable
Goal 12	Ensure sustainable consumption and production patterns
Goal 13	Take urgent action to combat climate change and its impacts*
Goal 14	Conserve and sustainably use the oceans, seas and marine resources for sustainable development
Goal 15	Protect, restore and promote sustainable use of terrestrial ecosystems, sustainably manage forests, combat desertification, and halt and reverse land degradation and halt biodiversity loss
Goal 16	Promote peaceful and inclusive societies for sustainable development, provide access to justice for all and build effective, accountable and inclusive institutions at all levels
Goal 17	Strengthen the means of implementation and revitalize the global partnership for sustainable development

The SDGs and Gandhian Economy- the Corollary

If we closely interpret each of the Gandhian Economic Thought and Sustainable Development Goals 2030 agenda one by one we can easily reciprocate with the objectives of the both. The overall sustainable development is the main theory of Gandhian Thought. The only absence that can be noticed in Gandhian theology is the absence of global partnership of sustainable development and modern look of development activities in present scenario. Others are almost identical by objectives.

The Conclusions

The Gandhian Economic Thought and Sustainable Development Thought is one of the inseparable ideas except global phenomenon. Gandhian thought envisage in the national boundary as he never considered the global perspective of development which is considered by Karl Marx in his work. In assessing Gandhian thought, one should agree with the Gandhian postulates or not. If any critic agrees with simplicity, non-violence, decentralisation and ethical and moral considerations which form the basis of the Gandhian ideas, he would probably find that entire system of Gandhian thought is very logical. Otherwise, the traditional economist will find that Gandhian thought is extremely lacking in concurrence on such modern issues as public finance, the problems of defence and international trade, monetary management and economic planning. In Gandhi's economics, there is a fundamental postulate that all countries would be organised on the non-violent pattern. Whether such a situation is practicable or not, is quite a different matter. At last we may conclude by quoting-

"The earth has sufficient resources to satisfy one's needs, but not for one's greed."
- M. K. Gandhi

References:

1. Anthony Parel, ed., *Gandhi, Freedom, and Self-Rule* (2000) p 166
2. B. N. Ghosh, *Gandhian political economy: principles, practice and policy* (2007) p. 17

3. Bidyut Chakrabarty (2006). Social and political thought of Mahatma Gandhi. Routledge. p. 138. ISBN 978-0-415-36096-8. Retrieved 25 January 2012.

4. Economic Discussion paper, retrieved in Google .Com on 25.05.17

5."Global Monitoring Report; Development Goals in an Era of Demographic Change"(PDF). www.worldbank.org/gmr. Retrieved 4 April 2017

6. Jagannath Swaroop Mathur, *Industrial civilization & Gandhian economics* (1971) p 165

7. Jesudasan, Ignatius. A Gandhian theology of liberation. Gujarat Sahitya Prakash: Ananda India, 1987, pp. 236–237

8. Kirti Shailesh, Economic Ideas of Mahatma Gandhi, Google.Com retrieved on 25.10.17

9. Kumarappa, Joseph Cornelius (1951). Gandhian economic thought. Library of Indian economics (1st ed.). Bombay, India: Vora. OCLC 3529600. Retrieved 7 August 2009.

10. Romesh K. Diwan and Mark A. Lutz, *Essays in Gandhian economics* (1987) p. 25

11. *Susanne Hoeber, Rudolph (1963). "The New Courage: An Essay on Gandhi's Psychology". World Politics.* ***16*** *(1): 98–117. JSTOR 2009253.*

12. Snow, Edgar. *The Message of Gandhi*. 27 September March 1948. "Like Marx, Gandhi hated the state and wished to eliminate it, and he told me he considered himself 'a philosophical anarchist.'"

13.Wikipedia retrieved in Google.Com on 22.05.17

चम्पारण सत्याग्रह की 100वीं वर्षगाठ के अवसर पर
(महात्मा की याद : अनुश्व एवं यर्थात)

डॉ0 अजय कुमार
(आई0सी0एस0एस0आर0)
पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो समाजशास्त्र विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ (समाज विज्ञान)
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, (केन्द्रीय विश्वविद्यालय),
Email: - ajayksociobbau@gmail.com, ajjuanam@rediffmail.com
Mob.No. 09415159762

महात्मा की याद : एक कैदी महात्मा

हाँ,, गांधी आप कैद हैं। हां, महात्मा आप कैद हैं। हां, बापू आप कैद हैं। आप कैद हैं साबरमती में, आप कैद हैं, वर्धा में। आप कैद है, चम्पारण में। आप कैद है दिल्ली में। आप कैद हैं राज्यों की राजधानियों में। आप कैद हैं शासकीय संचिकाओं में। आप कैद हैं अपने शिष्यों, अनुयायियों के हाथ। आप कैद है अध्ययन केन्द्रों, शोध संस्थाओं में। आप कैद हैं नौकरशाहों के हाथ। महात्मा, आप कैद हैं महाविद्यालयों के प्राचार्यों के कक्ष में। बापू आप कैद हैं 02 अक्टूबर से 30 जनवरी के बीच। बापू, आप कैद है दाण्डी में, खेड़ा में। आप कैद हैं नवारवाली में। महात्मा, आप कैद हैं महात्मा सेतू पर, आप कैद हैं चरखा में, आप कैद है खादी ग्रामोद्योग की दुकानों में, स्टॉलों पर। महात्मा, आप कैद हो राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री के संदेश में, विज्ञप्ति में। महात्मा आप कैद हो सर्वधर्म भजनों में। आप कैद हैं सर्व सेवा संघ प्रकाशनों में, आप कैद हो संग्रहालयों में आप कैद हैं स्मृति भवन में। महात्मा, आप कैद हो पद यात्राओं में, पत्रिकाओं में। महात्मा, आप कैद हो किसी राजधानी में, महात्मा गांधी मार्ग पर, किसी शहर में गांधी चौक पर, किसी राज्य में गांधीनगर में, गांधीपुरम में।

हे महात्मा, हे बापू, हे राष्ट्रपिता, हे साबरमती के संत, हे वर्धा के कर्मयोगी, हे चम्पारण के योद्धा ! मैं प्रबुद्ध हो गया हूँ और किताबों में आपको तलाशने लगा, क्योंकि मैं जब इस धरती पर आया तब तक आप हम सभी को एंव देश छोड़कर देवलोक जा चुके थे या आपको भेज दिया गया था? महात्मा, किताबों के माध्यम से मैंने आप में एक आकर्षण पाया और अंततः खादी ने मुझे अंगीकार कर लिया। मगर, आज जब भी खादी पहनकर निकलता हूँ "तो लोगों की नजरों में शसंकित हो जाता हूँ?" हे महात्मा मुझे तो लगता है कि आपको इस देश ने कैद कर डाला है।

महात्मा, आपको इस देश ने क्यों कैद कर दिया? महात्मा, आप क्यों कैद है? महात्मा, क्या आपको आजाद भारत में कैद ही पसंद है, महात्मा क्या इस कैद में आपको कोई पीड़ा नहीं होती है? सुख की अनुभूति होती है क्या? महात्मा इस कैद में आप अपने को सहज महसूस करते हैं क्या? महात्मा आपको अपने शिष्यों ने प्रदेश की राजधानियों में, देश के राजधानियों में विश्वविद्यालयों के पीठों में, शोध संस्थाओं में क्यों कैद कर डाला? महात्मा आपके नाम पर स्थापित ये सारी संस्थायें, आपके नाम पर स्थापित मार्ग, पीठ, शोध संस्थाओं में क्यों कैद कर डाला आपको, महात्मा आपके नाम पर स्थापित ये सारी संस्थाएं, आपके नाम पर स्थापित मार्ग, पीठ, शोध संस्थाएं सबके सब नगरों और महानगरों में ही अवस्थित हैं यानी आप कैद हो इंडिया में, न्यू इंडिया में? मगर महात्मा आपने तो बात की थी भारत की, आपने कभी कहा था "भारत की आत्मा गाँव में बसती है"। महात्मा आप बता सकते हैं कि आपने जिस गाँव रूपी भारत की बात की थी उन गाँव तक आपके शिष्य, आपके अनुआयी क्यों नही आपको ले गये? साठ–पैंसठ सालों के बाद यदि देश की लोकशाही, नौकरशाही, आधे–अधूरे मन से मनरेगा के नाम से ली भी गई तो इस मनरेगा के दशा–दिशा की कोई खबर है आपको? महात्मा आप माने या न मानें, आपके शिष्य मानें या न मानें, आपके अनुयायी मानें या न मानें, आपके विशेषज्ञ मानें या न मानें, आपके नाम पर स्थापित शैक्षिक संस्थायें मानें या न मानें यह एक कड़वा सच है कि आपको भी आपके नगरीय या महानागरीय शिष्यों ने इण्डिया में ही अलग–अलग नाम से

संस्थाओं में आपको कैद कर डाला? महात्मा, आपको बताना होगा कि आप इण्डिया के वाहक हो या भारत के? महात्मा आप माने या न माने लेकिन आपका गाँव, आपका भारत संकट में है। महात्मा आपके सपनों का भारत आज ग्रस्त है भूख से, गरीबी से, बीमारी से, अंधविश्वास से, अशिक्षा से, बेरोजगारी से, सामाजिक उत्पीड़न से। महात्मा आपके सपनों को भारत की बहू–बेटियों की इज्जत सुरक्षित नहीं है। वंचितों की बेटियों की इज्जत सुरक्षित नहीं है। वंचितों की बेटियों और बहुओं के साथ कहीं सामूहिक बलात्कार है, तो कहीं स्कूल जा रही किशोरियों को राह से उठा लिया जाता है, और फिर किसी को पता नहीं चलता है कि वो किस पाताल में चली गईं। महात्मा, भारत में आपके किसान क्यों विवस हैं? आत्म हत्या करने पर, महात्मा, आपके भारत के छोटे किसान, सीमांत किसान, खेतीहर मजदूर क्यों बनते जा रहे हैं। महात्मा, आपके भारत के गाँव में पोखर, ताल–तलैया क्यों सूखते जा रहे है? महात्मा, आपके भारत के गाँव में जल स्तर क्यों साल दर साल नीचे जा रहे हैं? महात्मा, क्या पानी के अभाव में कोई सभ्यता, कोई संस्कृति परवान चढी है क्या? महात्मा, आपके भारत के गाँव से युवा क्यों पलायन कर रहे हैं? महात्मा, आपके भारत के गाँव का यह युवा भविष्य क्यों नगरों–महानगरों में मजबूर हैं अपने श्रम को सस्ते में बेचने को? महात्मा, आपके भारत का यह युवा जब नगरों और महानगरों से वापस अपने गांव लौटता है तो क्यों टी0वी0 की बीमारी लेकर लौटता है? क्यों सांस फुलने की बीमारी लेकर लौटता है? क्यों जॉडिस लेकर लौटता है? महात्मा, क्या आपको पता है कि आपके भारत के लाखो–लाख गाँव में जो बच्चे हैं उनके पास बचपना क्यों नहीं है? इनके पास बाल–पन की अटखेलियाँ क्यों नही हैं? महात्मा, क्या आपके गाँव रूपी भारत को ''इज्जत की जिन्दगी और दो जून की रोटी नहीं चाहिए क्या''? क्या आपके सपनों के गाँव में'' तथाकथित मनरेगा के झुनझुने से होरी, धनिया, विजय जैकब हरकू, मांझी, रजिया खातून, मनोहर महतो, महेन्द्र तिरकी, रूपलाल मांझी को ''दो जून की रोटी और इज्जत की जिन्दगी मिल जाती है? महात्मा, बुद्ध की धरती, सूफी संतों की धरती, साझी विरासत की धरती बेंगटा चमार की धरती, कारू खिरहर की धतरी, सहलेश की धरती, पीर अली की धरती, कुँवर की धरती, नागाअर्जुन की धरती, रेणु, दिनकर की धरती, पीर मुहम्मद मोनीस की धरती, राजकुमार शुक्ल की धरती, बत्तख मियाँ की धरती, मजहरूल की धरती, जे.पी. की धरती, राजेन्द्र प्रसाद की धरती, कपूर्री ठाकुर की धरती, रामनरेश राम की धरती के किसान, मजदूर, नौजवान, युवा–युवतियाँ अर्द्ध बीमार बच्चे चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी के इस अवसर पर आपसे विनती करते हैं, आपसे आग्रह करते हैं, आपसे निवेदन करते हैं, मन्नत करते हैं कि हे बापू, हे राष्ट्रपिता हमें बताओं कि ''आपके सपनों के भारत के अच्छे दिन कब आयेंगे? इनके लिये सबका साथ सबका विकास कब साकार होगा? इनके लिए न्याय के साथ विकास पुनः एक शब्द जाल ही बनकर रह जाएगा क्या? महात्मा, आपको इन सवालों पर कुछ सोचना चाहिये। कुछ बोलना चाहिये, कुछ करना भी चाहिये। महात्मा, यदि आपको डर हो कि फिर से भारत में जाऊँ और लोगों की दशा को देखूँ, उनकी दशा पर बोलू या भारत के जनों के लिये कुछ करूँ तो एक बार फिर से देश एक ''नव राष्ट्र पिता की उपाधी तो आपको दे देगा मगर साथ ही आपको फिर से गोली भी मार देगा क्योंकि पिछले जन्म में देश ने राष्ट्रपिता तो कहा लेकिन'' पुनः गोली भी मार दिया''।

महात्मा, आपसे निवेदन है कि तत्काल आप भावना में आकर भारत में पूनर्जन्म मत लेना बल्कि हो सके तो एक पत्र के माध्यम से अपने तीन शिष्य बन्दरों जो सत्तर साल से आँख बन्द किये हुए हैं, कान बन्द किये हुये हैं और मुँह बन्द किये हुए है उनसे जानो कि जो व्यथा हमने आपको सुनाई है वह सच है या नहीं? उनसे पता कर लें कि बुद्ध की धरती के ये कुछ सिरफिरे युवा फिर तुम्हारे चम्पारण सत्याग्रह के दो सौ साल पूरा होने (2117) तक इंतजार करें या अपने लिये कोई वैकल्पिक मार्ग ढुढ़ कर अपनी लड़ाई अपने ही वर्ग के सामूहिक नेतृत्व में लड़ने की तैयारी करें? हे, महात्मा आखिर इस देश में कब तक आपके नाम की रोटी बेली जायेगी, सेकी जाएगी और इस रोटी का खेल खेला जायेगा। आपने जिस भारत की

कल्पना की थी उसके अंतिमजन जिसकी बात आप कर चुके हैं आखिर कब तक दो जून की रोटी और इज्जत की जिन्दगी के लिए अंतहीन प्रतीक्षा करते रहेंगे?

महात्मा की याद : अनुश्व एवं यर्थात

महात्मा के चम्पारण में.....(एक)

महात्मा जी, संभवतः आपको खबर तो लग ही गई होगी कि देश आपके चम्पारण सत्याग्रह का एक सौ साल मना रहा है। सरकारें, संगठन, नागरिक समाज अलग–अलग तरीके से आपको याद कर रहा हैं। आपके नाम पर विभिन्न प्रकार का आयोजन हो रहा है। साथ ही साथ, इन आयोजनों के आयोजकों द्वारा अपनी छवी भी बनाई जा रही है। ऐसे–ऐसे लोग, ऐसे–ऐसे संगठन, संस्था सामने आ रही हैं, आपको याद कर रही हैं, लगता है आप उनके लिए फिर से कोई जादू का पिटारा खोल देंगे और ये आयोजक, ये लोग इसकी सीढ़ीयों पर चढ़कर आपके नाम पर सत्ता के गलियारे में कुछ मोल–जोल कर पद सुख प्राप्त कर लेंगे। इसी के साथ–साथ सरकारें भी आपके दर्शन, आपके विचार पर आधारित शोध संस्थानों, गाँधीवादी मठों, संगठनों से खोज–खोज कर वक्तव्य दिलवा रही है। शोध पत्र लिखवा रही हैं और यश कमाने के लोभ में अपना झंडा बुलंद किये हुए हैं। इन सरकारी एवं गैर सरकारी आयोजनों, विमर्शों, सेमीनारों को देखकर लगता है ''महात्मा आप भी एक बिकाऊ'' चीज बन गए हैं या बना दिए गए हैं। हम जैसे सिरफिरों को कभी–कभी लगता है कि यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि आपके चम्पारण सत्याग्रह के एक सौ साल आयोजन के पीछे जो भी जीव–जन्तु हैं सभी के सभी आज के ''बाजार अर्थ व्यवस्था'' के प्रत्यक्ष या परोक्ष वाहक ही हैं। महात्मा, कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि वर्त्तमान बाजार, अर्थ व्यवस्था में सारी चीजें एक ''उत्पाद'' बनकर रह गई है। इसलिए आपके शुभचिंतकों ने भी, आपके विशेषज्ञों ने भी, आपके शिष्यों ने भी आपको एक ''उत्पाद'' मान लिया है।

महात्मा, आपके योगदान, आपकी प्रासंगिकता, आपके संघर्ष, आपके प्रयोग को समझने, पढ़ने एवं जानने की कोशिश हम जैसे कुछ सिरफिरों ने भी की। महात्मा, आपको बताता चलूँ कि हम आजाद भारत के या यूँ कहें कि भारतरूपी एक युवा लोकतंत्र के वह पौध हैं, जिन्होंने 80 के दशक के आसपास आप या आप जैसे सामाजिक विद्रोहियों को समझने की कोशिश कर रहे हैं। इस क्रम में हम लोगों ने महात्मा आपको किताबों, शोध पत्रों, आप पर लिखे गए निबंध, आलेख, आपकी आलोचना को पढ़ने की कोशिश की। इस क्रम में एक बात समझ में आई कि महात्मा आपने चम्पारण सत्याग्रह एवं प्रवास के दौरान जो भी किया या करने की कोशिश की वह एक साझा प्रयास था। आपके इस साझा प्रयास यानि आपके चम्पारण आन्दोलन में उस समय के अनेकों लोगों ने आपके कंधे से कंधे मिलाकर अंग्रेजों के खिलाफ आवाजें बुलंद की। आपके इस साझा प्रयासों में आपको उस समय के वकीलों का साथ मिला, पत्रकारों का साथ मिला, किसानों का साथ मिला। मगर, इस क्रम में महात्मा आपने मजदूरों और महिलाओं का आंशिक साथ लेने की कोशिश की? आपके इस शोध एवं अध्ययन से मुझे यह जानकारी मिली कि महात्मा आपके चम्पारण आन्दोलन एवं चम्पारण प्रवास के दौरान आपके एक शुभचिन्तक ''बत्तख मियाँ'' भी थे। कहा यह जाता है कि बत्तख मियाँ उस समय अंग्रेजों के खानसामा (रशोईया) थे। कहा जाता है कि यह अंग्रेजों ने उनपर दबाव डाला कि ''बत्तख मियाँ'' भोजन के समय आपको दूध में जहर मिलाकर दे दें। कुछ जानकारियाँ कहती है कि बत्तख मियाँ ने एक स्वांग रचा और दूध का दो ग्लास जिसमें एक में जहर था और दूसरा बिना जहर वाला आपके सामने परोस दिया और इशारों में आपको संकेत कर दिया कि किस गिलास का दूध पीना है किस गिलास का दूध नहीं पीना है। इस प्रकार बत्तख मियाँ ने आपकी जान बचा ली।

महात्मा, एक बात समझ में नहीं आती है कि आपके चम्पारण सत्याग्रह और प्रवास में उस समय के बड़े–बड़े वकीलों, जमींदारों, बड़े किसानों का उल्लेख तो काफी मिलता है, किन्तु बत्तख मियाँ जैसे (अधीनस्थों) साधारण व्यक्ति का कोई उल्लेख नहीं मिलता है? आपके चम्पारण सत्याग्रह के अनेकों सहकर्मियों पर काफी शोध, किताबें लिखी गई उनमें से बहुतों को आजाद भारत में पद, प्रतिष्ठा, सम्मान

मिला, लेकिन एक साधारण परिवार के गरीब का बेटा बत्तख मियाँ जिन्होंने आपकी जान बचाई जिनपर कोई शोध पत्र, किताबें किसी ने नहीं लिखी? महात्मा, आखिर ऐसा क्यों? महात्मा क्या आपका आन्दोलन और सत्याग्रह केवल बड़े जमीन्दारों की सम्पत्ती बचाने को था या गरीब–गुरबा को भी मुख्यधारा एवं सामाजिक नेतृत्व में लाने का भी था?

महात्मा, जिस बत्तख मियाँ ने आपकी जान बचाई उनके गाँव अजगढ़ी की दास्तान आपको सुना रहा हूँ, आप सुनेंगे? पूर्वी चम्पारण जिला मुख्यालय, मोतिहारी से लगभग 20–25 किलो मीटर बंजरिया प्रखण्ड के इस अजगढ़ी गाँव पहुँचने का अनुभव बड़ा ही कष्टदायक, पीड़ादायक था। आप मानें या न मानें, आपके शिष्य मानें या न मानें, आपके विशेषज्ञ मानें या न मानें आपके नाम पर सत्ता सुख पाने वाले माने या न माने, लेकिन इस अजगढ़ी गाँव के लोग अनाम जीवन जी रहे हैं। जिला मुख्यालय से अजगढ़ी पहुँचने के लिए किसी व्यक्ति को कमर में ताकत नहीं हो तो खड़ंजा सड़क से गाड़ी में बैठकर भी सफर करना आसान नहीं है? अजगढ़ी की गलियाँ सुनसान, किसान परेशान, मजदूर रोजगार विहीन, कृषि के लिए सिंचाई का स्थायी साधन नहीं, लोगों के लिए पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं। अजगढ़ी का उत्क्रमित मध्य विद्यालय, विद्यालय परिसर, वर्ग कक्ष को देखकर ऐसा लगता है कि व्यवस्था ने यह निश्चय कर लिया है कि बत्तख मियाँ के गाँव के भावी भविष्य (बच्चें) को शिक्षा से बंचित ही रखा जाय। अजगढ़ी गाँव में डाक्टर नहीं, दवाई नहीं। महिलाओं की दशा तो पूछिये मत? अधिकांश बच्चे एवं बच्चियों कुपोषित यानी एक बीमार बचपना अजगढ़ी गाँव में परवान चढ़ रहा है। हद तो यह है कि अजगढ़ी गाँव के करबीस्तान में जहाँ बत्तख मियाँ एवं उनके बगल में उनकी पत्नी चिर निद्रा में सो रही हैं उस दस फीट जमीन पर एक छोटा सा उनका मज़ार भी बनाया तो इस अजगढ़ी गाँव का एक सामाजिक कार्यकर्त्ता अरविन्द पाण्डे ने। दुर्भाग्य कहा जाय या त्रासदी, दिल्ली या पटना में संविधान की सपथ लेकर संसद एवं विधान मंडल में बैठने वाले, राजनेताओं ने कभी ये नहीं सोचा कि चलो एक छोटे से स्मृति भवन या आदमकद मूर्ति बत्तख मियाँ के गाँव अजगढ़ी में भी स्थापित कर फीता काट दिया जाय? महात्मा क्या सतर साल युवा भारतीय लोकतंत्र के प्रवक्ताओं एवं शिल्पकारों पर आप कोई टिप्पणी करना चाहेंगे?

महात्मा, इसी गाँव में पता चला कि जिला मुख्यालय, मोतिहारी शहर में छतौनी बाजार में आपके नाम पर एक ऑडिटोरियम भी है। हम जिज्ञाशु बड़े उत्साहित होकर फौरन अजगढ़ी गाँव से छतौनी को चल पड़े इस विश्वास से कि शायद यहाँ बापू के सहकर्मी बत्तख मियाँ के बारे में कुछ इतिहास–भूगोल के बारे में पता चलेगा? मोतिहारी, बेतिया हाईवे पर स्थित छतौनी में बत्तख मियां ऑडिटोरियम परिसर देखकर एकबैक महात्मा मेरे मुह से निकल पड़ा ''हे राम''। एक ठोस खूबसूरत संफेद रंग का दो मंजिला भवन, आकर्षक ग्रील, खिड़की, दरवाजे लेकिन ग्रील पर ताला लटका हुआ। अगल–बगल झांकने से लगा कि ग्राउंड फ्लोर पर एक हॉल है, शौचालय है, कमरे हैं। साथ ही उपरी तल्ला पर संभवतः सभागार है। बत्तख मियां स्मृति भवन के परिसर में दो शिलालेख पट्टी है, जो भवन शिलान्यास और उद्घाटन की मोटी–मोटी जानकारी देता है। स्मृति भवन शिलान्यास एवं उद्घाटन शीला लेख से जानकारी मिलती है कि इस स्मृति भवन तत्कालिन मंत्री, श्रीमती रमा देवी एवं विधायक, मो० औबैदल्लाह (विधायक कैसरिया), सतीस पासवान

(विधायक पिपरा) के ऐक्षिक कोष से जिला प्रशासन ने बनवाया है, जिसपर आज ताला लगा है? इस बत्तख मियां स्मृति भवन में अन्दर इतिहास–भूगोल है कि नहीं यह कहना मुश्किल है महात्मा। क्योंकि स्थानीय लोगों ने बताया कि इसका चाभी लेकर न जाने कौन कहाँ चला गया है? तब से इस बत्तख मियां स्मृति भवन ग्रील पर एक बड़ा सा ताला लटक रहा है। स्मृति भवन का वाह्य परिसर देख–रेख के अभाव के कारण आंशिक जंगल हो गया है। महात्मा जी आश्चर्य तो तब हुआ जब यह देखने को मिला कि स्मृति भवन के पोटिकों के उपरी छज्जा पर बड़े–बड़े अक्षरों में ब्लू पेन्ट से लिखा है, सी०आर०पी०एफ० शिविर। स्थानीय महिलाओं ने बताया कि 11 अप्रैल, 2017 को बिहार के मुख्यमंत्री, मंत्री, विधायक यहाँ आने वाले थे, इसलिए सी०आर०पी०एफ० कैम्प को हटा दिया गया?

महात्मा जी आपका देश कैसा बना? महात्मा जी आप कहा करते थे कि ''भारत की आत्मा गाँव में बसती है'' लेकिन आपके शिष्यों ने, 02 अक्टूबर और 30 जनवरी को आपको याद करने वाले सत्ताधारियों ने भारत रूपी आत्मा (गाँव) जिसमें अजगढ़ी या अजगढ़ी जैसे लाखों लाख गाँव होंगे, उन्हें क्या दिया? यानी चलने को खड़ंजा नहीं, पीने को साफ पानी नहीं, मजदूरों को काम नहीं, जमीन के पट्टा पर दखल देहानी नहीं, महिलाओं को सम्मान नहीं। बच्चों के शिक्षा के नाम पर आधा–अधूरा स्कूल, किसानों को उनके अनाज का उचित दाम नहीं। महात्मा जी आप यह सवाल सतापक्ष और विपक्ष से पूछ पाएंगे? महात्मा, आपके अनुआयी, शुभचिंतकों ने बत्तख मियां के साथ ऐसा अन्याय क्यों किया? देश एवं प्रदेश के सामाजिक इतिहास से बत्तख मियां, शेख गुलाम, पीर मोहम्मद मोनिस, संत राउत, शीतल राय, लोमराज सिंह जैसे आपके सहकर्मियों को क्यों गुमनामी में रखा गया?

महात्मा की याद : अनुश्व एवं यर्थात
महात्मा के चम्पारण में ..... (दो)

हम जिज्ञासुओं ने अध्ययन एवं भ्रमण द्वारा गांधी को तलाशने के क्रम में जाना कि गाँधी जी ने 13 नवम्बर, 1917 को इसी गाँव में अपने विचारों के संदर्भ में एक स्कूल की स्थापना की जो, आज की तारीख में बुनियादी विद्यालय के नाम से राज्य सरकार द्वारा संचालित है।

माननीयों, गांधी विशेषज्ञों, गांधीवादी शोधकर्त्ताओं शायद यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि गांधी ने ऐसे बुनियादी विद्यालयों की श्रृंखला अपने कर्मभूमि क्षेत्र चम्पारण में क्यों शुरू की होगी? आप विद्धतजनों को, समाज के शिल्पकारों को, सुशासन के दृष्टताओं को क्या बताऊँ कि गांधी द्वारा वर्ष 1917 में स्थापित इस विद्यालय में 2017 को देखने पर कैसा लगा? बस इतना ही कह सकता हूँ, हे राम!

राम–राम! गांधी को उनके शिष्यों ने, उनके विशेषज्ञों ने, साथ ही गांधी के संघर्ष के बल पर मिली आजादी की सीढ़ीयों पर चढ़ते हुये सत्ता के इन रचनाकारों एवं नौकरशाहो ने गांधी के साथ न्याय किया या

ISSN No.2394-8426 with Impact Factor 2.254

अन्याय? समझ नहीं पाया? इस विद्यालय परिसर में घुमनें, खण्ड–खण्ड में विभक्त विद्यालय भवन एवं वर्ग कक्ष को देखने के क्रम में, विद्यालय के जीर्णोधार में लगे हुए मजदूरों, राजमिस्त्रियों, मेठों एवं आसपास के ग्रामीणों से चर्चा के क्रम में पता चला कि चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी के अवसर पर राज्य सरकार ने चम्पारण में स्थित सभी बुनियादी विद्यालयों के जीर्णोद्धार का निर्णय लिया है, एवं इसके लिए विद्यालय शिक्षा समितियों को राशि भी उपलब्ध कराई है। इसी उपलब्ध करायी गयी राशि से लखन सेन–बड़हड़वा बुनियादी विद्यालय का जीणोद्धार का काम चल रहा है। शायद, अन्य बुनियादी विद्यालय में भी चल ही रहा होगा? एक अवलोकनकर्त्ता के रूप में मैं समझ नहीं पाया कि लखनसेन–बड़हड़वा बुनियादी विद्यालय का यह जीर्णोंद्धार कार्य चल रहा है या खानापूर्ति? मसलन, जीणोद्धार कार्य में इस्तेमाल की जा रही सामग्रियों की गुणवत्ता से ऐसा लगा कि कुछ ही वर्षों के बाद जीणोद्धार के नाम पर बननेवाले भवन, कमरे, उसके अन्दर लगनेवाले टाईल्स, खिड़की, दरवाजे पुनः जीर्णशिर्ण अवस्था में ही आने वाले हैं?

लखन–सेन–बड़हड़वा, बुनियादी विद्यालय के परिसर में भ्रमण करते हुए हम जिज्ञाशुओं के ज़हन में एक द्वन्द्व चल रहा था कि यहां रुकूं, खंड–खंड विद्यालय परिसर एवं वर्ग कक्ष को बाहर ही से सही झांककर देखूं, वहां उपस्थित स्थानीय ग्रामीणों से बात करूं, विद्यालय परिसर में लगे माननीयों द्वारा विद्यालय के उन्नयन हेतु लगावाये गए जर्जर शिलान्यास–शिलालेख और उद्‌घाटन शिलालेख पट्‌टी को देखूं या यहां से रफू चक्कर हो जाऊं? खैर इस द्वन्द्व को थोड़ा पीछे करते हुये हम जिज्ञासुओं ने थोड़ा सा समय इस परिसर मे अवलोकनार्थ ही सही बिताने का निर्णय लिया। महात्मा की उनकी कर्मभूमि चम्पारण में यह दुर्गति होगी, यह कल्पना से परे बात थी? यह भ्रम टूटा। विद्यालय परिसर में, पूर्व में विद्यालय जीणोद्धार हेतु माननीयों का संगमरमर की पट्‌टी पर बड़े–बड़े अक्षरों में नाम तो है, शिलान्यास एवं उद्‌घाटन की तिथि एवं वर्ष तो है मगर

गांधी दर्शन पर आधारित बुनियादी विद्यालय की अवधारणा का कोई भी बुद–ओ–बाश (महक) देखने को नहीं मिला? महात्मा का करघा, रूई धुनने वाली धुनकी एवं अन्य सामग्रियाँ एक छोटे से कमरे में बंद करके संभवतः दीमकों के लिए खाद, पानी के रुप में विद्यालय प्रशासन ने परोस दिया है, साथ ही इस कमरे के दरवाजे पर उजले सफेद संगमरमर पट्‌टिका पर लाल–लाल अक्षरों में माननीयों के नाम अपनी बेबशी की एक लम्बी दास्तान संभवतः लोगों से कह रही हैं? निश्चित रुप में, बापू ने गरीब बच्चों की अर्थपूर्ण शिक्षा के लिए ही कल्पना की होगी और ऐसी बुनियादी तालीम के लिए इन स्कूलो की स्थापना की थी या की होगी? यदि इस दृष्टिकोण से लखनसेन–बड़हड़वा बुनियादी विद्यालय में मध्याह्न भोजन के रसोई घर को देखा जाय, खंड–खंड में बने वर्ग–कक्ष, अतिरिक्त वर्ग कक्ष, खेल का मैदान, शौचालय, पेयजल व्यवस्था (कुआँ) आदि को देखा जाये तो कोई भी व्यक्ति या समूह हो

जो गांधी से असहमत होकर भी उनके प्रति एक श्रद्धा रखता हो या उनके जीवन, योगदान एवं तपस्या को समझने का प्रयास करता हो तो शायद वह यही कहेगा :

''मस्जिद तो बनी ली शब (रात) भर में इमां की हरारत वालों ने
मन अपना पुराना पापी हैं, वर्षों में नमाज़ी बन न सका।

लखनसेन–बड़हड़वा, बुनियादी विद्यालय के भ्रमण, अवलोकन के किस–किस पहलू की चर्चा इस छोटे से रिपोर्ताज में की जाये ? बस चलते–चलते दो और दुखद प्रसंग की भी चर्चा कर ही दूँ। वह यह कि धन्य है व्यवस्था या शिक्षा प्रशासन जिसने गांधी को किताबों में तो पढ़ाया, 02 अक्टूबर और 30 जनवरी को इनकी पूजा भी की या करवायी मगर बापू द्वारा वर्ष 1917 में स्थापित इस विद्यालय को अबतक एक चहार दिवारी भी नहीं दी ? हद तो यह है कि ठीक नवनिर्मित विद्यालय खंड के पीछे वर्षों से एक ईंट–भट्ठा की चिमनी संचालित है। क्या किसी ने यह विचार किया या सोचा, चाहे स्थानीय समाज हो, जन प्रतिनिधि हों, शिक्षा प्रशासन हो या जिला प्रशासन कि इस ईंट–भट्ठा से बच्चों का हित हो रहा है या अहित? दूसरा, यह कि इस भ्रमण दल का यह सौभाग्य रहा या दुर्भाग्य, पता नहीं मगर यह भ्रमण दल जिस तिथि को यानि 2017 को यहाँ पहुँचा उस दिन विद्यालय बंद था क्योंकि रविवार था। स्वभाविक है कि विद्यालय में कार्यरत शिक्षक एवं प्रधान शिक्षक की पीड़ा, संकट, समस्याओं के बारे में कहना मुश्किल हैं। पता नहीं कार्यरत शिक्षक गांधी के मूल्यों से प्रेरित होंगे या समान काम के लिए समान वेतन की दुविधा में होंगे?

क्या, बिहार का नागरिक समाज, गांधी के इस चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी के अवसर पर इस विषय में कुछ बोलेगा? स्थानीय समुदाय आगे आयेगा? या एक मौन की संस्कृति में जीते हुए सब कुछ एक नियती समझकर खामोशी से गांधी के इस चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी के मौके पर अपने प्रान्त के लगभग 08 लाख विद्यार्थियों को इन्टर की परीक्षा में असफल होने की पीड़ा की तरह ही इस पीड़ा को भी झेल जायेगा? मौन की संस्कृति का आवरण ओढ़कर सब कुछ सह जायेगा? क्योंकि आज के बिहारी समाज की यह स्थिति, व्यवस्थागत संवेदनहीनता, ''सबका साथ–सबका विकास या न्याय के साथ विकास'' के सूत्रधारों से यह जड़ता निकट भविष्य में टूटने से तो रहा? संभवतः यही समय है कि इस जड़ता को कहीं न कहीं से, किसी न किसी रूप में एक मजबूत धक्का अवश्य दिया जाय। अर्थात–

कहीं से तोड़ खामोशी ये ऐसे मोड़ हैं साथी।
अगर उलझे रहे तो, सूख जाऐगीं सभी कलियां।।

Mahatma Gandhi's Thought on Education

Dr. H.S. Kuchekar,
T. K. Kolekar Art's & Commerce College, Nesari.
Tal. Gadhinglaj Dist. Kolhapur.
Mob.No. 9922346844

Introduction,

Gandhi, the father of our nation and of course a non-violent freedom fighter, gave the scheme on Indian education in 'Hind Swaraj" for modern india, which can also be very well called first manifesto on national education system. Gandhian concept and program me on education is job-centered, value based, it may be known as the first model of vocationalisation of education in India.

Non-violence was the fundamental mode of Gandhi's life and thought. Naturally his new educational concept was based on principal non-violence. Gandhi's thought's on education in 'Hind Swaraj' are helpful for character building.

Gandhi was neither as academician nor an educationalist in the rigid sense of the term, but his views on education could be high value to Indian education system at all times.

Gandhi's Educational ideas :

Gandhi focuses on important aspects of education in 'Hind Swaraj'. These aspects were meaning of education, objectives of education, medium of education, higher education, adult education and religious education, etc. Gandhi's educational aspects discusses the following points.

Meaning of Education :

Education mean's not only knowledge of letter but also education for mind, body and soul. Education be develops our body and personality. In his words, "Education means all round drawing out of the best in child and man's body, mind and spirit ". It is one of the means where by men and women can be educated. It shows that he was viewing education as a means for all round human development. He held the view that optimum enrichment and development of personality should be through education.

Feature of the Gandhian Education Concept :

Main features of the 'Gandhian Educational ideas are as follows:

1. **Free and compulsory education :**

   According to Gandhi, education should be free and compulsory for all boys and girls between the ages of seven and fourteen. But this does not mean that Gandhi was not aware of the need of pre-primary. Poor-Primary and adult education. In fact Gandhi's but particular emphasis has been laid on the education of the children between seven and fourteen years. In Gandhi's own word's.

   "Primary education, extending over a period o seven years or longer and covering all the subjects up to matriculation standard, except English plus a vocation used as the vehicle for drawing out the minds of boys and girls in all departments of knowledge, should take the place of what passes today under the name of primary, middle and high school education".

2. **Craft as the centre of Education :**

Education should be imported through some craft as productive work which should provide the nucleus of all the instructions provided in the school. In his own words.

"The core of my suggestion is that handicrafts are to be taught, not merely for productive work, but for developing the intellect of the pupils".

3. **Self supporting aspects of Education :**

The aim of the education in society is determined by the nature of society. Therefore, Gandhi wanted to make the individual and society both self-supporting by his scheme of education. As Gandhi himself put it, "You have to start with the conviction that looking to the needs of the villages of india, our rural education ought to be made self-supporting, if it is to be compulsory.

4. **Cult of non-violence :**

Gandhi's educational concept stands on two foundation pillars first is truth and second is non-violence. Non-violence was the fundamental mode of Gandhin's life, so his educational concept was based on non-violence principle. Gandhi believed in "God is truth and truth is God", but truth without non-violence is not truth but untruth for him.

5. **Education for inculcating Democratic Values :**

Gandhi wanted that the education should aim at training the children for leading corporate life based on social aspects of Democracy. They should learn to adjust themselves in the best manner with their social environment. A proper development of civic sense and adjustment with the surrounding would children, worthy citizens of the country.

Thus, we see that Gandhi's concept jof education in indigenous and based upon the social conditions and future needs of the country. The main function of education is to first the individual to play his role in the society in worthy manner.

Medium of Instruction:

The medium of instructions should be in mother tongue. A foreign language deprives them of the spiritual and social heritage of the nation and senders them to that exert unfit for the service of the country. Mother tongue being the simplest for any child is the easiest on to pick up.

Gandhi was is favour of regional languages as medium of instruction at all stages of education. He did not attach less importance to the study of English language. English would not be the medium of instruction in the primary school but would be taught as an optional language in the higher education. Also Gandhi rejected English as a medium of instruction at all stages of education. If English is accepted as a medium of instruction. It has many evil effects. The students have to bear undue strain. They would be robbed of their originality they only learn to crime and imitators are handicapped form taking up original work.

According to Gandhi, the national language of the india should be 'Hindi' with the option of writing it in Devnagari or in Person script. He put forth the following arguments is support of 'Hindi' as the national language.

1. It is easy enough to the people of Gujart, Maharashtra and Bengal, within a few months, they can have sufficient command over this language.
2. Hindustani is the language which is spoken by the Hindus and the Muslims with slight variation in the nor then india. While the learned Hindus have sanskritized Hindu which cannot be easily understood the Muslims, the Muslims of Lucknow

have personalized its which has becomes unites eligible to the hindus. Thus the and sanskritized and personized hindi represents two excesses of the same language. Simple Hindi, Hindustani is to be favored.

3. The religious, commercial , political and social activities can be carried out through out india through Hindi Medium.
4. It is easy for the officials to learn this language.

Gandhi's Educational Programme ;

Gandhi focused on three steps of educational programme in 'Hind Swaraj' fsirst is basic education second is Higher Education and Adult Education. Basic education is important step in Gandhi's Philosophy so these three steps are important in modern age.

Basic Education :

According to Gandhi, literacy in itself is no education, it is not the end of education. It is one of the means for round developments of the personality of child. The objective of the mind, the body and the soul of the child.

Gandhi recommended free, compulsory and self-supporting basis education. The basic education must be free so that it is within the reach of every one. They should establish, self-supporting educational institution which cut the very most of unemployment. When the boy comes out of the self-supporting school he must be an earning unity in the society. The course of basic education should be extended to seven year and should include the general knowledge gained up to matriculation standard plus a substantial vocation and less English.

Gandhi basic education system is based on rural requirements. Rural education should use rural instrumental as for as possible in importing education. Gandhi soon discovered that, literarycum vocation training is batter than vocation-cum literary training, knowledge is imported to the student through three means practical oral and alphabets. Gandhi recommended that the education of the children must begin with practical and oral instruction.

Post-Basic Education (Higher Education) ;

Higher educational institution should be established and expanded in accordance with national necessities. These institution's should be self-supporting, Engineering college should be attached to the industries and are expected to be self-supporting.

Gandhi visualized about higher education that the middle and upper classes are the main beneficiaries to the money contributed by the poor. What he has to say about primary education applies equally to his view of higher education.

Adult Education :

According to Gandhi, adult education should not bend with bare acquaintance with the alphabet. The education of illiterate adults should go hand is hand with the spread of the knowledge which is useful to the villagers in their daily life Arithmetic, Geography, History and other subject should be tough with a special reference to the village life and the village need-based education, the villagers would defiantly take interest in the adult education would Certainly view it as a useful treasure and pass it on to other.

Conclusion :

Gandhi's concept of education explain and analysis the basic assumptions, medium of instruction, basic and post basic education and adult education, plans a new system of education

(mean's "Nai Talim") for the society based on certain ideals. This system of education laid emphasis on agriculture, village industries and self employment.

Reference Book :

1. Gandhi, M.K. (2011), "*Hind Swaraji*", Publisher Datta Shinde, Gandhi Study Centre, Shivaji University, Kolhapur.
2. Parekh, Bhikhu. "Gandhi's Political Philosophy", Ajanta Publications, New Delhi.
3. Kumar, Harish. (2006), "*Gandhi : samajik, rajnaitik parivartan",* Arjun Publication house, New Delhi.
4. Kripalani, J.B. (1964), "Gandhi His Life and Thought", Publication Division, Gov. of India. Delhi.
5. Sangvai, Sanjay. "*Samkalin satygrahi sanghrshache nave rup",* Publisher, Gandhi Study Centre, Shivaji University, Kolhapur.
6. Misha, Anupam. (Ed) 1964, "Gandhi-Marg", Publication Gandhi shanty Pratithan, New Delhi.

Gandhian Economics And Trends Of Present Market Economy

***Dr. Neeru Sharma**

Abstract

In today's global world every aspect has come under direct influence of globalization. Globalization is mainly governed by prevailing dominant world politico-economic order. Broadly speaking 'globalization' means integration of economics and societies through cross-country flow of information, ideas, technologies, goods, services, capital, finance and people. It is a process through which global events values and ideas are localized in interpretation and outcome. The economic system or mode of production that dominates the contemporary world is capitalism. It is a market economy of free enterprise system neither of which tells us what we need to know. The phrase free enterprise is still less informative, this free market trend has created inequality among nations. Consumerism is one such feature that has permeated deeply in the society, economy and politics thereby, disturbing the ultimate peace that man strives for. In the backdrop there is an ongoing search to provide alternative approach to deal with negative trends of globalization. The approach of Mahatma Gandhi is one such approach which is today emerging as the possible answer to global crisis of human values. The paper therefore seeks to suggest Gandhian strategies and his model as an alternative to reverse the negative trends of market economy.

***Key Words**: Capitalism, Ethics, Gandhi, Globalization, Market.*

Introduction

Globalization can be described as a process by which people of the world are unified into a single society and functioning together. This process is a combination of economic, technological, socio-cultural and political forces. (Croucher: 2004:10) Globalization is evident in the growing extensity, intensity, velocity and deepening impact of worldwide inter-connectedness. Ultimately, globalization is the spread and intensification of economic, social, political and cultural relations across national borders.

Since January 30, 1948 much water has flown down the Ganga and many have forgotten relevance of Gandhism in the age of globalization as we lost sight of ethical values in our pursuit of prosperity and power. Peace has taken back seat; exploitation and conflict have come to forefront. Further, the total ecosystem becomes greatly endangered not only in India but also in

*Associate Prof. & Head, Department of Political Science, B.D. Arya Girls College, Jalandhar Cantt

the whole world. Einstein, one of the greatest scientists of our times has rightly condoled the death of the Mahatma "Generations to come will scarce to believe that such a man in flesh and blood walked upon this earth". Mahatma Gandhi believed in "Service to Humanity is Service to God". Truth and nonviolence were his most powerful weapons to fight against the British for our independence. As seen today the fast-paced phenomenon of globalization is characterized on the one hand by expending global trade, global investment and global finance and beyond the geo-political boundaries of nation states, and on the other, by shrinking space, shrinking time and disappearing borders, linking people's lives intensely and immediately more than even before.

When we observe globalization through Gandhian view point there is feeling that all is not well in India. No doubt globalization has had important positive impacts with respect to communications, decentralization of powers, economic efficiency and range of available products. (Scholte: 2009: 9) At the same time it has many negative consequences in regard to increased ecological degradation, persistent global poverty, worst working conditions, cultural violence, widespread arbitrary and economic inequalities between elite and people below poverty line (BPL), trend of profit making marketing and deepened democratic deficiency.

Gandhi and Globalization

When we observe Gandhi's life history, we have feeling that he himself was a clear product of globalization. This can be understood by the life of Gandhi. He was educated in London, started his political activity in South Africa before he joined Indian Politics. He was greatly influenced by ideas of Jesus, Tolstoy, Thoreau and Ruskin.Once he said:

"I do not want my house to be walled in on all sides and my windows to be stuffed. I want the culture of all lands to be blown about my house as freely as possible. But I refuse to be blown off my feet by any".

So he believed that adopting different cultures in India would not be a threat to its own customs and culture. However he warns that establishment of a global society may become a danger to sovereign nations in the form of colonialism, commercialization of economy, leading to class antagonism and environmental hazards(P.V. Verma: 2008: 90) With the integration of world community, urban India has changed a lot but what about rural India which is still in poor conditions. Gandhi wanted integration of global ideas, techniques, knowledge and information so that every nation according to its domestic conditions can decide its way of progress. But in India it is not the globalization of human and human values, but of market. Anyone who is having money can use it, buy any product of the world, and therefore earning profits by selling it on higher rates. This has become the real globalization. Such scenario is not suitable when we observe Gandhian thought that wealth and profits should not be concentrated in the hands of few. Wealth and profits should be distributed in such way which can be easily available to our villages. (Mahatma Gandhi: 2008:74)

Gandhi's complete idea of Swaraj was the village republic, independent of its neighbours for its own vital wants and yet interdependent for many others in which dependence is necessary. To him every village's first concern will be to grow its own food crops and cotton for its own clothes. (Mahatma Gandhi: 78) Urban India seemed to be shining due to marketing of new luxurious product; diet coke, flat screen, television and super express highway, anti wrinkle treatment and malls

A development measure, which contributes to the further improvement of the already high quality of life of the rich, as well as to the much needed improvement of the living conditions of the present-day poor who find it extremely difficult to manage to exist, would definitely be preferable. But it does not seem to be possible because the amount of effort and resources which it would need, the country does not seem to have; therefore, the desirability of globalization should be primarily determined by the role it can play in improving the quality of life lived by disadvantaged Indians. As a developmental measure, it seems, it would proceed by first benefiting the affluent, and then some benefits may percolate to those who are below the poverty line. But it may also happen that they dry up before reaching the bottom where the poor are. In the Gandhian model, on the other hand, we have to start the development process which, first benefit those who are at the bottom of the affluence scale, and therefore it is sure to benefit the poor. It may even require the affluent to sacrifice a bit of their self-interest, or comforts. This sacrifice would be morally desirable in the eyes of foreigners interested in India. What the affluent loses in monetary terms is more than compensated by what he gains in moral terms, and in terms of a higher kind of happiness accruing to his and to others as a result of consequential social harmony (Rajinder Prasad:2008)

Gandhi opined that globalization was not evil but to believe that everything western was superior was not the correct stand to take. He did not perceive any threat to our culture due to globalization but he did believe that it would lead to consumerism. (P.V. Sarma: 90) Consumerism has therefore come to define the contemporary India wherein the materialistic values have dominated the individual life styles but also the societies, governmental bodies and all developmental policies. Exploitation, alienation, conflict, violence, control over nature have become natural consequences of the same. It is in this vein that Gandhi offers a critique not merely of materialism and consumerism but also of western notion of development. For him, this model of development was an equivalent of a market place. The scarcity of resources in this market forces everybody to participate in a mad race. This race, according to him has initiated a process of life corroding competition. (Roy Ramashray: 1996:37) Referring to its effect on individual, Gandhi argues, "We notice that mind is a restless bird; the more it gets the more it wants and still remain unsatisfied". Further arguing against consumerism, he refers to the negative impact that it can create on society as a whole. The competition of scarce resources causes negative tendencies in the society. So dehumanized the human beings become that it effects the whole civilization. It is in this context that Gandhi terms the whole of modern civilization to be operating on the maxims of "Might is right" and survival of the fittest. (M.K. Gandhi: 1980:33).

For Gandhi, modern civilization was propelled by two inter-related principles of greed and want. It was controlled by a few capitalist owners, who had only one aim to make profit, and only one means to do so, to produce goods that satisfied people's wants. (Bhiku Parekh:23) Gandhi argued that since modern economic life followed an inexorable momentum of its own, it reduces men to helpless and passive victims and represented a new form of slavery, more comfortable and more dangerous than the earlier ones. (Bhikhu Parekh: 1987:277).

Gandhi dreamt that each and every Indian should get food. On one side when some people have all luxuries of life on other side government is playing politics of food and hunger. In 1948 when the United Nations adopted the "Right to Food" covenant, India also became a signatory to this. On May 28 the "World Hunger Day" came and passed without anyone noticing in India its vital significance for our hungry millions. For millions of Indian everyday is Hunger Day. The poor and vulnerable still sleep on empty stomachs. Whenever issues of deprivation, hunger and social security are raised, the government diverts the attention of the public, talks of the declining sensex, the falling rupee, growth rates and balanced budgets. What significance are these to the vast millions of illiterate Indians, who cannot even spell their name and are struggling to get a square meal each day. Is there a worse shame than this in "Free India"?

The world Food summit in 1996 defined food as "access to sufficient, safe, nutrition's food to maintain a healthy and active life". The Global Hunger Index released by the International Food Policy Research Institute ranks India 66th among the most vulnerable countries. Ironically, farmers who put food on our plates are the ones to go hungry. Having already restricted the supply of subsidized food grains to the Below Poverty Line(BPL) category figures from 37.2 percent in 2004-05 to 29.8 percent in 2009-10, the government in one stroke of the pen absolved itself of the most important responsibility of providing food grains at affordable prices to those, who by medical standards, need more nutrition. The mantra now is that country cannot feed its hungry millions unless there is "High Tech Corporate Agriculture"- the need to open up

agriculture for multinationals within and outside India. A look at the figures of production in India belies this. During 2009 to 2012 India broke records in food production. The country produced approximately 240 million tons of food grains and 17 million tones of pulses in 2011-12 which is more than sufficient to feed the entire population of the country adequately. But what is happening on the ground-so much food is being wasted in the FCI godowns and instead of using it to feed the humans the government fed the rats.(K.P. Prabhakaran Nair:2012)

So we have diverted our routes from Gandhian Philosophy. Gandhi's views rested on the principles of cooperation and understanding- today it is more about competition and profit-making. This is considered natural in the age of capitalism riding on LPG (Liberalisation, Privatisation and Globalization) wherein commerce has gained currency over political and social processes. Economic activity which is most important rather fundamental aspect of human life is controlled not by people themselves but by parasitic elements.

Gandhi gave the concept of 'Swadeshi'. He suggested that India had history of rich culture and civilization. Villages should be self sufficient in every sector of life. Globalization is one market where big fish is trying to swallow the small one. Once Gunnar Myrdal said that India is surrounded by so many problems and Gandhi is the only way out for unsatisfied Indian society. Well known author of Germany Prof. Dettelov Kotovyasanki said that people of west will give a new look to Gandhi because if there is any future of world then it is only Gandhi. Noam Chomsky in his well known essay 'Cold War to Golf War' has written that America's new enemy is third world countries and American designed globalization is targeting third world countries as its victim. Enriched economies are producing things on mass level and using the third world countries as their market, which often results in the reduction of the indigenous economy of developed countries. This is the reason that Gandhi pleaded for localization of production and consumption. Under the policy of globalization effort is underway to transform the whole world into a single village what we call a global village. Contrary to this Gandhi wanted to develop the concept of a Globe of villages.(Upasana:2005)

In such a scenario, Gandhi and his ideas on the economy are being hailed by many as the 'Third Way'- a suitable compromise between the leftists and free marketers that ought to suit all classes. However, if we scrutinize Gandhian attitudes towards economics, we find a lot of similarities with both liberalism and communism. For instance, through the Swadeshi Movement, Gandhi advocated rejection of western textile and home spinning of cotton for Indians- this amounts to very much left wing protectionism which Nehruvian India adopted for over 35 years until under Dr. Manmohan Singh, India began its journey to free market economics. Gandhi's views rested on the principles of co-operation and understanding-today it's more about competition and profit making. However, Gandhi's desire to safeguard peasants' rights seems valid even today.

Gandhi's movements to earn rights for Indians through strictly non-violent movements both in South Africa and India have been an invaluable component of the globalization of the civil rights movement. For example, the strict adherence to non-violent means by Dr. Martin Luther King Jr., despite various provocations, portrays the depth of Gandhian beliefs in the American Negroes' civil rights movement. The Gandhian satyagraha was also adopted in South Africa firstly by the National Indian Congress and later personified by Nelson Mandela. In this age of violence, many of the most important civil rights movements throughout the world have been remarkably Gandhian in practice.

The believer and practitioners in Gandhian thought and philosophy have taken an anti-globalization stand. Moral value was extremely important for Gandhi. Economics without ethics and ethical consideration was not warranted. Dasgupta in his comprehensive analysis of Gandhi's economic thought has dealt with the subject thoroughly. According to him, Gandhi's approach to economic issues was based explicitly on ethical considerations. 'Gandhi insisted that the relationship between economics and ethics works both ways. While economic concepts were laden with ethical implications, ethics too must descend from the clouds and become 'good economics'.

Economic growth in India in recent years has been accompanied by increasing social and cultural problems. Most of our programmes aim at everyone becoming rich or creating a condition of pervasive prosperity. If the power to satisfy our desires has increased in arithmetical progression, the power of desire has gone up in geometrical progression. We have an environment in which only growth matters, and morality and goodness are not the most sought after things. We are on the path of prosperity without imbibing the relevant values. This is leading to the creation of a purely materialistic culture with a strong desire to get more for ourselves. Selfishness makes us get so wrapped up in our own needs, wants and issues that we forget about others. When we forget about others, we often drift away from our core values. Surely, we should not lose values in the race for growth. (Suresh K. Chadha:2013)

Possible Way Out

It is in this background that Gandhian thought is assuming relevance today because he did not merely commented at disorder but has also sought to offer an alternative solution. The solution that he prescribes finds its essence in Gandhi's profound and firm belief in the dictum that we can bring about all kinds of reforms in a society just by analyzing the realities and them moving forward on the basis of an upright conscience and friendly persuasion.(Anthony. J. Parel: 1995: 59)

Gandhian concepts of Sarvodaya, Swaraj, Swadeshi constitute the backbone of his economic model. The idea is that Gandhi wanted economy to be planned in such a manner that the indigenous resources must be utilized to the maximum. It is not that he was deadly against the foreign goods. He did insist upon the exclusion of such foreign made commodities whose import was harmful to indigenous industries.(S.M.Tiwari: 1987: 207).In fact all the Gandhian concepts-social, economic and political are ultimately linked in Gandhi's overreaching concepts of Ahimsa- A concept that has been applied by Gandhi in more than one ways and that's what speaks of its relevance. It stresses upon the creation of a new world order. The basic aim of this order is to achieve human security without violence. This kind of security can be brought about by creating a sense of realization among all regarding the basic values of life. Therefore, new world order has to be based upon a maximum degree of realization- in terms of basic values, such as peace, well being, justice, economic balance and positive identity- a minimum level of security that is allowed to overcome the most prevalent forms of physical insecurity, including war, hunger, poverty and other forms of violence.

Inequalities and poverty created by globalization could be removed through Gandhian philosophy. Globalization is inescapable and inevitable but its painful effects must be resisted. Gandhi is relevant at local, micro and national levels. Goal of democracy was good government and goal of liberalization was good governance, which was a combination of politics,

administration and management. Market economy was good but not the market culture. (The Hindu:2012)

In 1924 Mahatma Gandhi wrote: "That economics is untrue which ignores or disregards moral values. The extension of the law of non-violence in the domain of economics means nothing less than the introduction of moral values as a factor to be considered in regulating international commerce". (Bharat Dogra: 2008)

Today, we see many of the problems emerge clearly in our lives and hence, Gandhian relationship with globalization remains extremely important and his ideas valid even today. The ideas of Gandhi over social construction and economic planning have been evaluated time and again and his posture against the industrial society needs to be dissected again as the world moves towards a more decentralized order. "In contradiction to the altruistic philosophy of Sarvodaya, the conventional economics are based on the concept of economic man, which means that an individual is motivated by economic considerations, and in real life, he tends to serve his self interests mainly in terms of economic gains".

Conclusion

The Gandhian thought has a readymade prescription for these ills of modernity. What we require is simply to evolve a bridge between materialism of the west and moralism of the Orient. (Jackson and Sorensen: 1999:171) It was Gandhi conviction that individuals- of whom the nations and global communities are constituted-must have priority in any scheme of reform or reconstruction. Gandhi emphasized the role of individual in decision making and in sharing the national and international responsibilities. Socio-economic decentralization is yet another corrective measure to curb undemocratic tendencies. Gandhi's global vision moves upward from the individual and a federation of village republics to an international federation of nations in a society marked by voluntary cooperation and decentralization.

The modern interlinking of people and economies under contemporary globalization must give careful attention to the Gandhian pointers in this age of technology for keeping away from the pejorative aspects of concurrent science and development patterns. Otherwise, globalization will prove to be ''nine days wonder'' only. Prof. Denis Dalton from Columbia university said rightly that if clash of civilizations is to be avoided then there is no other option available than to follow Gandhian Philosophy.

References

- Anurag Gangal, Globalization: A Gandhian Analysis www.scribd.com/anuraggandal.
- Anthony J.Parel, "The Doctrine of Swaraj in Gandhi's Philosophy", in Upendra Baxi and Bhiku Parekh(eds) Crisis and Change in Contemporary India, Sage Publications, New Delhi, 1995.
- Bharat Dogra, "How Gandhi's Ideas can Help to combat Globalization Related Threats". *Mainstream*, Vol. XLVI, No. 42.
- Bhiku Parekh and Thomas Pantham (eds.) Political Discourse: Explorations in Indian and Western Political Thought, Sage Publications, 1987.
- Harish. K. Thakur, "Gandhi in the Globalized World", July 7, 2011 at www.gandhitopia.org/profiles/blog.
- Jan Aart Scholte, Globalization- A Critical Introduction, Hampshire, Palgrave, 2005.

- K.P. Prabhakaran Nair, "Politics of Food and Hungry Indians", *Mainstream*, Aug 17-23, 2012, pp. 29-30.
- Mahatma Gandhi, India of My Dreams, Abhishek Publications, Chandigarh, 2008.
- M.K. Gandhi, Hind Swaraj, Navjivan Publishing House, Ahmadabad, 1938.
- P.V.Sarma(ed.) Gandhian Philosophy and Human Development, Kanishka Publishers, New Delhi, 2008.
- Rajinder Prasad, Gandhi, Globalization and Quality of Life: A Study in the Ethics of Development, October 2008, www.mkgandhi.org\mainhtml,retrieved on 29 May 2017.
- Robert Jackson and George Soransen, Introduction to International Relations, OUP, Oxford, 1999.
- Roy Ramashray, Understanding Gandhi, Ajanta Publications, Delhi, 1996.
- Shiele. L. Croucher, Globalization and Belonging: The Politics of Identity in a Changing World, Rowman and Littelfield, New York, 2004.
- Suresh K. Chadha, "Vanishing Values", *The Tribune*, May 20, 2013, P.8.
- *The Hindu*, March 29, 2012.
- Upasana Pandey, "Globalization and Gandhi", *Mainstream*, September 30-October 6, 2005, PP. 24-26.

चम्पारन सत्याग्रह : 'सेवा' तथा 'स्व' का दर्शन

नीतांजली खारी
पीएच.डी. शोधार्थी
दर्शनशास्त्र विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
मो. 8860664824
ईमेल : n.anjali11@gmail.com

चम्पारन सत्याग्रह ऐतिहासिकता के साथ–साथ एक ऐसे सिद्धान्त की ओर इंगित करता है, जिसे गांधी दर्शन की आधारशिला कह सकते हैं। अर्थात् सत्याग्रह, सेवा तथा स्व आपस में इतने गुंथे हुए हैं कि, भावों की निस्वार्थता के अभाव में ही इन्हें विलग किया जा सकता है। किन्तु तब सत्याग्रह का वह स्वरूप ही नहीं रहेगा जिसे गांधी स्वीकारते हैं। अर्थात् चम्पारन सत्याग्रह सेवा तथा स्व का दर्शन है। 'स्व' सिद्धान्त गांधी दर्शन का केन्द्र है, उनके सम्पूर्ण सिद्धान्त स्वराज, स्वदेशी, स्वशासन, सत्याग्रह, सत्य तथा अहिंसा आदि सभी स्व सिद्धान्त का ही विस्तृत रूप है। स्व के अन्तर्गत मन, शरीर तथा अन्तरात्मा का संबंध है जिसमें वे अन्तर्मन की आवाज के आधार पर शुभ तथा अशुभ के चयन में, शुभ के निरन्तर चयन के अभ्यास को महत्ता प्रदान करते हैं।

चम्पारन के किसानों के नैतिक, व्यावहारिक, शारीरिक, सामाजिक तथा राजनीतिक शोषण की व्यापक पृष्ठभूमि चम्पारण सत्याग्रह प्रस्तुत करता है। चम्पारन में गांधी की प्रमुख तथा सक्रिय भूमिका यह थी कि उन्होंने किसानों को उनेक अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति सचेत किया। सत्याग्रह के लिए प्रमुख है : इच्छा स्वातन्त्र्य, चयन का अधिकार तथा सबसे महत्वपूर्ण शुभ का चयन। गांधी अपनी आत्मकथा में कहते है कि उन्होंने चम्पारन में अहिंसा, सत्य तथा ईश्वर का साक्षात्कार किया। वे कहते हैं कि "जब मैं इस साक्षात्कार के अपने अधिकार की जांच करता हूँ, तो मुझे लोगों के प्रति अपने प्रेम के सिवा और कुछ भी नहीं मिलता। इस प्रेम का अर्थ है, प्रेम अथवा अहिंसा के प्रति मेरी अविचल श्रद्धा।"

चम्पारन सत्याग्रह ऐतिहासिकता के साथ–साथ एक ऐसे सिद्धान्त की ओर इंगित करता है, जिसे गांधी दर्शन की आधारशिला कह सकते हैं। अर्थात् सत्याग्रह, सेवा तथा स्व आपस में इतने गुंथे हुए हैं कि, भावों की निस्वार्थता के अभाव में ही इन्हें विलग किया जा सकता है। किन्तु तब सत्याग्रह का वह स्वरूप ही नहीं रहेगा जिसे गांधी स्वीकारते हैं। अर्थात् चम्पारन सत्याग्रह सेवा तथा स्व का दर्शन है। 'स्व' सिद्धान्त गांधी दर्शन का केन्द्र है, उनके सम्पूर्ण सिद्धान्त स्वराज, स्वदेशी, स्वशासन, सत्याग्रह, सत्य तथा अहिंसा आदि सभी स्व सिद्धान्त का ही विस्तृत रूप है। स्व के अन्तर्गत मन, शरीर तथा अन्तरात्मा का संबंध है जिसमें वे अन्तर्मन की आवाज के आधार पर शुभ तथा अशुभ के चयन में, शुभ के निरन्तर चयन के अभ्यास को महत्ता प्रदान करते हैं। जैसा कि वे गीता–माता में स्वीकारते हैं। सत्याग्रह इसी चयन को व्यावहारिक रूप प्रदान करता है। यह एक आध्यात्मिक अभ्यास इसी कारण है चूंकि इसमें सम्पूर्ण मनोबल के आधार पर शुभ का चयन कर, निडरतापूर्वक परिणाम सहने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

सत्याग्रह जिसे सत्य+आग्रह के अर्थ में निरूपित कर कहा जा सकता है कि यह आग्रहपूर्वक सत्य की मांग को प्रदर्शित करता है। चम्पारन के किसानों के नैतिक, व्यावहारिक, शारीरिक, सामाजिक तथा राजनीतिक शोषण की व्यापक पृष्ठभूमि चम्पारण सत्याग्रह प्रस्तुत करता है। चम्पारन में गांधी की प्रमुख तथा सक्रिय भूमिका यह थी कि उन्होंने किसानों को उनेक अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति सचेत किया। गांधी के शब्दों में– "यदि कोई काम मुझे नापसन्द हो और उस काम को न करूँ, ऐसा करना सत्याग्रह अथवा आत्मबल का प्रयोग है।"[प]

सत्याग्रह प्राप्ति का मार्ग : गांधी अनुसार सत्याग्रह प्राप्ति का मार्ग सेवा है। उनके अनुसार– "यज्ञ के मानी है अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए परोपकार के लिए किया हुआ श्रम अर्थात् संक्षेप में सेवा।"[पप] गांधी का चम्पारन सत्याग्रह, किसानों के प्रति उनका सेवा का ही दर्शन है। जो पूर्णतः सत्य तथा अहिंसा से सम्बन्धित है। जिसमें अनासक्त भाव प्रमुख है। सत्याग्रह के लिए प्रमुख है : इच्छा स्वातन्त्र्य, चयन का अधिकार तथा सबसे महत्वपूर्ण शुभ का चयन।

यदि वर्तमान संदर्भ में देखा जाए तब समस्या और भी प्रबल हो जाती है जब मनुष्य अपने निर्णयों, कार्य व्यवहारों से अनभिज्ञ रहता है। मशीनीकरण तथा अंधानुकरण के इस युग में मनुष्य को अपनी दासता का ज्ञान ही नहीं है। जिसे यह अनुभूति है कि वह दासता में जी रहा है, यह अनुभूति ही 'स्व' ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करती है।

सत्याग्रह का विस्तृत स्वरूप तथा 'स्व' : सत्याग्रह का सर्वप्रथम प्रयोग गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में किया। जो उनके राजनीतिक क्षेत्र के साथ–साथ सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन में प्रबल शस्त्र के रूप में विकसित हुआ। शस्त्र से अर्थ यहाँ उस शक्ति

से है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने आत्मबल को मजबूत करे। यह एक प्रकार का अहिंसक शस्त्र है, जिसके सम्मुख हिंसा भी घुटने टेक दे। यही आत्मबल, सेवा तथा स्व का सम्मिलित रूप है। गांधी ने अपनी इसी आत्मबल पद्धति का प्रयोग बिहार के चम्पारन जिले में किसानों के प्रति किए जाने वाले अत्याचार के विरुद्ध किया। चूंकि किसानों के प्रति शोषण की नीति का प्रयोग कर उन्हें नील की खेती के प्रति बाध्य किया जा रहा था, जिसे किसान स्वेच्छा से नहीं करना चाहते थे। इसी कारण गांधी ने किसानों को सत्याग्रह के माध्यम से विरोध की नीति दी। जिसमें मुख्य था अपनी इच्छा अर्थात् इच्छा स्वातन्त्र्य का प्रयोग कर, शान्तिपूर्वक, सरकार से आग्रह कर इस दमनकारी नीति को खत्म करवाया जाए।

गांधी दर्शन का मूल ही दूसरों के प्रति, किए जाने वाले श्रम से है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति को स्व सुख न देख, पर सुख की कामना करनी चाहिए। जिसे गीता में लोकसंग्रह कहा गया है। जिसमें जनकल्याण के लिए कार्य किया जाए। गांधी सिद्धान्तों में मुख्य रूप से लोकसंग्रह की ही छाप दिखती है। सत्याग्रह भी इसका अपवाद नहीं। जो स्वयं के लिए न हो जनहित के लिए है।

किन्तु इसका मार्ग अत्यन्त कठोर है, जिसमें मन, अन्तर्मन तथा शरीर के कार्यों में समानता हो। ऐसा न हो कि मनुष्य की इच्छा कुछ है तथा कार्य कुछ सम्पादित करे। वे कहते हैं कि मनुष्य में शुभ तथा अशुभ वृत्ति विद्यमान है, मनुष्य को उसमें से शुभ वृत्ति का चयन कर कार्यों को सम्पादित करना चाहिए। चूंकि अशुभ वृत्ति आसुरी वृत्ति है, जिसमें राग द्वेष, मोह तथा ईर्ष्या के वशीभूत होकर कार्य किया जाता है।[पपप] इस प्रकार स्व–नियन्त्रण ही शुभ वृत्ति का चयन है। इसी सन्दर्भ में एन्थनी जे.परेल कहते हैं कि ''स्वशासन या अच्छे शासन के रूप में स्वराज की व्याख्या के अतिरिक्त स्व–नियन्त्रण के रूप में स्वराज की व्याख्या करना ही उनका उद्देश्य था।''[पअ]

इस प्रकार गांधी, पाश्चात्य दार्शनिक देकार्त के विपरीत मत स्वीकार कर मन तथा शरीर की एकता में विश्वास रखते हैं। जबकि देकार्त मन तथा शरीर को भिन्न वस्तुएँ स्वीकारते हैं। इस स्व–नियन्त्रण को ही गांधी आत्मबल अथवा सत्याग्रह कहते हैं। गांधी की निम्न उक्ति चम्पारन के किसानों के प्रति उनके अधिकारों तथा कर्त्तव्य के प्रति सटीक बैठती है, कि अमुक कार्य बुरा है, ऐसा कोई भी पूर्णतः दावे के साथ नहीं कह सकता। किन्तु यदि उस व्यक्ति को वह कार्य बुरा लगता है तब वह उसके लिए बुरा है। वे आगे कहते हैं कि – ''ऐसी स्थिति में उसे वह कार्य नहीं करना चाहिए और उस कार्य को न करने से जो दुःख हो, भोगना चाहिए। सत्याग्रह की यही कुंजी है।''[अ]

सत्याग्रह तथा सेवा का संबंध अचानक ही स्थापित नहीं हुआ। बल्कि इसका प्रभाव गांधी जीवन में बचपन से ही रहा है। सेवा का प्रौढ़ रूप ही सत्याग्रह कहा जा सकता है। बचपन में घर पर उनकी मां के वैष्णव धर्म के प्रति सेवा ने उनके जीवन में सेवा का बीज रोपा। भले ही गांधी धर्म का अर्थ भिन्न स्वीकारते हैं किन्तु उन्होंने रूढ़ि के विपरीत धर्म तथा सेवा का अर्थ स्वीकार किया। जिसमें उन्होंने सेवा तथा ईश्वर भक्ति का ज्ञान प्राप्त कर, उसे जीवन में सत्य के रूप में स्थापित किया। जब वे रायचन्द्र के संपर्क में आए तब सेवा के अगले सोपान पर बढ़े, जिसमें वे इसे अहिंसा से संबंधित कर, आजीवन इसके आचरण में रत रहे। अहिंसक बन स्व नियंत्रण उन्होंने लंदन में शिक्षा के दौरान ग्रहण किया। इस अहिंसक सेवा को सत्याग्रह का रूप उन्होंने सर्वप्रथम दक्षिण अफ्रीका में राजनीतिक गतिविधियों के रूप में दिया तथा सत्याग्रह का अगला सोपान चम्पारन में उन्होंने किसानों के प्रति सेवा भाव के रूप में स्थापित किया।

गांधी के शब्दों में ''जिस सेवा में आनन्द नहीं मिलता, वह न सेवक को फलती है, न सेव्य को रूचिकर लगती है। जिस सेवा में आनन्द मिलता है, उस सेवा के सम्मुख ऐश आराम या धनोपार्जन आदि कार्य तुच्छ प्रतीत होते हैं।''[अप] यह सेवा कोई दास्य भाव की सेवा नहीं है, न ही इसमें भक्ति तथा ज्ञान मार्गियों वाली सेवा का भाव है, बल्कि यह तो परोपकार भाव की सेवा है। अर्थात्, ''खरी शिक्षा यही है कि परोपकार किया जाए, दूसरों की सेवा की जाए और ऐसा करने में मन में जरा भी अभिमान न लाया जाए।''[अपप]

जिस प्रकार गांधी अहिंसा सिद्धान्त में जैन धर्म से प्रभावित प्रतीत होते हैं, उसी प्रकार परोपकार अथवा सेवा धर्म में बौद्ध धर्म से प्रभावित होते हैं। जिसके अन्तर्गत जिस व्यक्ति ने सभी राग, द्वेष, मोह आदि पर विजय प्राप्त कर ली है, वह अन्यों को इनके प्रति उदासीन होने में सहायता करता है, जन कल्याण का कार्य करता है। यही गीता का लोकसंग्रह भी है। यह मार्ग मनुष्यत्व का मार्ग है। जिसमें मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ समझा जाता है, न कि तुच्छ इच्छाओं को। इच्छाएँ ही शोषण का कारण बनती है। किसी भी शोषण के पीछे का कारण राग, द्वेष, मोह आदि तुच्छ इच्छाएँ ही होती हैं, ये इतनी प्रबल होती है कि मुनष्य को पशु

समान बनाती है। मनुष्य तथा पशु में मुख्य भेद बुद्धि का ही है। यदि बुद्धि न हो, तब मनुष्य को पशु समान इच्छाओं की पूर्ति करने वाला ही समझना चाहिए। बुद्धि के कारण ही मनुष्य श्रेष्ठ है तथा यह श्रेष्ठता तब स्थापित होती है जब मनुष्य अपने धर्म का पालन करे। धर्म का पालन मनुष्यत्व का पालन अर्थात् नीति का पालन है। जिसमें किसी के प्रति न तो शोषण का भाव ही हो, तथा न ही किसी को साधन स्वीकारने का भाव हो। विवेक बुद्धि द्वारा ही ऐसा कार्यान्वयन सम्भव है। मिल की प्रसिद्ध उक्ति है कि एक सन्तुष्ट सूअर से, असन्तुष्ट मनुष्य ज्यादा उचित है। यह भेद बुद्धि की प्रधानता के कारण ही है। इसी कारण गांधी भी विवेक बुद्धि के आधार पर ऐसे धर्म की स्थापना करना चाहते हैं जिसमें किसी के अधिकारों का शोषण तथा इच्छा स्वातन्त्र्य का हनन न हो। इसी कारण वे चम्पारन सत्याग्रह करते हैं।

गांधी अनुसार हिंसा से मात्र हिंसा को ही बढ़ावा मिलता है। इस कारण चम्पारन हो या दक्षिण अफ्रीका सब जगह उन्होंने अहिंसक प्रतिरोध किया। यही सत्याग्रह है। मनोज सिन्हा कहते हैं कि गांधी का मत है कि ''सत्याग्रह द्वारा हम व्यक्तिगत रूप से कष्ट सहकर अपने अधिकारों को प्राप्त करते हैं।''[अपपप] चम्पारन में सत्याग्रह का अहिंसक रूप सफलता का कारण बना। चूंकि जैसे उनके विचार वैसा उनका आचार था। जो कि एकमात्र अहिंसक था। भीखू पारेख अपनी पुस्तक में कहते हैं कि गांधी के प्रशंसक के लिए वे मूलतः आचार और विचार में समानता रखने वाले थे। इसके साथ ही उन्होंने राजनीति में ऐसी विशिष्ट नैतिक पद्धति की खोज की, जिसे सत्याग्रह कहा गया, जो हिंसा का परिवर्तक था।[पग]

गांधी अपनी आत्मकथा में कहते है कि उन्होंने चम्पारन में अहिंसा, सत्य तथा ईश्वर का साक्षात्कार किया। वे कहते हैं कि ''जब मैं इस साक्षात्कार के अपने अधिकार की जांच करता हूँ, तो मुझे लोगों के प्रति अपने प्रेम के सिवा और कुछ भी नहीं मिलता। इस प्रेम का अर्थ है, प्रेम अथवा अहिंसा के प्रति मेरी अविचल श्रद्धा।''[ग] गांधी अनुसार सत्याग्रह वह है, जिसमें विनयपूर्वक सत्य के लिए, अहिंसक रूप से आग्रह किया जाए। किन्तु क्या यही इसका वास्तविक अर्थ है? गांधी कहते हैं इसका अर्थ अंग्रेजी के 'पैसिव रजिसटेन्स' समझ कर कुछ व्यक्ति इसका सही अर्थ नहीं समझ पाए, इस कारण वे हिंसा को भी इस पद्धति का ही एक रूप समझने लगे। जो कि पूर्णतः निषेधित है। एकमात्र मार्ग अहिंसक आन्दोलन ही है। जिसमें वे किसी भी प्रकार का दबाव भी नहीं स्वीकारते। उनका मत है कि शत्रु किसी मजबूरीवश हमारी बात को स्वीकारता है, तब वह सत्याग्रह के अधीन नहीं है। सत्याग्रह में अहिंसा ही दोनों पक्षों का साधन होनी चाहिए। जिसमें इच्छा स्वातन्त्र्य के आधार पर निर्णय निर्धारित किया जाए। चम्पारन सत्याग्रह इसी पद्धति का सफल स्वरूप है जिसमें किसानों ने अपनी इच्छा से आन्दोलन किया, तथा अधिकारियों ने उसे उचित पाकर, स्वेच्छा से नील की खेती सम्बन्धी एक्ट में परिवर्तन किया।

किन्तु अन्त में प्रश्न यह है कि क्या गांधी द्वारा स्वीकृत सत्याग्रह पूर्णतः अहिंसक है। क्या ऐसा संभव है कि शत्रु सदैव उचित मांगों को स्वेच्छा से स्वीकार ले?

सत्याग्रह का वास्तविक अर्थ चाहे यह हो कि इसमें शत्रु के मन में भी सामने वाले के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए। उसे किसी भी दबाव के अधीन मांग स्वीकृत नहीं करनी चाहिए। किन्तु वास्तविकता तो यह है कि यह एक प्रकार का दबाव होता है, चाहे इसे आज के संदर्भ में देखा जाए या फिर गांधी के समय में देखा जाए। गांधी भले ही इसे इस अर्थ में न स्वीकार करते हो, किन्तु वास्तविकता इससे भिन्न ही है। तब क्या इसका अनुसरण अनुचित है? फिर किस मार्ग का पालन किया जाए, अर्थात् इसके विपरीत एकमात्र मार्ग हिंसा ही शेष है। चूंकि हिंसा के विपरीत यही एकमात्र अहिंसक मार्ग है, जिसमें किसी भी प्रकार की हिंसक गतिविधियों का समावेश नहीं है, इस कारण इसे ही स्वीकारना चाहिए। गांधी भी इसी अर्थ में सत्याग्रह स्वीकारते हैं। चम्पारन सत्याग्रह इसका जीवंत तथा सक्रिय उदाहरण है। जिसके माध्यम से गांधी ने चम्पारन के किसानों के माध्यम से अपने उचित अधिकारों तथा कर्त्तव्यों के लिए, मनुष्य को सचेत किया। जिसके मूल में 'सेवा' तथा 'स्व' का सिद्धान्त था। स्वेच्छा से स्व नियन्त्रण द्वारा सेवा कार्य करना ही, सत्याग्रह का स्वरूप है।

अन्त टिप्पणी

[i] M.K. Gandhi, *Hind Swaraj A Critical Edition*, Tr. and Ed. Suresh Sharma, Tridip Suhrud (Hyderabad : Orient Black Swan Private Limited, 2010), 63.

[ii] महात्मा गांधी, *गांधी साहित्य 3, गीता–माता* (दिल्लीः सस्ता साहित्य मण्डल, दूसरी बार, 1960), 35.

[iii] वही।

[iv] डॉ. कुसुम लता चड्ढा, *गांधी वाचन* (नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2009), 67.

[v] Hind Swaraj, 64.

[vi] मनोज कुमार राय, *हिन्द स्वराज* (दिल्ली : लोकायत प्रकाशन, 2015), 80.

[vii] वही, 81 महात्मा .

[viii] मनोज सिन्हा, *गांधी अध्ययन* (हैदराबादः ओरियन्ट ब्लैक स्वान, पुनर्मुद्रित, 2013), 79.

[ix] Bhikhu Parekh, *Gandhi : A Very Short Introduction* (New York: Oxford University Press, 2001), 111-112.

[x] मो.क. गांधी, *सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा,* अनु. काशिनाथ त्रिवेदी (अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, 2012), 37.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 गांधी, महात्मा. *गांधी साहित्य 3, गीता–माता* .दिल्लीः सस्ता साहित्य मण्डल, दूसरी बार, 1960.

2 Gandhi,M.K. *Hind Swaraj A Critical Edition*, Tr. and Ed. Suresh Sharma, Tridip Suhrud . Hyderabad : Orient Black Swan Private Limited, 2010 .

3 Parekh, Bhikhu. *Gandhi : A Very Short Introduction* .New York: Oxford University Press, 2001 .

4 गांधी, मो.क. *सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा,* अनु. काशिनाथ त्रिवेदी .अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, 2012.

5 राय, मनोज कुमार. *हिन्द स्वराज* .दिल्ली : लोकायत प्रकाशन, 2015.

6 सिन्हा, मनोज. *गांधी अध्ययन* .हैदराबादः ओरियन्ट ब्लैक स्वान, पुनर्मुद्रित, 2013.

7 चड्ढा, डॉ. कुसुम लता . *गांधी वाचन* .नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2009.

8.वेद प्रकाश वर्मा, नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त. दिल्लीः एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, 1994.

9 Prasad, Rajendra. *Ends and Means in Private and Public Life* . Shimla: Indian Institute of Advanced Study, 1989.

10 Gandhi, M.K. *Collected Works of Mahatma Gandhi Vol. 14*. Delhi: Publications Division, 1965.

महात्मा गांधीच्या आर्थिक विचारातून सामाजिक कल्याण

प्रा. डॉ. पी.एल. ढेंगळे.
एस.बी.महाविद्यालय अहेरी,
जि. गडचिरोली.
Email ID :- pldhengle@gmail.com

प्रस्तावना :–

जागतिक क्षेत्रात भारताला महात्वाचे स्थान मिळवून देणाऱ्या ज्या विभूती झाल्या त्यात महात्मा गांधीजीचे नांव अग्रस्थानी आहे स्वराज्य हा माझा जन्मसिद्ध हक्क आहे, या लोकमान्य टिळकांच्या उक्तीला गांधीजींनी आपल्या जिवनात सकारकेले अन्यायाचा प्रतिकार अहिंसेच्या,सत्याच्या व शांततेचा मार्गाने करतायेवू शक्तो. हा विचार त्यांनी प्रत्यक्ष व्यवहारात आणला. तसेच समाजाचे कल्याण हा एकमेव उद्देश गांधीजीचा अर्थिक विचाराचा केंद्र बिंधू आहे. त्यांचा मघ्ये समाज एक विस्तृत प्रयोगशाळा आहे. की जेथे क्षणोक्षणी सत्य आणी अहिंसेचा उपयोग करुण समाजाला आदर्श असे रुप देता येवू शक्ते असा गांधीजीचे विचाराचे मुख्य सूत्र होते.

व्यक्तीचे ध्येय नेहमी उच्च प्रतिचे असावे व ध्येय प्राप्तीची साधने पवित्र व निर्मल असली पायजे त्या मुळे गांधीजींनी साध्या पेक्षा साधनाला अधिक महात्व दिले आहे. व्यक्तीच्या कर्तव्याला नैतीक्तेची जोड असावी लागते. म्हणूनच नैतिक्ता सर्वोच्च तत्व आहे. समाजाला नितीमान आदर्श व आत्मनिर्भर बनविण्यासाठी गांधीजींनी आपले आर्थिक, समाजिक व तात्वीक विचार मांडले.

उद्दिष्टे :–

१. **स्वयंपुर्ण खेडयाची संकल्पना : –**

गांधीजीच्या आर्थिक विचारा स्वंयपुर्ण खेडयाची जी संकल्पना आहे ती उत्पन्नाच्या मागणी पुरवठयाची एक उत्कृष्ठ अशी रचना आहे. गांधीना शंभर टक्के स्वंयपुर्णता अभिप्रेत नव्हती. जी वस्तु तयार करू शकत नाही, तर ती वस्तु शेजारच्या खेडयातुन प्राप्त करणे व त्याबदली आपण तयार केलेली वस्तु त्यांना देणे अशी साधी रचना गांधीजी आपल्या स्वयंपुर्ण खेडयाच्या संकल्पनेवर मांडली या रचनेचा प्रमुख उदेश परस्परांच्या गरजा

भागविणे हा होता. या रचनेतुनच सहकार्याचे तत्व जन्म घेते. आज आपण देशा सहकारी चळवळीं निकोप वाढ व्हावी म्हणुन प्रयत्नशील आहोत.

२. **औघोगिकरण व यांत्रिकीकरण :—**

गांधीजीच्या यांत्रीकरणाला विरोध नव्हता परंतू मोठया प्रमाणावर होणा—या लक्षावधी प्रचंड श्रम उपलब्ध असणा—या भारतासारख्या देशात लोकांना रोजगारास मुकावे लागेल ही वस्तुस्थिती दृष्टीआढ करता येत नाही. देशात सर्वांना रोजगार उपलब्ध करून देण्यासाठी गांधीनी सांगितलेल्या शेतीवर आधारी कुटीर उदयोग, हस्तकला उदयोग व लघु उदयोगाचा विकास आजही आवश्यक ठरते. अशा लहान उदयोगांना विकास केला तर उदयोगांच्या केंद्रीकरणामुळे निर्माण झालेली प्रादेशिक विषमता दुर करता येणे सहज शक्य नाही. तसेच गांधीजीच्या या प्रतिमानात पुर्ण रोजगाराची स्थिती गृहीत धरता येते, उत्पादन , रोजगार , उत्पन्न यात आर्थिक विकासाच्या दृष्टीने सतत व दिर्घकालीन होणारी वाढ अपेक्षीता येते.

३. **आर्थिक समानता :—**

समाजात शांतता प्रस्थापित होण्यासाठी व ती टिकून राहण्यासाठी आर्थिक समतेचे महत्व गांधीजी आग्रहपुर्वक प्रतिपादन केले. सामाजिक आर्थिक धोरण ही निश्चिती समता समन्याय यावर आधारित ठेवण्यावर त्यांनी भर दिला.

गांधीजीनी तत्वत: निरपेक्ष आर्थिक समतेचे प्रतिपादन केले असते, तरी प्रत्यक्षात तो निर्णय करणे अवघड होते. म्हणुन समन्यायी वाटपाचा मध्यम मार्ग स्विकारला १९२७ च्या यंग इंडिया मध्ये ते म्हणतात, समान वाटप हा माझा आदर्श पण प्रत्यक्षात ती समानता प्रस्थापित करता येत नाही. म्हणुन मी समन्यायी वाटपासाठी प्रयत्न करतो.

४. **ग्रामीण विकास:—**

भारत हा खेडयाचा देश. आजही या ग्रामीण भागाच्या विकासाची समस्या आपल्या समोर आहे. ही समस्या सोडविण्यासाठी गांधीनी सांगितलेल्या ग्रामीण विकासाचा मार्ग आजही उपयुक्त ठरतो.

ग्रामीण भागात शेताला पुरक व्यवसायाची जोड दिली, कुटीर उदयोग, ग्राम उदयोग व हस्तकला उदयोगाचा विकास केला तर ग्रामीण जनतेला ग्रामीण भागातच रोजगार उपलब्ध होईल. ग्रामीण मजुरांचे शहराकडे स्थलांतर रोखता येईल, ग्रामीण जनतेला खेडयातच रोजगार उपलब्ध झाल्याने ओस पडलेली खेडी सुजलाम सुफलाम होतील.

५. <u>विकेद्रीत नियोजन :–</u>

आर्थिक व राजकीय सत्तेचे विकेद्रीकरण हे गांधीप्रणीत समाजवादाचे सार होय. विकास योजनांची आखणी ग्रामपातळीवर करून संपूर्ण भारताचा समतोल प्रादेशिक विकास करणे सहज शक्य आहे.

गांधीजीचे नियोजन विषयक विचार राष्ट्रीय, आर्थिक स्वयंपुणतेच्या तत्वावर आधारीत होते. त्यांच्या मते, भारतातील नियोजन हे देशातील सर्व मनुष्यबळाचा वापर करणारे असावे. उपलब्ध कच्चा माल देशाबाहेर पाठवुन पुन्हा परेदशातील महाग वस्तु आयात करण्यापेक्षा देशातील कच्चा माल देशातच कसा वापरता येईल. खेडयापाडयात कसा विभागुन देता येईल आणि त्यातुन देशांतर्गत उत्पादन कसे वाढविता येईल याचा विचार होणे आवश्यक आहे.

६. <u>सामाजिक कल्याण :–</u>

गांधीजीने सामाजिक कल्याणासाठी उपयोग पातळी निम्न स्तरावर ठेवण्याचा सल्ला दिला, त्याची पुढील कारणे आहेत.

१. उपयोग पातळी कमी ठेवुन भोगवादी प्रवृत्तीस आळा घालणे.

२. सर्वाना पुरेसे प्राप्त व्हावे म्हणुन उपभोग मर्यादीत ठेवणे.

३. साधन सामुग्रीचे जतन करणे व साधन सामुग्रीचा अतिरीक्त वापर टाळणे.

४. गांधीजीनी न्युन उपभोगाची संकल्पना सामाजिक कल्याणाशी निगडीत केली. जर सर्वानी आपला उपभोग मर्यादीत ठेवला तर सर्वाना पुरेसे प्राप्त होईल ही भावना त्यामागे होती.

त्यामुळे गांधीजीच्या उपभोगाच्या संकल्पनेकडे या दृष्टीने पाहिले तर अती अधिक व्यापक आहे लक्षात येते. आणि या संकल्पनेत सामाजिक कल्याणाचा विचार आहे.

गांधीजीच्या आर्थिक विचारांचा अभ्यास करता त्यांची आर्थिक विचारसरणी आधिक कल्पना, गरीब देशाच्या हिताची व गरिब देशातील लोकांच्या आर्थिक सामाजिक कल्याणाच्या दृष्टीने उपयुक्त आहे. औदयोगिकरणामुळे आर्थिक विकासाचे धोरण अवलंबिल्यामुळे आज अनेक आर्थिक सामाजिक व पर्यावरणीय समस्यांना समोरे जावे लागत आहे. शिवाय जी काही प्रगती करण्यात आलेली आहे. त्यातुन बेरोजगारी व दारिद्रय या मुळ समस्या सुटु शकलेल्या नाहीत. आर्थिक विषमता निर्माण झालेली आहे. उपभोगवाद वाढत आहे. जागतिकीकरणानंतर तर ह्या समस्या अधिकच गंभीर झाल्या आहेत. गांधीजीच्या आर्थिक विचारात या सर्व समस्या सोडविण्याचे सामर्थ्य तर आहेच शिवाय विकासात सर्वांना सामावुन घेण्याची ताकद आहे.

संदर्भ :–

१) भारतीय अर्थव्यवस्थेची वाटचला – प्रा शरद जोशी –डयमंड प्रकाशन, पुणे

२) अर्थसंवाद– उमेश राजदेरकर, खंड ३४, अंक २

३) लोकसेवक–प्रा. अमर जावळे, प्रा. भूषण काटे– पाटील– प्रशांत पब्लिकेशन.

४) गांधीजी हिंद स्वराज्य.

५) भारतीय राजकीय विचार – डॉ भा.ल. भोडे

Gandhian Thought and Sustainable Development

Dr. Poonam Singh Kharwar,
Assistant Professor, Faculty of Education,
Kamachha, Varanasi,
email: poonam.kharwar3@gmail.com

Abstract

M.K. Gandhi gave the world a new thought on nonviolence and sustainable living. Sustainable development is emerging as one of the most compelling and contemporary concerns of local to global community. UN Member States has adopted the '2030 Agenda for Sustainable Development' to ***end poverty, protect the planet,*** *and* ***ensure prosperity for all.*** *Although India has achieved high rates of growth and human index development improvment consistently but it is accompanied by persistent poverty and inequality. Mahatma Gandhi's teachings and experiments on sustainable development are more valid today than ever before. He cautioned mankind against unrestricted industrialism and materialism. His greatest contribution to sustainable development were his experiments in simple living and high thinking, and his insistence on all inclusive growth of the society and hence his focus on rural development. He insisted on harmony with surrounding, economy of permanence, recycling and nature friendly technological process. Present paper depicts the vision of sustainable development, to review the Sustainable Development Goals (SDG) with special reference to India, to examine relevance of Gandhian thoughts on sustainable development and to analyze the association of different Gandhian thoughts in relation to sustainable development. To conclude, Gandhian thoughts contribute to sustainable development and more relevant today than before. Looking the progress made in regard to MDG by India, more sincere efforts are needed to overcome the challenges of sustainable development by adopting the thought of Mahatma Gandhi balancing need of modern trend of economy in relation to sustainability.*

Keywords: Gandhian thought, sustainable development

Introduction

M.K. Gandhi not only gave India its freedom but also gave the world and us a new thought on nonviolence and *sustainable living*. His teachings and experiments are more valid today than ever before, especially when we are trying to find solutions to worldwide greed, violence and runaway consumptive lifestyle which are putting a very heavy burden on the world's resources. Sustainable development is emerging as one of the most compelling and contemporary concerns of local to global community reflecting development practice. Development-focused work practice is multidisciplinary and cross-sectoral field and is practiced across all geopolitical borders and at all levels of social, political, and economic organization. Objectives of present paper are to depict vision of sustainable development, to review the Sustainable Development Goals (SDG) with special reference to India, to examine relevance of Gandhian thoughts on sustainable development and to analyze the association of different Gandhian thoughts in relation to sustainable development.

Sustainable Development

Sustainable development seeks to meet the needs of the present without compromising those of future generations. It is a vision of development that encompasses respect for all life human and non-human and natural resources, as well as integrating concerns such as poverty reduction,

gender equality, human rights, education for all, health, human security and intercultural dialogue. It requires fundamental changes in the way people think and act; economic and technological solutions, political regulations and financial incentives are simply not enough. According to World Commission on Environment and Development Report poverty is a major cause and effect of global environmental problem. The interrelationship between the exploitation and degradation of environment and natural resources, on the one hand, and development and poverty, on the other, is particularly relevant in the rural areas of developing countries (UNDP, 1998).

Sustainable Development as a Vision

Many grandiose visions have been developed to depict how humans have shaped destiny in the new century that is fast approaching. These visions are based on scenario involving highly sophisticated breakthrough with vast potentials – colonies in space, robot operated plants, computers that match human intelligence and so on. Major question is whether such scientific and technological advancements are based on a position where man and machine co-operate with each other or has machine overpowered man? The unprecedented growth in world consumption and production is leading to environmental stress through impacts that are both global and local. Some kinds of environmental degradation are truly of global concern, such as global warming and depletion of the ozone layer. Others are international – acid raid, the state of ocean, in several countries. Others are more localized, - air pollution, water pollution, soil degradation, desertification and so on.

The inter relationship between poverty and environment has been recognized by the World Commission on Environment and Development Report as "poverty is a major cause and effect of global environmental problem. The interrelationship between the exploitation and degradation of environment and natural resources, on the one hand, and development and poverty, on the other, is particularly relevant in the rural areas of developing countries. Another reason for environmental pollution and degradation is over utilization of renewable resources. Two-fifths of the world's people depend on water absorbed by the mountain ranges. But when the trees have been felled, rain water sheet off the land, causing floods and droughts. Tens of millions of hectares in India have become more vulnerable to flooding as a result of deforestation. The overuse of fertilizer causes great water pollution problems. Heavy use of phosphate fertilizer has appeared in ground water in six districts in West Bengal, killing some of that drinking water. Rapid industrialization in many countries has greatly increased pollution. Global warming is one of the most serious of all the environmental challenges (UNDP, 1998).

Sustainable Development Goals

On 25/11/ 2015 at the Sustainable Development Summit, UN Member States adopted the '2030 Agenda for Sustainable Development' to **end poverty, protect the planet,** and **ensure prosperity for all.** Based on Millennium Development Goals (MDG) and going further, SDG addresses the root causes of poverty and the universal need for development that works for all people; it balances the three dimensions of sustainable development: the economic, social and environmental. It contains 17 goals and 169 targets which are integrated and indivisible, global in nature and universally applicable, taking into account different national realities, capacities and levels of development and respecting national policies and priorities. Targets are defined as

aspirational and global, with each Government setting its own national targets guided by the global level of ambition but taking into account national circumstances.

SDG and India

UN is aware that baseline data for several of the targets is unavailable so the agency calls for increased support for strengthening data collection and capacity-building in Member States, to develop national and global baselines where they do not yet exist. The agency is committed to address this gap in data collection particularly related to targets not having below clear numerical targets to monitor the progress. Goal1 calls to end poverty in all its forms everywhere. Globally one in five persons in developing regions lives on less than $1.25 per day in extreme poverty, their number is declined by more than 50% since 1990. In India, one in every five persons is below the poverty line; all India PHCR has been brought down from 47% in 1990 to 21% in 2012. Goal 2 targets end hunger, achieve food security and improved nutrition and promote agriculture. Globally the proportion of undernourished people in the developing regions has fallen from 23.3% in 1990 to 12.9% in 2015; in India, proportion of malnourished children declined from 53% to 40%. Goal 3 ensures healthy lives and promotes well-being for all at all ages. Globally, maternal mortality rate has fallen by 50% since1990; in India it has declined from 437 in 1990 to 167 in 2009. India's under-5 mortality rate reduced from 125 in 1990 to 49 in 2013 with target of 25 in 2030. HIV prevalence has fallen from 0.45% in 2002 to 0.27 in 2011. Goal 4 targets inclusive and equitable quality education. In India net enrolment ratio in primary education for both sexes is 88%. Goal 5 is to achieve gender equality and empowerment, India is on track to achieve gender parity at all education levels. Goal 6 relates to availability of water and sanitation, Goal 7 to access to energy, Goal 8 to sustainable economic growth, employment and & Goal 9 to build resilient infrastructure and industrialization. India's growth rate averaged at 7.25% in the last 5 years. Goal 10 calls to reduce inequality within and among countries. The Gini Coefficient of income inequality for India has risen from 33.4% in 2004 to 33.6% in 2011. Goal 11 targets to make cities and human settlements for all and India has launched Mission housing for all by 2022. Goal 12 relates to sustainable consumption and production patterns. Goal 13 directs urgent action to combat climate change and its impacts. Goal 14 and 15 endorse conservation of marine resources and terrestrial ecosystems. Goal 16 promotes peaceful and inclusive societies. Goal 17 asks to strengthen the means of implementation and revitalize the global partnership for sustainable development (Govt. of India, 2016). Defining indicators, financing, monitoring, and measuring progress of SDG are challenges that require deep understanding to achieve the goals (Kapoor, 2016 and TARA, 2016). Although India is committed to achieve SDG, more sincere efforts are needed to overcome the challenges.

Relevance of Gandhian thought on Sustainable Development

Mahatma Gandhi never used the word environment protection however what he said and did makes him an environmentalist. Although during his time environmental problems were not recognized as such however with his amazing foresight and insight he predicted that things are moving in the wrong direction.

As early as in 1909 in his book *Hind Swaraj* he cautioned mankind against unrestricted industrialism and materialism. Here he argued, "This [Western] civilization is such that one has only to be patient and it will be self-destroyed." He did not want India to follow the west in this

regard and warned that if India, with its vast population, tried to imitate the west than the resources of the earth will not be enough.

Gandhi helped lead India to independence, but Gombiner (2011) think if he were alive today he would be trying to save modern civilization from itself. Gandhi saw a lot of flaws in Western civilization. He wrote of men "enslaved by temptation of money and the luxuries that money can buy" who "keep up their energy by intoxication", "can hardly be happy in solitude", and who "require something to eat every two hours." What better description of 21st century America with its chaos of purple energy drinks ("energy by intoxication"), maxed out credit cards ("enslaved by luxuries"), and furiously buzzing social networks ("hardly happy in solitude")? We live in a consumer-driven economy. Consumer spending dictates the growth of our economy, and economic policy-makers are desperately trying to get consumers buying again. Gandhi saw an India of 700,000 self-contained, *sustainable*, villages, a nation thriving with local economies (Gombiner, 2011).

It should be noted that renewable sources of energy, evils of large scale industrialization and dangers of environmental pollution were recognized by Gandhi eight decades ago, as he put more emphasis on non-violent upliftment of village economy and the utilization of labour-intensive technique of production. In modern terminology, Gandhi's strategy is modified in terms of pattern of growth, which preliminary uses renewable resources and a minimum utilization of non-renewable resources. Though concern for the environment was not the focus of such prescriptions, yet such strategy helped to minimize the degradation of environment. The environment-friendly nature of Gandhian economic is further revealed when one notes the emphasis on the 'last man'. In such policy, poverty has been described as the most severe polluter.

According to Rajvanshi (2010), Gandhi's greatest contribution to sustainable development were two folds (i) his experiments in simple living and high thinking. He believed that with simple living the resources of the planet earth can sustain us comfortably and his famous saying that earth provides us enough for our needs but not for our greed is extremely apt today and, (ii) his insistence on all inclusive growth of the society and hence his focus on rural development.

Simple Living

Mahatma Gandhi advocated simple life based on physical labour in place of industrialism and consumerism. He implored people to live simply so that others may simply live. He believed that earth provides enough to satisfy every man's need but not every man's greed. So the rich must not only restrict their wants but must also treat their wealth as 'trust' for poor and use it for the welfare of poor (Mukerjee, 1958). This can be done only if people can distinguish between their real needs and artificial wants and control the later (To The Students, 1949). To him the real need meant to posses only what is absolutely necessary for the moment (Sastri, 1930). To him this would not only help the unprivileged of today but would help protect the environment for the next generation as to him the earth, the air, the land and the water were not an inheritance from our forefathers but a loan from our children. So we have to handover to the next generation at least as it been handed over to us. Thus Gandhian prescription of 'simple living' also attempts to put a check on unlimited consumption and unending exploitation of natural resources.

He also believed that one must be the change that one wants to see in the world and hence he practiced what he preached. His life was his message. So he and his wife gave away all their property. They had nothing beyond the clothes that they wore and a change or two (Sastri, 1930). He used scrapes of papers to write brief notes and reversed envelopes for reuse to send letters. Even when he used to bathe with water of free flowing Sabarmati River he consciously used only the minimum water needed for taking bath. However he did not equate simple living with abject poverty. In fact he believed that to deny a man the ordinary amenities of life is far worse than starving the body. It is starving the soul- the dweller in the body. To him poverty was the most severe polluter (Kavita, 2013). Hence poverty must be eradicated and that can be done only when everybody is taking their own share and not grabbing others share by limiting their needs and sharing their resources.

Harmony with Surrounding

However his concerns were not limited to human beings alone as he had a very strong sense of the unity of all life. He believed that all creatures had the right to live as much as human beings and felt a living bond between humans and the rest of the animate world. He believed that humans should live in harmony with their surroundings. The best part of Gandhi's ideas was that they empower the individual. It's up to each and every individual to simplify his or her life; to share his or her resources and to care for his and her surroundings (Kaushik, 1913). He criticized people for polluting the rivers and other water bodies. He criticized mills and factories for polluting the air with smoke and noise (To The Students, 1949).

Economy of permanence

The eminent Gandhian thinker and economist, J.C. Kumarappa drew attention towards the critical matters of environmental pollution and preservation of natural resources about half a century ago and exhorted that mankind should strive for establishing 'Economy of permanence,' rather than reckless destruction of natural resources. This could be achieved by a judicious minimum use of the non-renewable resource, thereby saving them for future generation and adopting a productive system in which whatever is drained out of nature is restored back through the natural process. "Work in nature consists in the effort to put forth by the various factors – insentient and sentient – which co-operate to complete this cycle of life. If this cycle is broken, at any stage, at any time, consciously or unconsciously, violence results as a consequence of such a break. When violence intervenes in this way, growth or progress is stopped, ending finally in destruction and waste... Self-interest and self preservation demand complete non-violence, co-operation and submission, to the ways of nature if we are to maintain permanency by non-interference with and by not short-circuiting the cycle of life (Kumarappa, 1984).

Recycling

Whatever is drawn out of nature is to be recycled through the natural process. Local raw material should be processed locally. What could not be produced in a decentralized system could be produced by centralized or capital-intensive method of production. While clarifying his views, he had previously asserted that "..... I do visualize electricity, ship-building, machine-making and the like existing side by side village craft..... They should not be used as a means of exploitation of others." (Harijan, 27/08/1936).

Mechanization

Mahatma Gandhi argued even in 1909 that industrialization and machines have an adverse effect on the health of people (Hind Swaraj, 1947). Although he was not opposed to machines as such; he definitely opposed the large scale use of machinery (Majumdar, 1952).

Gandhi noted that "..... The heavy machinery for the work of a public utility which cannot be undertaken by human labour has its inevitable place. But all that should be owned by the state and used entirely for the benefit of the people." (Harijan, 22/06/1935). Equal distribution of income and wealth go hand-in-hand with proper balance between centralized and decentralized methods of production in urban and rural areas respectively for the welfare of the masses. Gandhi's emphasis on labour intensive of production does not indicate that he was advocating obsolete machinery with less productivity. He was in favour of simple tools, which save individual labour and lighten the burden of millions of cottages (Young India, 1926). While clarifying the role of machinery, he mentioned that "mechanization is good when the hands are few for the work intended to be accomplished. It is an evil when there are more hands than required for the works, as is the case in India. The problem is how to utilize their idle hours, which are equal to the working days of six months in the year." (Harijan, 16/05/1936).

Mahatma Gandhi was against the craze for machinery in a labour-surplus economy like India and accepted the utilization of modern tools and implements provided they help in reducing unnecessary human labour. He wanted production by the masses and not mass production. Here, it should be noted that the adoption of labour-intensive technique of production to create job opportunities was suggested by World Development Report – 1990, especially to developing countries. It was pointed out that "...Against the background of achievement, is all the more staggering, shameful that more than one billion people in the developing world are living in poverty. Progress in raising average incomes, however welcome, must not distract attention from this massive and continuing burden of poverty. For removal of poverty and unemployment, it was suggested that".....rapid and politically sustainable progress on poverty has been achieved by pursuing a strategy that has two equally important elements. The first element is to promote the productive use of the poor's most abundant asset, labour. It calls for policies that harness market incentives, social and political institutions, infrastructure and technology to that end.....switching to an efficient, labour intensive pattern of development and investing more in the human capital of the poor are not only consistent with faster long term growth, they contributed to it". It was further noted "since labour is an abundant resource, encouraging its use is generally consistent with rapid and efficient growth (World Development Report, 1990).

Nature friendly Technological Process

Indian Planners were not unfamiliar with these views and suggestions. They were discussed by Mahatma Gandhi over eight decades ago, initially in *Hind Swaraj* and then in Young India and *Harijan* with special focus on *Khadi* and village industries. He stated "I have not contemplated, much less advised the abandonment of a single, healthy, life-giving industrial activity for the sake of hand-spinning. The entire foundation of the spinning-wheel rests on the fact that there are crores of semi-unemployment people in India..... the spinning wheel is destructive of no enterprise whatever. It is life-giving activity".

The essence of the Gandhian approach to technological progress lies in treating Nature as a friend and benefactor. This approach is opposite to what we have practicing so far in the name of technology. All decentralized technological systems which makes use of natures-in-built

processes demand a settlement pattern different from the heavily one that form our preference now. But if we take a broader view, they can become the harbingers of advancement, leading development with the help of eco-friendly technology.

When the basic problems of Indian economy are analyzed, the patterns of income distribution, inequality, poverty, unemployment still exist as they were when Mahatma Gandhi advocated the spinning-wheel as a panacea for all ills. Thus, his emphasis on *Khadi* and village industries was not a temporary measure, but a permanent solution to overcome the root problems of poverty and unemployment from India.

Conclusion

Although India has achieved high rates of growth and human index development improvment consistently but it is accompanied by persistent poverty and inequality. SDG includes targets to free the human race from the tyranny of poverty and directs to heal and secure our planet. The inter-linkages and integrated nature of the SDG calls for appropriate action at all level. Gandhian thoughts contribute to sustainable development and more relevant today than before. Looking the progress made in regard to MDG by India, more sincere efforts are needed to overcome the challenges of sustainable development which needs adaptation of the thought of Mahatma Gandhi balancing need of modern trend of economy in relation to sustainability.

References

- Gandhi, M.K. *Hind Swaraj*, G A Natesan and Co, Madras, 1947, p 99.
- Gandhi, M.K. (1926). Young India, 16-6-1926
- Gandhi, M.K. (1935 and 1936). Harijan, 22-6-1935, 16-5-1936 and 27-8-1936
- Gandhi, M.K. (1949). To the Students, Navjivan Publishing House, Ahemdabad, p 28 and 69.
- Gombiner, Joel (2011). Gandhi on Sustainable Development, retrieved from http://euhedralism.blogspot.in/2011/09/gandhi-on-sustainable-development.html
- Govt. of India (2015). *Millennium Development Goals India Country Report 2015*, Central Statistical Office, New Delhi: Ministry of Statistics and Programme Implementation.
- Govt. of India (2016). *An Overview of the Sustainable Development Goals*, New Delhi: NITI Aayog, retrieved from http://niti.gov.in/content/overview-sustainable-development-goals
- Haridas, T. Mazumdar (1952). Mahatma Gandhi- Peaceful Revolutionary, Gharles Scribner's Sons, London, p 13.
- Kapoor, A. (2016). Sustainable Development Goals, New Delhi: Lead Public Finance, Accountability Initiative at Centre for Policy Research
- Kaushik, A. (1913). Mahatma Gandhi and Environment Protection, Gandhian Institute of Bombay Sarvodaya Mandal and Gandhi Research Foundation retrived from http://www.mkgandhi.org/environment .html
- Kavita, Y.S. (1913). Development and Environment Issues with Special Reference to Gandhian Perspective, Gandhian Institute of Bombay Sarvodaya Mandal and Gandhi Research Foundation retrived from http://www.mkgandhi.org/environment/kavita_suchak.htm

- Kumarappa, J.C. (1984). Economy of Performances, Serva Seva Sangh Prakashan September, 1984, Fifth Edition, p-2, Varanasi.
- Mukerjee, Hiren (1958). Gandhi- A Study, National Book Agency, Calcutta, p 208.
- Rajvanshi, Anil (2010). Sustainable Development – the Gandhian Way, Timeless Inspirator – Reliving Gandhi retrieved from www. Sustainable Development and Gandhi, pdf.
- Shreekrishna Jha, Mahatma Gandhi- An Environmentalist With a Difference, retrieved on 11/04/13 from http://www.mkgandhi.org/environment/jha.htm
- Srinivasa Sastri (1930). 'Appreciations' in H S L Polak, Mahatma Gandhi, G A Natesan and Co, Madras, p 3.
- Technology and Action for Rural Advancement (2016). *Development Goals in India: A Study of Financial Requirements and Gaps*, New Delhi: Tara Crescent.
- UNDP (1998). Human Development Report 1997
- UNESCO (2013). Education for Sustainable Development, retrieved from http://www.unesco.org/new/en/education/themes/leading-the-international-agenda/education-for-sustainable-development/dynamic-content-single-view/news
- United Nations (2015). *Transforming our world: the 2030 Agenda for Sustainable Development*, retrived from www.un.org/sustainabledevelopment/sustainable-development-goals.

GANDHIAN ECONOMICS AND RURAL DEVELOPMENT

Dr. Prashant M. Puranik
Assistant Professor in Commerce,
Gurukul Arts, Commerce & Science College
Nanda, Tal : Korpana, Distt:Chandrapur
9860461574 (M)
prashantpuranik1970@gmail.com

ABSTRACT:

India is a developing country having 65% of population is totally depend on Agriculture sector. The economy of India is made up from three sectors. Those sectors are namely Industrial sector, Agriculture sector and commercial or service sector. Indian government has given the very much importance to the agriculture sector from first fifth year's plan to seventh five year's plan. But the fact is that, the father of the nation Mahatma Gandhi had already frame worked the policies for rural development in such a manner by which the allover development of Indian economy should be possible. No one can just imagine that the man who was having the faith on the phrase of simple living and high thinking; can make such a extremely talented and fruitful policies by which it is possible to solve most of the problems in a very easiest manner. Even today not only Indian but the foreign economist used to study these Gandhian policies. So, it is necessary to make a glance on what are the major policies on which the Gandhian Economics and Rural Development both the major works have made in a very successive manner.

KEYWORDS*: Martyrs, social ethics, convocation, devoted*

INTRODUCTION:

Indian democracy has a great historical background. It is the continuous effort of many martyrs, due to which we all are breathing today in the free India. Some of these martyrs are use to fight their battle in violent ways by the help of Weapons – called as Revolutionary. But there were the group of people who used to make their own fight by non-violent way. No doubt it was that time when it was very necessary to make the efforts of freedom by both the ways. But the fact is that, to protest against the British rules with a non-violence way was really a very difficult task. Gandhiji with his lot of subordinates have accepted this challenge and prove himself 'Saint of Sabarmati', 'Rashtrapita', 'Ahimsawadi','Mahatma','Bapu' etc. He had also called himself 'Spinner' and 'Littleman'. It is the Gandhiji's devotion and important work in Indian economics and rural development due to which he has mostly called with his nickname, 'Father of the Nation.'

OBJECTIVES OF THE RESEARCH PAPER:

Gandhiji was a great freedom fighter of India. No one can forget that, he was also a great economist as well as rural developer. The main objectives of this research paper are to study these policies prepared by Gandhiji.

HYPOTHESIS:

"Mahatma Gandhi has framed the Important Policies of Economics and Rural Development in India."

RESEARCH METHODOLOGY:

The most of the data is collected from the Secondary Source, printed and the electronic media.

LIMITATION OF RESEARCH PAPPER:

This research paper is limited up to the study of Gandhiji's contribution in the Indian economics and in the rural development.

REVIEW OF LITERATURE:

Mahatma Gandhi was the person having great Knowledge of writing skills, Philosophy, various laws, philosophy, politics, Social Ethics, Foreign Trades, International Business Management, Economics, Agriculture, Rural Development etc. This research paper will definitely help the readers to know how Gandhian thoughts of economics and rural development are beneficial for today's world.

GANDHI - AS A GREAT ECONOMIST IN INDIA:

Before getting the Independence to our country, all the rules and laws as well as the rights were centralized in the hands of British emporium. That's why it was very difficult for everybody to create his own policies. In that situation Mahatma Gandhi had framed certain excellent policies for Indian Economy due to which our country will make a rapid progresss even after getting us freedom. It is very necessary to make a glance on the some of these policies. Some of the Important economic policies framed by Gandhiji is as follows:

(1) Simple Living and High Thinking:

This was Gandhiji's first policy regarding economics. This was Gandhiji's first policy regarding economic policies of India. He himself act as per this phrase. That was the time when British Government use to offer excellent salary, clothes, food residential cottages to the Indians. By offering such things; they intend them to make nasty and illegal work. Mahatma Gandhi always strongly oppose this luxury life.

(2) Self-Employment:

The another policy adopted by Mahatma Gandhi is of Self-Employment. He knew the fact that, Indian people are having very good skill. They can develop our economy by Self Manufacturing of Homemade Products. By this way most of the peoples can enhance their standard of living. By this way Mahatma Gandhi had told the peoples that, this policy can definitely minimize the employment problem in India.

(3) Population Control:

Mahatma Gandhi was always urged the people that, the main reason of undeveloped economy of India is Immensely Rising Population. According to him ever rising population in the future for Indian Economy.

(4) The Proper use of Natural Resources:

From many decades India is exporting the lot of Natural Resources to other countries. Coal, Manganese, Water, Iron Ore, Dolomite, Lime Stone, Copper etc. are some of Natural Resources which are exported by Indians in the lot of Metric Tones every year. Mahatma Gandhi was always oppose this exporting tactics.

(5) The Natural Resources should be used for Industrial Development In India :

According to Gandhian view, the Natural Resources in India should not be exported. If we used those in India, It should be beneficial to develop India's Industrialization. So, the big employment opportunities should be created.

(6) The development of Basic Infrastructure:

Mahatma Gandhi was also a great knowledge of foreign philosophy. He was also the fond of reading books and making convocation with the talented peoples. He believed in the fact that, India can make it's allover progress, If he has developed it's basic infrastructure.

(7) Use of Indian Products:

In his most of the speeches Gandhiji urged the people to make boycott to the foreign products and to give preference to wear the dresses made by Khaadi. Most of the times people used to gather in the square of the road with the lot of foreign products with them and after collected all those products they used to got those products burned in that big fire.

(8) Non Co-Operation:

The Non Co-Operation was led by Mahatma Gandhi after the Jallianwala Bagh Massacre. It aimed to refuse to purchase British goods adopt the use of local handmade products from the Indian shops.

(9) India as a Self Individual Government:

Unless and until India is become an Independent country, It is not possible to make it's all over economic, political and ethical development. Mahatma Gandhi was strongly accepted this fact and devoted his whole life to give freedom to our country.

(10) Equality and Social Justice:

The time of British Emporium rule was very crucial for the equality and Social Justice Process in India. \Social Crisis, Castism In the society, Social Economic Imbalance, Inequality in the education System etc. was the major economic problems due to which it was taken a very much time to boost up the Indian economy. Mahatma Gandhi has strongly thrash out these points from his writings and many speeches.

MAHATMA GANDHI'S VIEW OF RURAL DEVELOPMENT:

Mahatma Gandhi was not only a great economist but also a creator the authentic policy of Rural Development. He has made the great efforts for Rural Development. Some of those efforts are as under:

(1) Co-Operative Land:

Mahatma Gandhi was having a great knowledge of Agriculture Sector. According to him, there should be a co-operative land and agriculture. Gandhiji was having faith that, this technique should be beneficial to set up of a capital to purchase seeds, Insecticides and pesticides and to make Irrigation facilities in large extent.

(2) Proper use of Natural Resources:

The Indian villages are suffering from lacking of Natural Resources. One of the major problem always rising in rural area is that of 'Availability of Pure Drinking Water.' Even today this statistical data shows that, the problem of drinking water is tremendously rising. So, World Health Organization and UNICEF have arranged Joint Monitoring Programme (JMP) and through this programme Sustained Development Goal (SDG) target 6.1 up to 2030 achieve universal and equitable access to safe and affordable drinking water for all the persons living in rural area.

(3) To enhance the Agriculture Production:

Most of the times the people in Indian village used to migrate towards the city due to insufficient Agriculture production. According to Gandhiji, If this Production Increased, the people need not go to the big cities to fulfill their hunger.

(4) To Develop the Cottage Industries:

Mahatma Gandhi was not always oppose the Industrialization process. But he believed in the fact that, most of the peoples In India is living in rural areas. They are having the lot of unemployment problems. That's why they always prefer to settle in the city to get a small job in the Industries. So, Gandhiji was thinker prospective development of cottage Industries.

(5) Fulfillment of Basic Needs:

According to Gandhiji the rural development was not possible unless and until the basic needs of the peoples are fulfill. These basic needs are food, shelter and clothes. Before just to chalk out the policies of rural development.

(6) Education Facilities:

Gandhian thought regarding rural development was based on the fact that, there must be allotment of K.G. To P.G. educational facility in rural area. The student in the rural area are also having skill and thirst of taking education.

(7) Ban on Intoxicating Drinks and Drugs:

As we all aware that, there are always lack of entertainment facilities in the village rather than urban areas. That's why they always used to take such drinks due to which they are become intoxicated within a few minutes. Gandhiji in his most of the speeches urged people to leave these bad habits.

(8) Equality In Development of Rural and Urban Areas:

Before Independence the Britishers were completely gave his full attention to develop the urban area rather than rural area. Gandhi identified this fact and tells the local leaders and peoples to make protest against this one way development system.

(9) Decentralization:

Gandhiji believed that, village republics can be built only through decentralization of social and political power. The representatives would be elected from all adults for a fixed would constitute a council.

(10) The use of Manpower rather than Machines in the Industries:

Gandhiji was strongly made support to manpower rather than the use of machines for the production in the Industriesl. According to him due to more use of machines, the problem of unemployment in India should be definitely rise. Gandhiji was strongly opposed this new mechanism.

Being a good Philosopher, from his many speeches and writings, Gandhiji has strongly accepted the factors needed for the allover rural development in India and also oppose those factors according to him was prove to be the restricted factors for the growth of rural development.

TESTING OF HYPOTHESIS:

In this Research Paper the following Hypothesis was taken,

"Mahatma Gandhi has framed the important policies of Economics and Rural Development In India."

India is country having excellent historical background As far as the Indian Economics is concerned no one should forget the great contribution of the father of the nation 'Mahatma Gandhi'. In framing his own economic and rural development policies while India is under governance of the British Rules. Gandhiji directed the people by various ways regarding Rural Development. For this he told the peoples to adopt and to Ignore certain factors. Today we are enjoying the fruits of our developed economy and extremely developed rural areas. It is possible due to sustained efforts of Mahatma Gandhi. So, by all this Information we can definitely say that, this Hypothesis is quiet Correct.

CONCLUSION:

India is under the rule of British Government for near about 350 Years. Many Soaked Martyrs had sacrificed their life for the India's Freedom. Some of them were tried to fight this battle of India's Independence by the help of Weapons – The Revolutionary Way while others have made this effort by the peaceful and Non – Violent way. Mahatma Gandhi was the major leader, major contributor and pioneer due to which it is possible to get freedom to our country, to chalk out Intelligent economic policies and excellent policies for rural development. So, we can definitely say that, Mahatma was the key-person who made the excellent Economic Policies for the development of Indian Economy and for the Rural Development.

BIBLIOGRAPHY

1. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Gandhism
2. www.mkgandhi.org/.../gandhianeconomicstomodernindia
3. www.yourarticlelibrary.com/thegandhianapproachtoruraldevelopment/pujamandal
4. Gandhiphilosophy.blogspot/2009/08/11/gandhiandruraldevelopment
5. www.mkgandhi/articles/gandhianperspectiveofdevelopment/ushathakkar
6. www.mainstreamweekly.net/article5224/2014/2016/inevitabilityofgandhianvillagereconstructioninruralinida:GGandharrao
7. M.timesofindia.com/city/ahmedabad/2011/04/6/manofletters/nicknamesreveal/ashishvashi

GANDHIAN THOUGHT AND PEACE BUILDING

Dr. H. M. Kamdi,
Adarsh Arts &Commerce College, Desaiganj(Wadsa)
E-mail-h.kamdi@yahoo.com

Abstract:

Mohandas Karamchand Gandhi or 'Mahatma Gandhi' is known and remembered as the supreme leader of the Indian freedom struggle, his main aim in life was always the attainment of truth. He was always a philosopher and his philosophy was always practical and down-to-earth. He did not believe in empty metaphysical argument or nearly building complex structures of idea but always tried to implement his idea in everyday practice. Gandhi defines God as truth. By 'truth' he does not mean subjective or relative truth, but the absolute truth, 'the Eternal principle', that is God. As he says, "I worship God as truth only. I have not yet found him but I am trying seeking him and daily the conviction is growing upon me that he alone is real and all else is unreal". (The story of my experiment with Truth P.4) Later on, Gandhi went one step further to say **'Truth is God'.** Thus for him truth was the sovereign principle of morality and it was also the absolute truth, the eternal principle. Truth is, therefore, both the definition of the most central dimension and the very essence of the absolute. And by saying 'Truth is God', he affirms that God is to be found whenever there is truth-in-action. Therefore Truth or God meant the genuine morality of action here and now. Since this is so, the end does not justify the means. The means must be equally noble and pure. Thus his religion is not about mythologies, theologies and rituals, but about the moral action of the individual. 'Truth is God' means that God is essentially to be found in the truthful, moral act performed here and now.

Keywords: Mahatma Gandhi, Truth, Ahimsa, Moksha, Nutritious diet

Introduction:

The doctrine of **Ahimsa,** non-violence was always at the very center of Gandhi's thought and work. He always believed in non-violence and lived by it. There was an obvious relationship between the doctrine of truth and non-violence :Satya and Ahimsa. As Gandhi says, I made the early discovery that if I was to reach God as truth and truth alone I could not do so except through a perfect vision of truth can only follow a complete realisation of Ahimsa. To see the universal and all-pervading spirit of truth face to face one must be able to love the meanest of creation as oneself Ahimsa is the farthest limit of humility (My experiment with truth, P.401-2). For Gandhi, Truth and Ahimsa are so intertwined that it is practically impossible to disentangle and separate them. As he puts it, Ahimsa is the means and Truth is the end. Thus, Ahimsa becomes our supreme duty and Truth becomes God. "Truth exists, it alone exists. It is the only God and there is but one way of realising." (Collected works. vol 44, p.59). Thus, Ahimsa is the fundamental means by which Truth can be realised, that is, **Moksha** can be achieved. Ahimsa includes non-violence in thought, feeling and action and also means total humility, love, compassion and service. The idea of Satyagraha is the logical culmination of the ideals of Truth and non-violence. Gandhi used Satyagraha – passive resistance – as a strategy very successfully

during the freedom struggle and in fact, it remains the most important aspect of the Gandhian thought. The novelty of this concept was the re-interpretation of both, the political action and the political aim in religious terms. Gandhi's political thought is obviously influenced by his religious ideas and therefore truth and non-violence are the important aspects. He also gives equal importance to the means with which to achieve the end. For him, the end does not justify the means.

Result & Discussion:

As a political thinker he was obviously an anarchist. He saw both, property and the state, as statement of violence. He believed that as people realize themselves and as they became natural, they will start regulating themselves. In such a case, there will be no need for any extent, regulatory mechanism and then state will wither away. The ideal society envisaged by Gandhi would be a class-level and state society, where every village will be a self-sufficient unit. There will be no cities, and no heavy industry and there will be no need for the police and the counts and pressers. Political power will be completely de-centralized and voluntary co-operation will characterized economic, political and social relations. Thus, in Gandhi, the saint and the politician go in hands, proclaiming the power of truth, non-violence, love and peace.

Material Method:

This is the descriptive research paper base on secondary data. The literatures is collected from various journal, books, magazines, periodicals, various reports, publications of recent research papers available in different websites.

Acknowledgement:

If you never learned to make yourself a priority when you were younger, this is and excellent time to start. Good self-care means you are conscious about and attending to all the various things required to keep yourself as healthy and happy as possible. Because, ultimately, you are accountable for your own health and well being!

1. **See your primary healthcare provider regularly.** Now, I'm not saying this just because I am a geriatric physician assistant. You'll do yourself a big favour if you stay on top of your healthcare you may have. This is true whether you have ongoing medical concerns or are feeling great. Medicare now pays for an "Annual Wellness Visit," a session in which you and your physician can discuss your health and other important aspects of your life. Take advantage of this resource!
2. **Feed yourself a healthy, nutritious diet.** We are discovering more every day about the relationship between food and health. Stay away from highly processed, packaged, fast

and fried foods. Eat your fresh fruits, veggies, grains, and lean proteins. And known that it is not uncommon to have emotional struggles with food. Often people eat inappropriately in response to stress, sadness, boredom, or depression. Still other people have the opposite reaction- they stop eating when they feel sad. I encourage you to talk with your medical care provider if you struggle with your relationship to food.

3. **Get a good night's sleep.** Regardless of age, the body needs good, sound sleep to restore and recover. A brief catnap during the day is okay, but don't overdo it. Staying active during the day will help you sleep well at night. In most cases, I discourage my patients from using prescription sleep aides – I think they can sometimes do more harm than good.
4. **Exercise regularly within your ability.** This will look different for everyone. But regardless of whether you're walking, doing a seated exercise class, or maybe even yoga or a round of golf, exercise has great benefits to the mind and body. It will help keep you physically strong and flexible while feeling good mentally and emotionally. Just check with your medical provider before starting any new strenuous activity to be sure it is appropriate for you.
5. **Stretch your ming.** It's proven that exercising your mind is helpful in staving off Alzheimer's disease and other dementias. Use it or lose it – keep your brain agile and fit by challenging it with crossword or Sudoku puzzles. Join (or start!) a book club. Teach your grandson chess. Sitting in front of the television does not qualify.
6. **Consider psychotherapy.** Therapy is not just for "crazy" people. Millions of people of all ages, all around the world, turn to professional counsellors to talk through their problems and to become more psychologically healthy. Therapists and support groups can be invaluable resources, especially during times of loss or other duress.
7. **Spend time with Mother Nature.** We all know this intuitively: fresh air and sunshine are food for us! We were not meant to be cooped up inside all the time. Whether it means sitting outside in the courtyard for an hour, going for a leisurely walk through the neighbourhood, or attending your grandchildren's soccer game, get outdoors when you can. (And wear your sunscreen.)
8. **When it comes to treating health challenges, explore something new.** As you're probably aware, there is a whole host of alternatives to our familiar western medical model of healthcare. Often referred to as "alternative," "complimentary," or even, yes, "holistic" medicine, these approaches include acupuncture, homeopathic medicine, herbal remedies, chiropractic care, massage therapy, energy work (such as reiki and healing

touch), and many others. I encourage my patients to have an open mind and explore possibilities. The documented medical research literature tends to support some of these therapies and dismiss others. Yet different people find that, according to their belief systems and personal experience, alternative approaches can be greatly effective.

Conclusion:

However, it is vital that you tell your doctor/provider the things you're doing, especially when it comes to nutritional supplements and herbal or homeopathic remedies. Yes, these compounds are natural. But they still have side effects and interact with prescription medications. St. John's Wort, for example, a popular herbal mood-lifter, interacts badly with prescription Coumadin. If you are taking Coumadinn and decide to experiment with St. John's Wort, you are likely to experience undesirable consequences. Again, I can't emphasize enough how important it is to communicate openly with your physician. Our "golden years" can be some of the best times of our lives if we are open and allow them to be. As you face your day-to-day challenges, remember that everything you do affects everything else. Even small steps in a positive direction can have a profound impact on your life as a whole.

References:

1. ***Websites:***
   www.mkgandhi.org/nonviolence
   www.mkgandhi.org/articles
   www.cug.ac.in/academic_programmes
   www.spiritualeducation.org
   www.gandhiashramsevagram.org
2. *M. K. Gandhi, An Autobiography or the Story of My Experiments with Truth (Ahmedabad: Navajivan Publishing House, 1948) 538.*
3. *SashiPrabaha Sharma, Gandhian Holistic Economics (New Delhi: Concept Publishing Company, 1992) 10.*
4. *RaghavanIyer, Moral and Political Writings of Mahatma Gandhi (New York: Clarendon Press, 1987) 166.*
5. *M. K. Gandhi, Satyagraha, B. Kumarappa (ed.) (Ahmedabad: Navajeevan Publishing House, 1951) 6.*
6. *M. K. Gandhi, Hind Swaraj (1338; Ahmedabad: Navajeevan Publishing House, 1996) 8.*
7. *M. K. Gandhi, Sarvodaya, ed. BharatanKumarappa (Ahmedabad: Navajivan Publishing House, 1954).*
8. *M. K. Gandhi, Village Industries, (Ahmedabad: Navajivan Publishing House, 1995).*
9. *R. K. Prabhu and U. R. Rao, The Mind of Mahatma Gandhi (Ahmedabad: Navajivan Publishing House, 1987) 199.*

BEYOND DUTY AND OBLIGATION : INTERPRETING GANDHI IN THE FRAMEWORK OF VIRTUE ETHICS

Sachin Kumar
M.Phill Research Scholar
At Centre For Political Studies,
JNU

What is the right thing to do; what shall be guiding us towards right actions; these questions have been always central to philosophical inquiries of all times. Modern moral philosophy—largely dominated by liberalism—has a very troubling response to these dilemmas. While thinking of what shall guide humans towards right action, liberalism owes its allegiance exclusively to the framework of reason and rationality. Liberals believe that reason alone can guide and motivate the course of moral action. But as we entered into the first half of 20th century, and witnessed perhaps the biggest tragedies in theh history of human civilizations, the believe about universality of reason began to get scattered. This failiure of reason to provide strong enough foundation for right action led a shift in philosophy towards thinking in terms of virtuous character as basis of morality. this paper seeks to capture this shift by interpreting Gandhian morality in the framework of virtue ethics. unlike liberal's exclusive emphasis on contemplative rationality, Gandhi's notion of morality takes an integrated view of human nature and sees virtuousness of character as foundational to right action. In this paper, our primary focuss is on virtue of care as we've argued that ethics of care is central to Gandhi's view of Dharma.

What do we mean by virtue ethics framework? Virtue ethics refers to a framework in which morality is conceived not as obligatory in the form of law or duty but founded on intrinsic goodness of agent's character. The idea of an ethics of virtue is often contrasted in the literature of moral philosophy with that of an ethics of duty, principle, and rules. In other words, virtue ethics is presented as a contender to both Kantian deontology and utilitarian ethics. Kantian rationalism takes morality to be a duty and obligation and his categorical imperative sustains itself on the condition of the universality of its application. There is no space for person's own desires, feelings or inclinations here: whether or not one feels like following certain rules is given very little attention. What matters for Kant is the rationality of the act: whether or not qualifies standards of reason and rationality. This notion of ethics gives very little attention to motives and intentions behind the moral acts and completely ignores the role of person's character or dispositions might play in forming the moral behavior. Arriving at a moral judgment in Kantian scheme is primarily a contemplative exercise which demands only comprehensive use of rationality and applying of his famous tool of categorical imperative.

Much of modern moral philosophy was dominated by this Kantian rationalism. "The key thinkers of the Enlightenment] all reject any teleological view of human nature, any view of man as having an essence which defines his true end. But to understand this is to understand why their project of finding a basis for morality had to fail. The moral scheme which forms the historical background to their thought had…a structure which required three elements: untutored human nature, man-as-he-could-be-if-he-realized-his-tells, and the moral precepts which enable him to

pass from one state to the other. But the joint effect of the secular rejection of both Protestant and Catholic theology and the scientific and philosophical rejection of Aristotelianism was to eliminate any notion of man-as-he-could-be-if-he-realized-his-tells…the abandonment of any notion of a telos leaves behind a moral scheme composed of two remaining elements whose relationship becomes quite unclear" (MacIntyre: 1984, p. 54–55).

Virtue ethics framework presents an alternative way of conceiving morality. focus now is shifted to agent's overall virtuous character rather than singular acts. "The hope of some ethicists has been to develop a system of ethics somehow centered on virtue evaluation, rather than the abstract act evaluation of 'right' and 'wrong' favored by Kantian and Utilitarian morality" (Triansky: 1990).

Two distinguishing features of the framework of virtue ethics can be identified here. One, "virtuous character of virtuous individual is emphasized here rather than the actions of the individual." And secondly, virtue ethicists have maintained that ethics should be founded in archaic notions such as goodness and excellence rather than framework of obligatory abstract principles. "It is suggested that morality should center on character, dispositions, virtues and vices, rather than on external conduct, rules, and oughts or ought nots. Morality is internal, and therefore should form the character" (Frankena: 1973). Virtues are then certain admirable character traits and dispositions--such as kindness, courage, generosity, compassion—acquired through a long habituation and as part of one's overall character formation. This further involves that the right action in virtue ethics is motivated by these character traits or dispositions, not by contemplative rationality alone. Love conceived as virtue, for instance, is not a mere act of loving, but the very state of being love itself.

Swaraj: a Foundation of Ethics of Virtue

We argue in this essay that Gandhian notion of ethics can be interpreted in this framework of ethics of virtues. His notion of morality has centrality of rightness of motives and primacy of good character. swaraj, translated as self-rule or self-governing, is a foundational principle of gandhian morality. rightness of actions and goodness of motives flows from this overarching idea of swaraj. Being an ultimate aim of life (purushartha) and highest state of virtuousness, swaraj brings the ultimate enlightenment or Moksha and lays down foundations for human flourishing. Swaraj is not a rule or a law which is externally imposed. Rather, it is the state of being: an enlightened state in which one meets with the divine in the form of truthfulness and humanness.

It is well known that the idea of political and economic swaraj is central to Gandhi's politics. However, he emphasizes that this would not be enough to have complete swaraj. To have complete swaraj the people would need the enjoyment of spiritual swaraj – inward freedom – achieved through spiritual transformation. Spiritual swaraj contains two basic component elements: self-discipline and self-transcendence (Parel:2009, P. 05). Self-discipline is a praxis that helps to manage and control one's antisocial passions such as greed, covetousness, possessive individualism, the desire to dominate others, untruthfulness and egocentrism. Gandhi was aware of the fact that human beings are morally fragile sometimes. And thus constant self-correction is needed in the form of self-disciplining. But it must be remembered here that Self-discipline for him did not mean the asceticism of the old type—involving renunciation of the

world. In fact the contrary was true. Disciplining was seen essential towards ensuring a virtuous worldly life. [1]

Self-transcendence entails highest state of virtuousness of character. it is a disposition that allows one to move beyond one's narrow concerns and achieve truthfulness and freedom and develop an attitude of Sewa or service towards others. "Self-transcendence is the pursuit of spiritual enlightenment or tattva jnana – deep experience of the truth of things. Spiritual exercise such as prayer and meditation prepares one for this. The goal here is the orientation of the acting person towards Truth and freedom from egoism. The spiritual capital accumulated in this experience is invested in action in the fields of politics, economics and social reform. Thus, the pursuit of spiritual transcendence promotes the disinterested service (seva) of fellow citizens without regard to their gender, religion, caste or class. The pursuit of self-transcendence too is consistent with the life-affirming pursuit of the 'canonical aims of life'" (Parel:2009, P. 06).

The most interesting feature of this notion of Swaraj is its experiential character. Swaraj is not a mere thought or contemplative exercise. It must be experienced in real practice, forming a solid and stable basis for right action, as part of being itself. as Gandhi puts it: And in this you have a definition of Swaraj. It is Swaraj when we learn to rule ourselves. It is, therefore, in the palm of our hands. Do not consider this Swaraj to be a dream. Here there is no idea of sitting still. The Swaraj that I wish to picture before you and me is such that, after we have once realized it, we will endeavor to the end our lifetime to persuade others to do likewise. But such Swaraj has to be experienced by each one for him. (HS, 71)

Clearly then, attaining of Swaraj fundamentally rests upon the transformation in one's overall character in a right direction.

Gandhi and Virtue of Care

Liberal framework of rights and liberties takes an isolated individual as basic to its theoretical scheme. Consequently we have a notion of a self that takes an unencumbered self to be truly free—and such individual as authentic bearer of rights. Kantian self is an unencumbered self, completely capable to reason while remaining detached from other faculties of human nature—such as desires and passions—and also disassociated from its social and cultural moorings. In contrast, we discussed that ethics of virtue takes an integrated view of human nature--taking into consideration the role of feelings, motives, commitments, in making of a comprehensive character. in this section, we shall particularly focuss on ethics of care. We argue that virtue of care is central to Gandhi's ethical scheme, and his politics too revolves around this virtue.

Gandhi conceives care as a virtue, especially in its public expression. According to Kupfer, Gandhian conception of care can be explicated in following three points. "First, care is portrayed as the basis of a coherent public stance by consistently shaping Gandhi's political decisions and public policy. Second, the character of Gandhi rounds out the motive of

[1] Self-disciplining here must not be seen equivalent to externally imposed moral duty or obligation, as in the Kantian framework. Rather, it must be interpreted as having an instrumental value in terms of creating appropriate conditions for the formation of virtuous character or self-transcendence. disciplining as part of habituation.

benevolence with subsidiary virtues, such as attentiveness and responsiveness. Finally, we see how the virtue of care is structured by the building blocks of the care perspective: responsibility and need, relationship and mutual dependency, context, and narrative. Because the care ethic places such emphasis on the distinctive narratives of individuals and their relationships, explicating that ethic in terms of an extended narrative, such as the film Gandhi, seems especially appropriate, if not essential" (Kupfer:2007, P. 06).

Firstly, As a public stance or public strategy of resistance, virtue of care takes civil disobedience and nonviolence as of central importance. For Gandhi, the only morally acceptable way to change the law is nonviolent resistance because only nonviolence treats the oppressor in a respectful, caring way and only nonviolence keeps the protester from descending into the viciousness that violence produces. Secondly, Attentiveness and responsiveness are essential facets of care according to Kupfer. these involve the motivation to pay attention to others: listening to them and responding in a sensitive manner. Being attentive to others concerns is the first step towards ensuring the welfare of others but being attentive and responsive may not be enough, for it might not motivate one to act benevolently. Thus we need an additional quality in a virtuous agent: sympathetic engagement. Gandhi's life as well as thought exhibits all these facets of virtue of care. For example, Soon after coming back from south Africa, he decided to visit into the hinterlands of India so that he could understand and feel the concerns of the masses. He did it pretty well. In fact he wasn't just listening to people's concerns; he actually took up their issues and brought to the British government. Champahran Satyagrah is one such example about which he writes that miseries of farmers there moved him so much that he couldn't stop himself from taking up the responsibility of registering the resistance against government.

Thirdly, virtue of care involves The idea of social constitution of the self, which is further evident in Gandhi's insistence on the interdependence of all Indians: each member of the community, regardless of class, gender, or religion, contributes to Indian society. "Gandhi thinks and speaks of India as a family. [2] Just as Ruddick's maternal thinking demands that parents take responsibility for the family's welfare, so does Gandhi demand that Indian leaders take responsibility for all of India's people" (Kupfer: 2007, P. 08). The self that Gandhi configures exists in the public sphere of ashram, village, and country.

The most significant facet of care is nonviolence. Nonviolence exhibits intent to reform the behavior of those in power but without the threat of physical harm. Avoiding violence is arguably a minimal requirement of the motive of benevolence and the virtue of care (Slote: 2001, P. 28). The intent of nonviolence is to treat oppressors with respect and goodwill. By awakening in oppressors a similar humanitarian regard for protesters, nonviolent resistance paves the way for constructive discourse and reconciliation. Treating the opponent with nonviolence and respect opens up a possibility of transformation of the relationship between victim and the oppressor.

[2] Presumption behind this remains Gandhi's idea of humanity as larger family in which everyone is equal member. Familial relationship presumes society to be relational in which members are not independent of each other: they're mutually dependent in terms of needs and recognition. Hence, each and every person can be recipient of love and sympathy of each other.

Use of such language allows a possibility for dialogue and negotiation between both sides wherein they can try to rework or reinvigorate their relationship. Love shown towards your opponent allows what Gandhi terms as changing of heart of the opponent. Clearly then, Gandhi's insistence on nonviolence is one of the most important facets of the virtue of care which remains at the centre of his ethical schema.

Conclusion

Gandhi had reminded us that passive resistance of a coward is more dangerous than violence of a courageous person. observance of nonviolence is thus not a sign of weakness. Observance of nonviolence for Gandhi is deeply rooted in person's virtuous character where courage and truthfulness are central values. Clearly then, conceiving Gandhi in virtue ethics framework enables us not only in terms of freeing his notion of morality from the traps of duty and obligation, but also to expand the scope of his thought to new interesting themes in the history of ideas. Our discussion on ethics of care was an attempt to introduce such new theme in discourse on Gandhi.

Bibliography

trianosky, gregory. "what is virtue ethics all about ." American Philosophical Quarterly, 1990: 335-344.

robert, robert c. "aristotle on virtues and emotions ." Philosophical Studies: An International Journal for Philosophy in the Analytic Tradition,, 1989 .

simpson, peter. "contemporary virtue ethics and aristotle." review of physics (philosophy education society), 1992: 503-524.

nussbaum, martha c. "virtue ethics: a misleading catagory? ." The Journal of Ethics, 1999 : 163-201.

kupfer, joseph. "gandhi and the virtue of care ." hypatia , 2007.

frankena, william k. "the ethics of love conceived as ethics of virtue ." religious ethics , 1973: 21-36.

Slote, Michael. Morals from motives. New York: Oxford University Press, 2001.

Parel, Anthony J. 'Hind Swaraj' and Other Writings. Cambridge University Press, 2009.

Parekh, Bhikhu. O]Gandhi's Political Philosophy:l A Critical App reciation, Ajanta, Delhi, 1995.

GANDHIAN THOUGHT AND PEACE BUILDING

Prof. Ms. Shubhangi Vitthal Gaikwad
Assistant Professor
M.Com, M.Phil, PGDIB, PGDBM, NET, Ph.D(Pursuing)
(MAEER'S Arts Commerce & Science College Pune, 38)

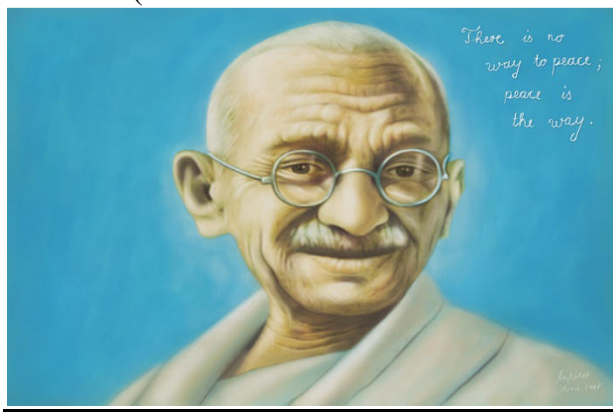

The term **'Peace'** means settlement, calm and harmony. It deals with compact, agreement, treaty of peace, stillness, absence of opposition and accord. However, the term has also got multiple other meanings in addition to peace, including justice, good health, safety, well-being, prosperity, equity, security, good fortune, and friendliness.

Peace means a lack of serious disagreement or argument and liberty from fear of violence between diverse social groups in the society. Many old leaders throughout history have got success in building and maintaining regional and economic peace as well as economic and social growth with the help of many peace based agreements that resulted from reducing and removing conflicts and motivated mutual and two-sided peace talks. Peace often involves negotiation, and as a result is backed with considerate dynamic listening and communicating to improve and produce an authentic common understanding between people or groups.

21st Century is being characterized by period of intimidation, wars, transferable diseases, ecological disturbance, and other disorders etc. We all thus, live in a Century of great Violence which seems to be more dangerous than the earlier period. To meet the challenges regarding the same Governments of developed countries have followed certain policies of increasing their military strength to restrain problems of people/society and

resolve the whole world's problem of violence today. Peace is generally formed on the basis of violence only. Formation of Peacemaking is based on conflicts, resolution and violence. For the social development and economic progress of any country or economy only two major factors plays an important role namely,

a. Peace in minds of individuals and
b. Peace in society.

So, finally we can say that there is really a need of dealing with:

a. Understanding and
b. Experience of peace.

There is really a need to not only understand but also to address the problems at the -------

-------Individual

-------Social

-------National and

-------Communal levels where in a social structure of the society is built on principles of --------

-------values of justice,

-------equal opportunity

-------humanitarianism

-------multiculturalism and finally

-------peace which is achieved through a common discussion

In this regard it is important to understand the role of peace in studies and nation building. So, to deal with this one will have to understand the various mechanisms of domination and containment that can be used within the society. We will have to think about the various ways through which conflicts can be determined, that will ultimately decrease the option or the stage of aggression without affecting other values of justice or freedom in the country.

Therefore, Peace Making or Peace Building is a Multi-tasking field. And, I think in order to understand the root cause of this issue we will have to promote the Gandhian principles of non-violence not only in our country but, in the whole nation. We will have to have one Peace related subject in the teaching curriculum only that at the same time

will promote and expand the theories from political science, social sciences, education, philosophy, international relations, psychology and many more. There should be a new course introduced at the school and college level which will follow both educational and psychosomatic paradigms. This course will motivate the people to have ability of creativity and imagination which can be used in promoting peace in the country.

Thus, there is a need to promote the Gandhian thought of non-violence and equality that will again help to understand Gandhiji"s word "an eye for an eye, leaves the whole world blind". This will definitely bring social justice through negotiations on peacemaking or peace forming or peace building in the country and world. This particular thought is based on following objectives:

1. To get knowledge about the hypothetical aspects and real meaning of the term Peace. 2. To focus on the need, importance, meaning, plan and extent of Peace Psychology in the country.
3. To define the meaning and scope of Peace Education in the country.
4. To emphasize the suggestions of Peace Studies for the country, state and society with the help of organization, management and peace-building ideas.
5. To understand the procedure involved in Peace Building and Peace-Making in various societies so as to achieve the hunt of social justice in the country.

Thus there is a need to focus on the four words that is truth, non-violence, Sarvodaya and Satyagraha which indeed are the four pillars of Gandhian thought. Therefore, if the courage is constant with reality and diplomacy, the honest and diplomatic form will routinely result in giving well to the society. Thus, I also think that Gandhi's ideas, words and actions if are used properly, it will definitely guide to build a proper future of our country.

Finally, I would like to end-up by quoting the famous following lines of Mahatma Gandhiji that is:

"You must be the change you want to see in the world"

'गांधी और अम्बेडकर : एक निरन्तर संवाद'

सुचित कुमार यादव*

गाँधी और अम्बेडकर भारतीय इतिहास के दो प्रमुख धरोहर है। प्रस्तुत लेख में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान उठ रहे महत्वपूर्ण विषयों पर गाँधी और अम्बेडकर के विचारों की चर्चा की जायेगी। राष्ट्रीय आन्दोलन की बहुलता को ध्यान में रखते हुए सामान्यत मान्यता के विपरित गाँधी व अम्बेडकर को एक–दूसरे के पूरक के रूप में व्याख्यायित किया गया है।

Key-words = राष्ट्रीय आन्दोलन, बहुलता, पूरक, संवाद

परिचय (INTRODUCTION)

20वीं शती का प्रारम्भिक दौर भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। एक तरफ औपनिवेशिक शासन की क्रूरता व द्वितीय विश्व में शामिल होने की कवायत दोनों साथ–साथ चल रहा था वहीं दूसरी तरफ स्वतंत्रता हेतु भारत में उपनिवेश विरोधी लहर तेजी से बढ़ रहा था। इतना ही नहीं स्वतंत्रता के बाद जिस भारत नामक राज्य का निर्माण किया जायेगा उसकी प्रकृति को लेकर भी बहस की धार तेज हो रही थी।

व्यापक रूप से देखें तो सम्पूर्ण भारत अपने सामने उद्देश्य के रूप में दो महत्वपूर्ण सवाल स्पष्ट कर चुका था – तय किया हुआ पहला सवाल था – *ब्रिटिश शासन का खात्मा।* हम पाते हैं कि 20वीं शदी के पहले दूसरे दशक तक आते–आते औपनिवेशिक शासन की जड़ भारतीय प्रतिरोध के कारण डगमगा चुकी थी। गाँधी, अम्बेडकर, नेहरु तथा अन्य व्यक्तित्व के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन की अनेक धाराएँ एक स्वतंत्र भारत के निर्माण में अपनी प्रस्तुति दे रहे थे।

तात्कालिक समय का दूसरा प्रश्न था – स्वतंत्रता के पश्चात् *भारत नामक राष्ट्र राज्य की प्रकृति का निर्धारण*। सामान्यता इस प्रश्न का द्वितीयक माने जाने की भूल किया जाता है। ऐसा कहीं से भी तर्कसंगत नहीं दिखता है। दोनों प्रश्नों को एक–दूसरे के पूरक के रूप समझा व देखा जाना चाहिए।

भारत का हर आम जन मानस जो स्वतंत्रता हेतु अपनी आहुति दे रहा था वो मात्र इसलिए नहीं कि किसी राष्ट्रीय नेता ने ऐसी करने का आह्वान किया है। प्रत्येक जन–जन के दिलों–दिमाग में भविष्य के स्वतंत्र भारतीय राज्य का एक सपना था और यही सपना औपनिवेशिक सत्ता से लड़ने हेतु उनेक प्रेरणा का स्रोत था।

इस तरह हम पाते हैं कि उपरोक्त दो उद्देश्य तय कर लिया गया। निश्चित उद्देश्य के बावजूद इस दौरान इसके प्राप्ति के तरीके को लेकर मत–भिन्नता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। ऐसा क्यों? इस मत–भिन्नता का कारण था – *भारतीय बहुलता,* चूँकि भारतीय समाज में अनेक स्तर पर विविधता पायी जाती है। भाषायी विविधता से लेकर नृजातीय विविधता तक सामाजिक से लेकर आर्थिक विविधता तक स्पष्टतया देखी जा सकती है।

* सुचित कुमार यादव दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीतिक शास्त्र विभाग में पीएचडी स्कॉलर है।

राष्ट्रीय आंदोलन में समाजवादी, उदारवादी, उग्रवादी क्रांतिकारी तथा नरमपंथी जैसी धाराएँ इन्हीं विविधता के प्रतिबिम्ब स्वरूप देखी जा सकती है।

गाँधी और अम्बेडकर के बीच मत भिन्नता को इसी विविधता के विस्तार के रूप में देखा जाना चाहिए न कि एक–दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी या टकराव के रूप में। उन्हें एक–दूसरे के पूरक के रूप में समझा जाना चाहिए।

अम्बेडकर और गाँधी के बीच संवाद

1. राष्ट्रीय उद्देश्य के प्रश्न को लेकर संवाद
2. विशिष्ट मुद्दे को हल करने के तरीके पर संवाद

निर्धारित उद्देश्यक प्रश्न को लेकर गाँधी और अम्बेडकर की वरियता में थोड़ी भिन्नता देखी जा सकती है – एक तरफ गाँधी का ध्यान औपनिवेशिक सत्ता और उनके द्वारा ले आयी गयी आधुनिकता की आलोचना पर केंद्रित था। गाँधी ब्रिटिश शासन, मशीनरी सेना के साथ उनके द्वारा बनाये गये विशिष्ट किस्म के *'राज्य' नामक संस्था* की भी आलोचना करते है। चूँकि गाँधी भारत के आम–जन मानस तक अपनी पहुँच बनाने की कोशिश में थे। ऐसे में वे बड़े–बड़े दार्शनिक व तार्किक आधारों पर तर्कों के बजाय आम–जन–मानस के रोजमर्रा के जीवन के बड़े पहलुओं के आधार जैसे रेलवे, डॉक्टर, वकील, आधुनिक सरकारी मशीनरी को निशाना बनाते हैं वहीं स्वदेशी का नारा देकर विदेशी वस्तुओं, सामानों, स्कूलों, कॉलेजों को नकारते हैं। अंग्रेजों की सभ्यता की परिभाषा व सभ्य होने के दावे का भी तार्किक आलोचा करते हैं।

गाँधी जी लिखते हैं कि आम लोग बाहरी दुनिया की खोजो और शरीर के सुख में वृद्धि को ही सभ्यता के रूप में पहचान करते हैं। उदाहरण के लिए सौ साल पहले युरोप के लोग जैसे घरों में रहते थे आज उसये ज्यादा अच्छे घरों में रहते हैं, इससे पहले लोग चमड़े के कपड़े पहनते थे, युद्ध में भालों का इस्तेमाल करते थे, आज लम्बे पतलून पहनते हैं, शरीर को संवारते हैं तथा युद्ध में बन्दूक का इस्तेमाल करते हैं। यही उनके लिए सभ्यता की निशानी है। किसी मुल्क के लोग जो जूते वगैरह नहीं पहनते जंगली माने जाते हैं और जैसे ही युरोप के बने कपड़े पहनना सीखते हैं सभ्य माने जाने लगते हैं। पहले लोग खुली हवा मे जो अपने को ठीक लगे उतना काम स्वतंत्रता से करते थे। अब हजारों आदमी अपनी गुजारे के लिए इकट्ठा होकर बड़े कारखानों या खानों में काम करते हैं उनकी हालात जानवरों से भी बदतर हो गई है। पहले लोग को मार–पीट कर ही गुलाम बनाया जा सकता था। आज लोगों को पैसे का और भोग का लालच देकर गुलाम बना लिया जाता है। पहले लोगों को जैसे रोग नहीं थे, वैसे अनेक रोग लोगों में पैदा किए गए हैं और उसके साथ डॉक्टर की खोज करने में लगे हैं ऐसा करने से अस्पताल बढ़े है यह सभ्यता की निशानी मानी जाती है।

ऐसी सभ्यता को ही मोहम्मद साहब की सीख के मुताबिक ''शैतानी सभ्यता'' कहते है। हिन्दू धर्म इसे निरा 'कलयुग' कहता है। सभ्यता एक अदृश्य रोग है।

हिंदुस्तान को रेलों, डॉक्टरों, और वकीलों ने कंगाल बनाया। अगर रेल न हो तो अंग्रेजों का काबू हिन्दुस्तान पर जितना है उतना नहीं रहता। रेल से महामारी फैली है। अगर रेलगाड़ी

न होती कुछ ही लोग एक जगह से दूसरी जगह जायेंगे और इस कारण संक्रामक रोग सारे देश में नहीं पहुँच पायेंगे। रेलवे से अकाल बढ़े है क्योंकि रेलगाड़ी की सुविधा के कारण लोग अपना अनाज बेच डालते हैं, जहाँ महंगाई हो वहां अनाज खिच जाता है। लोग लापरवाह बनते हैं और उससे अकाल का दुःख बढ़ता है रेलवे से दुष्टता बढ़ती है बुरे लोग अपनी बुराई तेजी से फैला सकते हैं, हिन्दुस्तान में जो पवित्र स्थान थे वो अपवित्र बन गए है। पहले लोग बड़ी मुसीबत से वहां जाते थे। ऐसे लोग वहां सच्ची भावना से ईश्वर को भजने जाते थे। अब तो ठगो की टोली सिर्फ ठगने के लिए वहां जाती है।

अंग्रेज मानते हैं कि रेलवे ने भारत में राष्ट्रवाद को जन्म दिया जबकि सच्चाई यह है कि जब अंग्रेज नहीं थे तब भी भारत एक राष्ट्र था, लोगों का रहन सहन विचार राष्ट्रीय स्तर पर मेल खाता था।

गाँधी वकीलों की आलोचना यह कह–कर करते हैं कि वकीलों ने हिन्दुस्तान को गुलाम बनाया। हिन्दू–मुसलमान झगड़े बढ़ाये और अंग्रेजी हुकूमत को यहाँ मजबूत बनाया। वकीलों का धंधा उन्हें अनीति सिखाने वाला है। यदि हिंदू–मुसलमान आपस में लड़े है तो एक भला आदमी कहेगा कि आप लोग पुरानी बातों को भूल जाये, इसमें दोनों का कसूर रहा होगा। अब दोनों मिलकर रहिये। लेकिन जब वे वकील के पास जाते हैं तो वकील अपने मुवक्किल के पक्ष में अनाप–सनाप तर्क गढ़ता है अपने फीस के लिए वह इस झगड़े को बढ़ाता रहेगा। अंग्रेजी अदालतों के बूते ही अंग्रेज हम पर राज किये है। अदालत लोगों के भले के लिए नहीं बल्कि सत्ताधारी वर्ग के सत्ता को कायम करने के लिए है। जब लोग अपने झगड़े खुद से निपटा ले तो तीसरा आदमी उस पर अपनी सत्ता नहीं जमा सकता।

डॉक्टर हमें लापरवाह बनाते हैं। खुद रोगों को जन्म देते हैं। आधुनिक डॉक्टर शरीर के गलत जतन के लिए लाखों जीवों को हर साल मारते हैं, जिंदा जीवों पर प्रयोग करते हैं ऐसा करना किसी भी धर्म के अनुकूल नहीं। सभी धर्म जीवों की हत्या का विरोध करते हैं। डॉक्टर हमें भ्रष्ट बनाते हैं।

इस तरह गाँधी ने विभिन्न संस्थाओं जैसे ब्रिटिश संसद, न्यायालय वकील, डॉक्टर, रेलवे इत्यादि के साथ–साथ सभ्य होने और सभ्यता के मान्यता की कड़ी आलोचना किया। विकल्प के रूप में गाँधी जी ने सत्याग्रह व अहिंसा के माध्यम से स्वराज्य की स्थापना का सुझाव दिया। स्वराज का मतलब है हम अपने ऊपर राज करें। स्वराज्य मिल जाये तो अंग्रेजों से भी हमारी गुलामी मिट जायेगी। गाँधी जी अंग्रेजों को निकालने के बाद अंग्रेजी संस्थाओं व ढाँचे के शासन को भी अंग्रेजीयत का शासन बताते हैं। इसी क्रम में वे सरकारी मशीनरी सेना व संसद की आलोचना करते है। राजे–राजवाड़ों का खात्मा कर राज्य विहीन स्वराज्य की वकालत करते हैं जहाँ समाज का अन्तिम व्यक्ति भी स्वतंत्र महसूस करे। इस तरह स्वराज्य में गाँधी उस दूसरे प्रश्न पर भी विचार रखते हैं जोकि *स्वतंत्रता के बाद भारतीय राज्य की प्रकृति क्या हो।*

डॉ. भीमराव अम्बेडकर आर्थिक नीतियों को आधार बनाकर तथा ब्रिटिश सत्ता की हिंसा, क्रूरता व अन्याय के आधार पर उपनिवेशवाद का विरोध किये। उन्होंने समय–'समय पर

स्वतंत्रता हेतु अनेकों तर्क व बहस किया। इनके अलावा अम्बेडकर का ध्यान दूसरे प्रश्न *''स्वतंत्र भारत कैसा हो''* पर अधिक था। वो सामाजिक सुधार पर अधिक जोर देते हैं। सामाजिक–धार्मिक कुरीतियों, अन्यायपूर्ण परम्परागत मान्यताओं जातिगत भेदभाव, छुआछूत, महिलाओं का शोषण इत्यादि विषयों पर डॉ. अम्बेडकर बेबाकी से अपने तर्क रखे इसके खात्मे के लिए अथक प्रयास करते रहे।

जिस तरह गाँधी स्वराज्य में एक अन्तिम व्यक्ति की चिंता व्यक्त करते हैं उसी तरह अम्बेडकर के सपनों में भी एक ऐसा भारत दिखता है जिसमें अन्तिम से अन्तिम कमजोर व्यक्ति को भी उतना ही अधिकार व समानता होगा जितना प्रथम श्रेणी में बैठे लोगों को प्राप्त होगा। अम्बेडकर के सपनों में समाज के बहुसंख्यक वर्ग की आबादी दलितों, शोषितों, बच्चों, युवाओं, कामगारों, महिलाओं की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब देखा जा सकता है। वे स्वतंत्र भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास के पक्षधर थे।

गाँधी से इतर अम्बेडकर राज्य को नकारने के बजाय राज्य को एक ऐसा यंत्र मानते हैं जिसके द्वारा भारत की बहुतायत समस्या को हल कर सर्वांगीण विकास किया जा सके। राज्य के महत्व को समझते हुए शासन व्यवस्था की कुंजी रूप में माने जाने वाली संविधान की रचना में अम्बेडकर ने अमूल्य योगदान दिया।

समाज के हर तबके को शिक्षा व रोजगार न दे पाने के लिए अम्बेडकर अपने कई लेखों में ब्रिटिश सरकार की आलोचना पेश किया। उन्हीं के प्रयासों का परिणाम है भारतीय संविधान में अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान है।

स्त्री अधिकारों की वकालत करते हुए अम्बेडकर ने तर्क दिया कि भारत में स्त्री–पुरुष असमानता का मूल कारण है *ज्ञान और सम्पत्ति* पर स्त्रियों का अधिकार न होना। उन्होंने मनुस्मृति या उन तमाम अन्य धर्मों ग्रन्थों की ओलाचना किया जिनमें स्त्री के दोयम दर्जे का प्रावधान मिलता है।

जिन श्रमिकों की चिन्ता गाँधी जी सभ्यता की आलोचना में व्यक्त करते हैं उन्हीं श्रमिक वर्ग के उद्धार के लिए अम्बेडकर ने अथक प्रयास किया। उनका मानना था कि भारत में मजदूरों के दो बड़े दुश्मन हैं – पहला – *ब्राह्मणवाद और दूसरा पूँजीवाद*। ब्राह्मणवाद से तात्पर्य था आजादी, बराबरी व भाईचारे की भावना को नकारने वाली विचारधारा। अम्बेडकर ट्रेड यूनियन व मजदूरों के हड़ताल के अधिकार का समर्थन करते थे। मजदूरों के प्रति उनकी चिन्ता को देखते हुए 1942 तात्कालिक वायसराय ने उन्हें अपनी कार्यकारिणी के लिए नियुक्त किया और श्रम विभाग का कार्य सौपा था। 1946 में उन्होंने न्यूनतम मजदूरी निर्धारण संबंधी एक बिल भी पेश किया था। अम्बेडकर केवल स्वराज्य ही नहीं बल्कि एक ऐसे स्वराज्य का सपना देखते थे जिसमें शोषित मजदूर व पिछड़ों को उचित स्थान मिले।

अम्बेडकर का मानना था कि जब तक आर्थिक विषमता का खात्मा नहीं होगा शेष सभी विषमताएँ ज्यों का त्यों बनी रहेगी। बिना आर्थिक विषमता दूर किए किसी प्रकार की सामाजिक राजनीतिक समता की बात बेइमानी रहेगी। इसके लिए उन्होंने खेती को राष्ट्रीय उद्योग का दर्जा देकर भूमि का नागरिकों के बीच समान वितरण पर जोर दिया।

इस प्रकार हम पाते हैं कि जैसे राष्ट्रीय महत्व के उपरोक्त दो प्रश्न एक–दूसरे के पूरक थे वैसे ही गाँधी और अम्बेडकर एक–दूसरे के पूरक के रूप में विभिन्न विषयों पर संवाद स्थापित करते हैं।

दलित समस्या पर गाँधी व अम्बेडकर के बीच संवाद

यहाँ मैं गाँधी व अम्बेडकर के बीच 1930 के दशक में हुए जटिल लेकिन मंत्रमुग्ध कर देने वाले टकराव का जिक्र कर रहा हूँ। एक विशिष्ट मुद्दे पर गाँधी व अम्बेडकर ने मतभिन्नता के साथ–साथ संवाद स्थापित किया यह संवाद उनके एक–दूसरे के पूरक होने की प्रामाणिकता को स्थापित करता है।

अस्पृश्यता गाँधी जी के केन्द्रीय चिंताओं में से एक थी। यद्यपि उन्होंने जातिवादी अहं का नाश करने के आध्यात्मिक उत्साह को कभी राष्ट्रवादी संघर्ष के वृहत्तर लक्ष्य की अपनी प्राथमिकताओं पर हावी नहीं होने दिया। अस्पृश्यता के प्रति गाँधीवादी दृष्टिकोण मूलतः धार्मिक और आध्यात्मिक था। गाँधी का मानना था कि अस्पृश्यता की समस्या *आत्म/स्व (Self)* की समस्या है, यह समूची हिन्दू समाज के सेल्फ की समस्या है। उन्होंने व्यक्ति के सेल्फ की धारणा को पूरे हिन्दू समाज के सेल्फ की धारणा में रूपान्तरित किया। उनका मानना था कि व्यक्तिगत रूप में जातिगत अहंकार पूरे हिन्दू समाज के अहंकार का हिस्सा है। ऐसे में आत्मशुद्धि (Self Purification) एक पवित्र रस्म होगा जिससे जातिगत अहंकार खत्म होगा।

डॉ. अम्बेडकर ने इस समस्या को सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक सत्ता की संरचना में दलितों के लिए स्वतंत्र राजनीतिक पहचान बनाने के संदर्भ के रूप में परिभाषित किया। लेकिन गाँधी जी के लिए यह मूलतः एक धार्मिक सवाल था और वह भी हिन्दूवाद का अंदरूनी मामला। गाँधी के लिए धर्म कर्मकाण्डों से बढ़कर सत्य व अहिंसा का अनुपालन था।

अम्बेडकर के लिए अछूत प्रथा, जाति–व्यवस्था का ही एक उपउत्पाद है, अछूत रहेंगे क्योंकि जातियाँ बरकरार है। जाति–प्रथा के विनाश के सिवाय अछूतों के उद्धार का कोई दूसरा रास्ता नहीं है। अम्बेडकर गाँधी को लिखते है कि आप अस्पृश्यता के उन्मूलन तक ही क्यों सीमित है? क्यों न जाति–प्रथा को समाप्त किया जाए क्योंकि जाति–भेद व अस्पृश्यता भेद में केवल मात्रा का ही तो अन्तर है।

इसके विपरीत गाँधी, जाति को एक सामाजिक संस्था के रूप में देखते है। हो सकता है यह संस्था, भौतिक उन्नति में कुछ लोगों को बाधा पहुँचाती हो लेकिन आध्यात्मिक उन्नति में जातियाँ कोई बाधक नहीं है। लिहाजा जाति–प्रथा और अस्पृश्यता के बीच मात्रा का नहीं बल्कि किस्म (Quality) का अन्तर है।

ऐसे में हम पाते है कि जहाँ अम्बेडकर जाति व अस्पृश्यता को एक–दूसरे से जुड़ा हुआ मानते है वहीं दूसरी तरफ गाँधी दोनों में गुणात्मक अन्तर देखते है अस्पृश्यता को गाँधी पूरी तरह धार्मिक, वह भी हिन्दू धर्म की अन्दरूनी समस्या मानते है। वही अम्बेडकर इस पूरे देश की राष्ट्रीय समस्या व सामाजिक, राजनीतिक समस्या के रूप में देखते है।

अस्पृश्यता को हल करने के लिए एक तरफ जहाँ गाँधी आत्म–चिंतन व आत्म–शुद्धिकरण पर जोर देते है वही अम्बेडकर का मानना है कि यह एक राजनीतिक

समस्या है जिसे समान राजनीतिक, आर्थिक अधिकारों द्वारा समान गरिमा सुनिश्चित करके ही हल किया जा सकता है। इस समुचित बहस के बाद एक तरफ जहाँ गाँधी, अम्बेडकर के तर्कों से प्रभावित होकर छुआछूत को एक राष्ट्रीय समस्या मानते हुए राज्य द्वारा दलितों को विशेष प्रावधान दिये जाने पर राजी हुए। वहीं दूसरी तरफ अम्बेडकर गाँधी के तर्कों से प्रभावित होकर धर्म के महत्व को स्वीकार करते है। दलित समस्या का सामाजिक–धार्मिक हल ढूँढ़ते हुए उन्होंने दलितों को बौद्ध धर्म स्वीकार करने का आह्वान किया।

मूल्यांकन (Conclusion)

उपरोक्त व्याख्या के आधार पर हम यह कह सकते है कि गाँधी और अम्बेडकर भले ही राष्ट्रीय महत्व के अलग–अलग प्रश्नों पर कम या अधिक तीव्रता से जोर देते रहे है अथवा एक ही मुद्दे पर आपसी मत–विविधता रखते रहे है लेकिन दोनों एक–दूसरे के विरोधी कहीं से भी नहीं माने जा सकते। दोनों को एक संवाद के रूप में देखा जाना चाहिए जिससे एक वृहद उद्देश्य की पूर्ति होती है।

सुचित कुमार यादव, दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र विज्ञान में पीएच.डी. शोधार्थी है।

BIBLIOGRAPHY

Ambedkar,B. R, Annihilation of Caste, Originally published: 15 May 1936.

---------- The Buddha and His Dhamma, Originally published: 1957.

---------- The Problem of the Rupee: Its Origin and Its Solution, History of Indian Currency & Banking, Create Space Independent Publishing Platform, 2016

---------- IDEAS OF A NATION: B. R. AMBEDKAR, Penguin UK, 2010

Chavan, Sheshrao, True Faces of Gandhi and Ambedkar, Atlantic Publishers & Distributors (P) Ltd 2016

GandhiMahatma, HindSwaraj,Maheshwari Publication (2016)

----------My Experiments With Truth, The Write Place Publication (1 December 2015)

---------- India of My Dreams : Ideas of Gandhi for a Vibrant and Prosperous Modern Indi a, Diamond Pocket Books Pvt Ltd, 2017

---------- Gandhi on Non-Violence, Editor, Thomas Merton, New Directions Publishing, 2007

---------- The Wit and Wisdom of Gandhi, Editor Homer A. Jack, Courier Corporation, publication, 2012

---------- Third Class in Indian Railways - Scholar's Choice Edition, Scholar's Choice, public, 2015

Mantri, Ganesh, Gandhi AurAmbedkar (Hindi), Prabhat Prakashan; 1 edition (1 August 2011)

महात्मा गांधीजीची सत्याग्रह आणि ग्राम विकासा सबंधी विचार

प्रा. डॉ.राजेंद्र एम. झाडे
राज्यषास्त्र विभाग प्रमुख
के.डी.डी महाविदयालय चामोर्शी

प्रस्तावना :–

महात्मा गांधीजीनी राजकीय चळवळीच्या बरोबर सामाजिक सुधारणांचीही सांगड घातलेली आहे. गांधीनी सामाजिक सुधारणांचा कार्यक्रम हातात घेतला. तसेच अस्पृष्यता निवारण्यासाठी मोहीम सुध्दा हातात घेतली. स्वातंत्र्याची चळवळ सूरु करण्याचा त्यामागचा दृष्टीकोन होता. कारण विविध समाज घटक एकजिनसी झाले. नाही तर बलवान बनत नाही. हिंदुत्व वाद्यावर पुर्वीपासून चालत आलेल्या चालीरीती, परंपरा, रुढी आणि नितीनियम यांच्यासह हिंदुत्ववाद्याची पुर्नस्थापना गांधीजींना करायची होती.

महात्मा गांधी समन्वयवादी होते. नैतीकता, सत्य, व अहिंसा हा त्यांच्या राजकारणाचा पाया होता. त्यामुळेच त्यानी ठरविल्याप्रमाणे पाकीस्तानला 55 कोटी रूपये द्यावेत या मागणी करण्याकरीता त्यांनी उपोषण केलेले नव्हते तर हिंन्दु–मुस्लिमांच्या ऐक्याशिवाय राष्ट्र सामर्थ्याशाही होणार नाही. ही त्यांच्या धारणा होती देशाच्या हिताकरीता जे.जे करणे आवश्यक आहे ते.ते केले पाहिजे यावर गांधीजीचा भर होता या देशात जो धनिक वर्ग निर्माण झाल आहे तो ब्रिटीश राजतंत्राच्या आश्रयानेच निर्माण होऊ वाढलेला आहे. व ब्रिटीशाच्या हातची सत्ता हिसकावुन तो आपल्या हाती घेण्याइतके सामर्थ्य त्यांच्या अंगी येऊ शकत नाही.

महात्मा गांधी – सत्याग्रह

सत्याग्रह या शस्त्राचा वापर दुर्बलांकडुन अन्य पर्यायांच्या अभावी केला जाऊ शकतो तो व्देष–वृध्दीतून होण्याचीही शक्यता असते. हिंसा होण्याचाही शक्यता नाकारता येत नाही. प्रतिपक्षात शरण आणुन त्याची नामुष्की करणे सत्याग्रहात मुळीच शक्य नाही. व्देष किंवा सुड या भावनांमधुन सत्याग्रह होऊच शकत नाही सत्याग्रह हे आत्मिक सामर्स्थाचे कार्य असून येशु खिस्त, सांक्रेटिस हे त्याचे मूर्तीमंत आविष्कार आहेत. विरोधकाशी वागताना हिंसेचा मार्ग न अवलंबिता त्याला सहानुभुतिपुर्वक चुकीच्या मार्गावरून परावृत करण्याची भूमिका सत्याग्रहीची असली पाहीजे त्याकरीता स्वतः क्लेश सहन करण्याचीही तयारी असली पाहिजे.

सत्याग्रह म्हणजे सत्य आणि अहिंसा यांच्या मिलापासुन निर्माण होणारी एक अदम्य शक्ती आहे. दुसऱ्या पारडयात जगातल्या सर्व हिंसक शक्ती टाकल्या तरीही सत्याग्रह शक्तीचे पारडे जड राहणे अटक आहे. अशी एक अभिनय संकल्पना गांधीजीनी सत्याग्रहाच्या स्वरूपात सादर केलेली आहे. ती जागतीक क्षेत्रात गांधीकडुन मिळालेली. अनमोल देणगी आहे. सत्याग्रहाच्या रूपाने गांधीजीनी जे सामुहिक लढयाचे तंत्र

दिले ते मार्क्सच्या वर्गसंघर्षापेक्षा अनेक बाबतीत वेगळे आहेत. सत्याग्रह ही एका विशिष्ट वर्गाची कृती नाही तर वर्गजागृत व संघटीत कायेकर्ते सत्याग्रहासाठी पुरेसे नाहीत तर त्यापेक्षा अधिक कठोर शिस्तीची, सयंमाची व तयारीची गरज सत्याग्रही साठी असते. सत्याग्रहीने विचार आणि कृती या दोन्हीमध्ये अहिंसक असले पाहिजे.

सत्याग्रह हे मानवी जीवनाचे शास्त्र व कला असल्यामुळे जीवनाचा जस – जसा विकास होत जाईल तस – तसे त्याचेही स्वरूप परिपुर्ण होत जाईल. त्यांचे अंतीम स्वरूप कसे राहील हे आज सांगता येणे अशक्य वाटते असे गांधीजींना वाटते. आंतरीक विश्वास हा सत्याग्रहाचा गाभा असतो. सत्याग्रहाच्या संघर्षात संख्याबळाला मुळीच महत्व गांधीजीनी दिले नाही. एक परिपुर्ण सत्याग्रही स्त्री किंवा पुरूष घडवून आणण्यास समर्थ असतो. सत्याग्रही होण्यासाठी आत्मसंयमन, ब्रम्हचर्य, शाकाहार, कृत्रिम व बनावट सभ्यतेपासून स्वेचा पुर्ण, दारिद्रय, अनासक्ती, आश्रमवास आणि गीतेतील कर्मयोगांचे आचरण आवश्यक असतात.

"स्वयंपुर्ण स्वयंशासीत खेडे गावाचा संघ म्हणजे राज्य" ही महात्मा गांधीजीची राज्य संकल्पना होती. आधुनिकीकरणामुळे खेडेगावाची पुर्वी असलेली साधी सरळ जीवन शैली चा ऱ्हास होत आहे. गांधीजीच्या मते खरी लोकशाही निर्माण करावयाची असेल तर प्रत्येक गाव जास्तीत – जास्त स्वयंपुर्ण स्वयंशासीत झाले पाहिजे. खेडगावांना स्वायतत्ता देऊन मध्यवर्ती सरकारचे त्यावर कमीत–कमी नियंत्रण असावे. खेडेगांवातील लोकांनी परस्पर सहकार्याने सर्वाच्या गरजा भागविण्यात मोठया उद्योगांवर अवलंबुन रहावे लागणार नाही. सगळयाचे जिवन समान असेल सोनार, लोहार, चांभार, गुरव, कोळी, न्हावी, सुतार, परिट इतर समाजातील घटकांनी समान महत्व निर्माण व्हावे. यांच्या मदतीने स्वयंपुर्ण खेडी तयार करावीत असा गांधीजीचा दृष्टिकोण होता. तेव्हाच खरे स्वातंत्र्य आणि खरी समता निर्माण होतील असा गांधीजीचा विश्वास होता. म्हणुनच महात्मा गांधीजीनी आपले स्वयंसेवक खेडया–खेडयात पाठविले. खेडयात स्वयंसेवक पाठविल्यानंतर त्यांनी स्वयंसेकाना सुचित केले की, त्यांनी खेडेगावात राहत असतांना गांवाच्या लोकाकडुन आपली स्वतःची कामे कमीत–कमी करून करावे. तसेच शक्य झाल्यास खेडे गावातील मुलांना खेळण्याची संधी मिळण्याची त्यांनी खटपट करावी.

आरोग्य – महात्मा गांधी

ग्रामीण आरोग्य सदृह करावयाचे असेल तर तो गांव निरोगी असला पाहिजे. निरोगी समाज तयार करण्यासाठी आरोग्याकडे लक्ष देणे गरजेचे असते. त्याकरीता आपल्या अनुयायांना चळवळीची माहीती देऊन त्याव्दारे राजकारण विद्वान व श्रीमंत लोकांच्या हातुन गरीबाच्या झोपडी पर्यंत कसे पोहचवता येईल. यांची माहिती देतात. गांधीजीच्या याच धोरणाची मुहुर्तमेढ साकी तालुक्यात बाळु भाई मेहता, यशवंत वेसळे इत्यादी अनुभव्यानी ग्राम सुधारणा करून राष्ट्रनिर्मीतीस उत्तेजन देत होते. त्यातुन राष्ट्रनिर्मीतीस देऊन कार्य करीत होते. गांधीजीच्या स्वयंसेवकानी गावकऱ्याकडुन स्वयंपुर्ण खेडी निर्मितीचा निर्धार केला. गावातील आरोग्याचे नियमांचे

उल्लंखन होत असल्याचे आठळुन आले आहे तर त्यांनी ती गोष्ट गावक-यांच्या नजरेला आणावी अशा स्पष्ट सुचना गांधीजीनी आपल्या स्वयंसेवकांना दिलेल्या असल्यामुळे व स्वयंसेवकानी त्याचे काटेकोरपणे पालन केल्यामुळे ग्रामसुधारणा होण्यास मदत तर झालीच. परंतु भारतीय राजकीय आंदोलनाच्या वेळी हिच एकता देशसेवेसाठी कामात आली.

महात्मा गांधीजीनी ग्रामीण विकासासाठी स्वयंसेवकाना केलेल्या सुचना

भारतीय स्वतंत्र्य संग्रामात गांधीजी बरोबर स्वयंसेवकानी महत्वपुर्ण कार्य केलेले आहे. सर्वच स्वयंसेवकांनी महात्मा गांधीजीच्या सुचनेचे पालन केले.

1. सत्याग्रहीनी लक्षात ठेवले पाहीजे की, हे एक धर्म युध्द आहे.
2. सत्याग्रहामध्ये उध्दटपणाला वाव नाही.
3. सत्याग्रहामध्ये हिंसेला वाव नाही.
4. कसलेही चालाखी करण्याचा प्रयत्न करणार नाही.
5. खेडेगावात कार्य करीत असतांना स्वयंसेवकांना लोकांकडुन आपली कामे कमीत–कमीत घ्यावेत. ज्या ठिकाणी पायी जाणे शक्य असेल तेथे वाहनाचा उपयोग टाळावा. साधे अन्न घेण्याचा निर्धार ठेवावा.
6. खेडगांवामधुन फिरत असतांना स्वयंसेवकानी तेथील आर्थिक व शेक्षणिक पाहणी करावी.
7. शक्य झाल्यास खेडेगावातील मुलांना शिकविण्याची संधी शोधावी त्या करीता खटपट करावी.
8. टापला विरोध कायद्याच्या अंधळया अंमलबजावणीला आहे.
9. घरगुती भांडणात ते तेत्व आपण वापरतो त्याचाच वापर आपल्याला त्या प्रकरणी केले पाहिजे.
10. स्वयंसेवकांनी कोणत्याही परिस्थितीमध्ये सत्याचा अवलंब केला पाहिजे.
11. तंटामुक्त गांव असावे.
12. आरोग्यांच्या नियमांचे उल्लंघन करू नये.
13. सत्याग्रहामध्ये कोणत्याही ठिकाणी किंवा कोणत्याही परिस्थितीमध्ये शस्त्राच्या परवानगी नाही.

महात्मा गांधीजीनी मांडलेली ग्राम संकल्पनाच कार्य पृथ्वीतलावर मानव निर्मीतीपासुन समुह पध्दत हिच ग्रामपध्दत होती. देशाच्या उन्नतीसाठी ग्रामविकास महत्वपुर्ण मानलेला आहे. प्रत्येक गांव स्वावलंबी राहील. गावातील लोक शांती पुर्ण व गौरवशाली जिवन व्यतीत करतील. प्रत्येक गावात पंचायत राहील. त्यात स्त्रि–पुरूष समानता राहील अहिंसात्मक समाजाची स्थापना होवुन तंटामुक्त गावाची निर्मिती होईल. गावातील पंचायत ग्रामप्रशासक राहील. या निर्मल गावात प्रत्येक व्यक्ती स्वयंपुर्ण असेल. त्यांना तिथेच रोजगार निर्माण

केला जाईण. रोजगार मिळालेल्या लोकांना भत्ता देण्यात येईल. प्रत्येकाने स्वतःवर नियंत्रण ठेवावे. दुसऱ्याच्या मार्गात अडचण बनणार नाही आपल्या सर्व आवश्यक कर्तव्याची पुर्ती करण्याची साधने ग्रामपंचायती जवळ उपलब्ध राहतील. गांधीजीचा आदर्श समाज पिरॅमिड सारखा नाही गोलाकार राहतील. व्यक्ती त्याचा केंद्रबिंदु राहील. गावातील कायदेविषयक, न्यायविषयक आणि शासनविषयक सत्ता ग्रामपंचायत कडे राहील. समाजात समता राहील. व्यक्ती गावासाठी, गाव देशासाठी बलिदान करील.

समारोप

गांधीजीनी भारतीय जनसामान्यांशी सबंध साध्य केले तेवढे आजपर्यंत कोणत्याच भारतीय किंवा जागतिक नेत्यालाही शक्य झाले नाही. गांधीजीची जीवनशैली त्यांची धार्मीक परिभाषा व प्रतीक, ग्रामीण समस्येसंबधी असलेले अचूक ज्ञान इत्यादीमुळेच त्यांना इतरांशी सबंध साधता आले होते "स्वराज्य" या संकल्पनेच या देशात सर्वप्रथम गांधीजींनी जनसामान्यांचा आणि लोकशाहीचा संदर्भ प्राप्त करून दिलेला आहे. स्वराज्य प्राप्तीनंतर सत्ता जनतेच्या हातात राहील अश्याप्रकारे जनसर्वभौमत्वाचा पहिला पुरूस्कार गांधीजीनी केला आहे. परंपरा आणि आधुनिकता यांचा मेळ घालण्याची किमया महात्मा गांधीजींना साध्य झाल्यामुळे त्यांना हे विराट कार्य करता आले.

भारताचे प्रधानमंत्री श्री. नरेंद्र मोदी यांनी महात्मा गांधी यांच्यावर प्रभावित होऊन संसद सदस्याला एक गाव दत्तक घेण्याची सुचना केलेली आहे. ग्रमिण जिवनातील प्रमुख समस्येवर तसेच शासन संबंधीत निर्णयाचे समाजातील सर्व वर्गांना सहभाग घेता येईल गावातील कमजोर व्यक्तीना सदृढ बनविण्याचे कार्य जेणे करुन ते आपले विकास करु शकेल. गावाचा आर्थीक विकास करण्याच्या दृष्ठीने कृषीमध्ये विविधता कृषी आधारीत उद्योग, पशुधन, बागायती, इत्यादी पैलुवर लक्ष केंद्रीत करणे असे उद्येश ठेवून गाव विकास करते. संसद सदस्याचा असते.

महात्मा गांधीजीचे जे विचार आजच्या काळात अतिशय महत्वपुर्ण आहे कारण त्याच्या विचाराची सुरुवात आजच्या काळात होत आहे. सरकारने "डॉक्टर आपल्या दारी " ही संकल्पना आणली. त्यामुळे ग्रामिण आरोग्यासाठी डॉक्टर घरोघरी जाऊन ग्रामिण स्वास्थ सुरक्षित ठेवण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न सुरु आहे.

महाराष्ट्र सरकारने तंटामुक्ती समिती प्रत्येक ग्रामपंचायती तंटामुक्त करण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न सुरु आहे. यांचे श्रेय महात्मा गांधीजीच्या विचाराना आहे.

महात्मा गांधीजीच्या स्वप्नातील भारत घडविण्याचा प्रयत्न महाराष्ट्र सरकारने अंगिकारला आहे. त्या दृष्टीने अनेक विचार योजना तयार होत आहे. याच कारणाने गांधीजीची ग्रामस्वराज्याची संकल्पनेला महत्व प्राप्त झााले आहे.

संदर्भ सुची

1) डॉ. भा. ल. भोळे.– भारतीय आणि पाश्चिमात्य राजकीय विचार पिंपळापुरे पब्लिकेशन नागपूर

2) जगन फडणिस – महातम्याची अखेर मेहता प्रकाशन पुणे.

3) वा. भा. पाटील – भारतीय राजकीय विचारवंत मंगेश प्रकाशन नागपूर

4) संचालक – प्रसिध्दी विभाग महाराष्ट्र राज्य मुंबई महात्मा गांधी वाडमय लोकसंग्रह खंड 13

5) शि. गो. भावे – महात्मा गांधी संकलित वाडमय खंड 14

6) सच्चानंद मोरे – लोकमान्य ते महात्मा खंड 2

7) प्रा. रा. ज. लोटे – भारतीय विचारवंत मंगेश प्रकाशन नागपूर

Gandhian Philosophy Relevance In The 21st Century

- Dr. Subhash. K. Zinjurde
Head of Marketing Department,
New Arts, Commerce and Science
Ahmednagar 414001

Introduction- Mahatma Gandhi bequeathed to us three guiding principles: Ahimsa (or nonviolence), Satyagraha (or the force born of truth and nonviolence) and Sarvodaya (or upliftment of all).). It is the value of these principles that we have to rediscover if we want to deal effectively with today's challenges.

It is true that the world of today is vastly different from the world of Mahatma Gandhi. The fundamental issues he was confronted with, namely colonial subjugation, has disappeared from our world. Racial discrimination too has been blunted significantly. At the same time. new threats to peace, harmony and stability have emerged. And it is one of the paradoxes of the 21st Century that while the establishment of peace has become the world's single greatest imperative, the traditional instructions of preserving peace have been found to be increasingly ineffective. Whether it is ethnic nationalism or religious chauvinism, economic inequality or military might- all of them powerful drivers of conflict in today world there is no doubt that we are in great need of a new paradigm for solving conflicts.

The Gandhian technique of mobilizing people has been successfully employed by many oppressed societies around the world under the leadership of people like Martin Luther King in the United States, Nelson Mandela in South Africa, and now Aung Saan Sun Kyi in Myanmar, which is an eloquent testimony to the continuing relevance of Mahatma Gandhi.

More than ever before, Gandhi teachings are valid today, when people arc trying to find solutions to the rampant greed, widespread violence. and runaway consumptive style of living. Anu Aga, one of India's foremost women achievers, says that while, in the name of retaliation, violence and hatred are being perpetrated today Gandhi gospel of nonviolence makes immense sense.

Satyagraha- Satyagraha is the force which embodies principles of truth, love and non-violence. Satyagraha was an unwavering moral compass and guiding force behind his life's quest. Political leaders of contemporary times need to understand and assimilate Mahatma's ways of life and teachings. Satyagraha is synthesis of Sanskrit words satya (truth) and agraha (holding firmness/insistence.)In his words "Truth (satya) implies love ami firmness (agraha) engenders and therefore serves as synonym for force. I thus began to call the Indian movement Satyagraha, that is to say, the force which is born of truth and love or non-violence, and gave up the use of "passive resistance" in connection with it, so much so that even in English writing we often avoided it and used instead the word "Satyagraha". The divine objective was to convert the opponent to stop opposing the just end. In current times, if we can develop mutual trust and cooperation, we can build a society in which people would be encouraged to shed feelings of hatred and inclination towards violence. It all work for improving the society in which they live, relations will become harmonious on their own and the whole world will become a peaceful place to live.

Nonviolence : In Gandhi's Satyagraha, truth is inseparable from Ahimsa. Gandhi formed Ahimsa into the active social technique, which was to challenge political authorities and religious orthodoxy. At the root of Satya and Ahimsa is love. While making discourses on the Bhagavad-Gita, an author says: Truth, peace, righteousness and nonviolence, Satya, Shanti, Dharma and Ahimsa, do not exist separately. They are all essentially dependent on love. When love enters the thoughts it becomes truth. When it manifests itself in the form of action it becomes truth. When Love manifests itself in the form of action it becomes Dharma or righteousness. When your feelings become saturated with love you become peace itself. The very meaning of the word peace is love. When you fill your understanding with love it is Ahimsa. Practicing love is Dharma, thinking of love is Satya, feeling love is Shanti, and understanding love is Ahimsa. For all these values it is love which flows as the undercurrent.

In the past century many places in the world have been drastically changed through the use of brute force, by the power of guns - the Soviet Union, China, Tibet, Burma, many communist countries in Africa and South America. But eventually the power of guns will have-to be changed by the will of the ordinary people.

Conflict and inequality seem an inevitable part of the human condition. Mahatma Gandhi's greatest lesson to the world was that this need not be destructively so. Conflicts can be resolved and inequalities can be contained. But without worthy means, worthy ends can never be attained.

Today must the counties of the world are facing various kinds of internal and external crisis. Due to unprecedented changes in social, political, economic and cultural spheres, awakening amongst the various groups of the people has reached to the high level. The political discourse, these days, is centered on a global war on terror. And indeed, terrorists who target innocent men, women and children deserve no quarter. But today's enemies are not just individuals; they are also ways of thinking and perceiving the world itself. Countering violence with even more violence does not provide a durable solution. Whatever else Mahatrna Gandhi may have done in our circumstances, surely strengthening the well-springs of discourse and dialogue must play a central part in it. And he would have gone even further. He would have looked within himself. For him, external engagement went hand in hand with internal interrogation.

Sarvodaya- Sarvodaya, literally uplift of all, defined Mahatma Gandhi's agenda tor independent India. Gandhi philosophy of inclusive growth is fundamental to the building of a resurgent rural India. In India, economic development has been mostly confined to the urban conglomerates. In the process, the rural India that comprises 700 million people has been given short shrift. Gandhi philosophy of inclusive growth is fundamental to the building of a resurgent rural India. He believed in "production by the masses" rather than in mass production, a distinctive feature of the industrial revolution. It is surprising, even paradoxical, that these days Gandhian philosophy should find increasing expression through the most modern technology! Now, it is possible to establish small-scale and medium-scale factories in smaller towns and remote corners of the country, thanks to the phenomenal innovations in communication and information technologies. New technologies have brought in widespread and low-cost electronic connectivity that enables instantaneous contact between industrial units and the sellers and

consumers of their products. Location and logistics are no more a limitation or constraint for industrial development.

To quote Sam Pitroda. "While the twenty-first century has been defined by globalisation, free markets, privatization, liberalization... it has also been marked by violence, extremism, inequity, poverty, and disparity. Amidst all this, if one poses the question of relevance of Gandhi to our age, one is struck by an astounding need for him for our times, Gandhi ideals... and leadership hold an extremely relevant moral and social mirror to our society." Thus, the Gandhian model and the modern economy seem to be getting closer to each other.

Environment- To these are now added the new threat of environmental degradation and climate change, as well as new diseases like HIV-AIDS. The question to ask is not whether Mahatma Gandhi is relevant or not. The real issue is whether we have the courage and strength of mind to follow in his footsteps, whether we are prepared to live our lives by what he preached and most importantly, practiced.

What is required is a radical change in our thinking. Real concern for ecological environment must advocate profound changes of the role of human beings in the planetary eco-system. It will require a new philosophical and religious awareness of oneness of all life and interdependence of multiple manifestation of nature. The philosophy of survival of the fittest based on competition, struggle, destruction exploitation of man and nature need to be replaced by the integrative and cooperative principles which should be the essential aspects to organize living systems at all levels. These should be rooted in the deepest motivation which spring from moral and spiritual values. Nature has enough wisdom for us. We have only to be receptive to this wisdom offered to us through the eco-system.

The solution ultimately lies in what Gandhi had suggested in changing life-styles, reversal in sense of values which encourage conspicuous and wasteful expenditure, small scale industries, and a technology that assists and helps the individual and not overpowers him. and that teaches us to live in harmony with nature. We can destroy nature but can't create it.

Violence on nature may seem successful at the outset but this attitude needs to be changed radically if humanity has to survive on this earth. Exploding population, increasing pollution, deforestation and water scarcity arc already posing threats to our existence. In this prolonged conflict situation needs a profound transformation if damage control has to he done. The transformation has to be ethical and spiritual in nature and should be anchored through non-violence. This is what Gandhi had offered to the world. His non-violence aimed at encompassing all living beings; therefore, respect and veneration to nature will augur well for the welfare of the humanity for all times to come. Gandhi's moral approach needs to be revisited and applied collectively if we arc to ensure for ourselves a safe and secure environment.

Religion and Politics -Today, we face the challenge posed by continuing confrontation in the name of religion and ethnicity. Religion and politics arc inextricably blended in Gandhi's thought. To Gandhi their separation meant the separation of body and soul. This is why Gandhi called politics without religion a dirty game. However, Gandhi strived all his life to find a balance between religion and politics. For Gandhi, religion was the realization of truth before anything else and politics was a way to live in and for this truth. Gandhi's politics was driven by his faith and morality to the point where it exasperated even his closest comrades. Summarizing the imperative of bringing religious values into politics, Gandhi said: "I could not be leading a

religious life unless I identified myself with the whole of mankind and that I could not do unless I took part in politics. The whole gamut of man's activities today constitutes an indivisible whole. "

Religion is frightening. Therefore the liberal impulse is to say "please keep it out of politics", every time they see a religious figure or hear a religious statement: "You are welcome to live by it but don't bring it into the political circle Because you will raise atavistic passions, you will be making absolutist demands because religion talks in the language of absolute emotions, like the evangelicals. Which is not like politics? Because politics is about compromise, about what is negotiable, what can be talked through". Now the difficulty here is that for religious people, religion simply cannot be privatized. It is not simply meant to ensure contemplation between you and the Almighty -religion is a matter of fundamentally held values. You want to live by those values - these values inform you, and therefore they inform the public life.

Gandhi says that every religion captures a particular vision of human life. That is its strength. But. in so far as it excludes other visions of human life, these are its limitations.

Here we think Gandhi had some important things to say. First, he says religion has a central place in public life, but should have nothing to do with the state. They should be secular. Therefore the proper attitude of one religion to another is not to try and convert people, but rather to engage in a critical dialogue, so that each can benefit from the other. In this way you make a fraternity, solidarity of different religious believers - rather than hostilities.

Conclusion- Gandhi was trying to change the world. In other words, once you dehumanize people you begin to dehumanize yourself, because that is the only way you think you can deal with them. Therefore the moral inhibitions and scruples, which normally govern your life, seem to disappear.

Today many politicians in India use the term merely as a slogan and the common man make Gandhi almost out of reach of the younger groups by making Gandhi an unwilling 'avatara'. Gandhism today is alive and active in India and world. In fact today there is hardly any country in the world where some activities are not going on along Gandhian lines. There are very few countries in the world where something or the other is not being done, achieved or organized in the name of Gandhi, In short, there is a global non-violent awakening and awareness after Gandhi.

In other words, central to Gandhi's religious thought is the distinction between the public realm and institutions of the state. So, religion has a legitimate place in public life, but the institutions of the state should have nothing to do with religion. They should be secular.

The modern man can also take great wisdom from what Gandhi said the seven social sins: Politics without principles; Wealth without work; Commerce without morality; Education without character; Pleasure without conscience; Science without humanity; Worship without sacrifice. Gandhi did not belong to an era, or an age. He belongs to the humanity for eternity.

References-

1) G. Ramachandran & T. K. Mahadevan, GANDHI - His Relevance for our times (edited), Gandhi Peace Foundation. New Delhi.
2) Ganjal S.C., Gandhi and The Major World Problem-A Contemporary and Futuristic Perspective, Vol 9, April 1997.

3) Kumar S.B., Environment Problems and Gandhian Solutions. Deep and Deep Publication (2010).
4) Nixon Bruce, All Rise - How Gandhi's thinking can help us in the 21st Century, Schumacher
5) Institute for Sustainable Systems Create Environment Centre. Smeaton Road, Bristol, UK.
6) Palkhiwalu N. A, Relevance of Gandhi Today, New Delhi: Gandhi Peace foundation. 1984.
7) Gandhi Sonia, "Relevance of Gandhian Philosophy in 21st Century, Capetown University,23 August 2007. Inaugural Speech.
8) Devarajan R.. (2010 Dec.7), Relevance of Mahatma Gandhi, The Hindu. Chennai.
9) Baruva Rajen, Relevance of Gandhi in Modern Times (2008, Sep-28). Retrieved from www,boloji.com.
10) Parekh Bhiku, Gandhi in the 21" Cenrury.2 September 2009,The Second Fred Blum Memorial Lecture.